भारतीय विद्यामंदिर ग्रंथमाला

२

रासो-साहित्य और पृथ्वीराज-रासो

भारतीय विद्यामदिर ग्रंथमाला

२



रासो-साहित्य और पृथ्वीराज-रासो

संक्षिप्त परिचय

लेखक
नरोत्तमदास स्वामी, अेम अे



प्रकाशक
भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर (राजस्थान)

- प्रकाशक
  भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान
  बीकानेर

- प्रथम संस्करण
  भारतीय संवत १८८५

- मूल्य ५००

- मुद्रक
  दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स
  आगरा

प्रकाशकीय वक्तव्य

भारतीय विद्यामंदिर की स्थापना सन् १६४८ ई० मे साक्षरता प्रचार शिक्षा प्रसार लोक शिक्षण बाल शिक्षण आदि विभिन्न शैक्षणिक प्रवृत्तियो का सचालन करने एव शोध-काय का प्रोत्साहन देने तथा प्राचीन अेव नवीन साहित्य का प्रकाशन करने के उद्देश्य को लक्ष्य कर की गयी थी।

शोध-काय के सचालन के लिअे मदिर ने सन् १६५७ म शोध प्रतिष्ठान की स्थापना की। प्रतिष्ठान द्वारा सपन्न शोध-काय और राजस्थान के प्राचीन साहित्य तथा तत्सबधी अध्ययन-ग्रथो के प्रकाशनाथ मदिर ने भारतीय विद्यामंदिर ग्रथमाला की आयोजना की है।

ग्रथमाला के प्रथम ग्रथ के रूप म प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री बद्रदान चारण की गाथा चौहाण री राजस्थानी गाथा का प्रकाशन कुछ समय पूव हुआ था। अब द्वितीय ग्रथ के रूप म हिंदी और राजस्थानी साहित्य के ख्यातनामा विद्वान भारतीय विद्यामन्दिर के कुलपति श्री नरोत्तमदास स्वामी की, हिन्दी-साहित्य के महान गौरव-ग्रथ पृथ्वीराज रासा और रासा-साहित्य का विभिन्न दृष्टियो से अध्ययन प्रस्तुत करने वाली इस कृति को साहित्य-जगत् के समक्ष उपस्थित किया जाता है।

प्राचीन राजस्थानी साहित्य और राजस्थान के सत साहित्य से सबधित कतिपय महत्वपूर्ण कृतियो को हम शीघ्र ही पाठको के हाथो म रखेंगे।

सत्यनारायण पारीक
अध्यक्ष भारतीय विद्यामन्दिर शोध प्रतिष्ठान
बीकानेर

आभार

भारतीय विद्यामदिर ग्रथमाला के प्रकाशन में राजस्थान राज्य के शिक्षा विभाग के अधिकारियों तथा श्रीयुत कवर जसवतसिंह से बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ है। राजस्थान सरकार तथा कुवर साहब ने उदारतापूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान कर हमें अनुगृहीत किया है। अपने समस्त सहायकों के प्रति यहाँ पर मैं भारतीय विद्यामन्दिर की ओर से हार्दिक आभार प्रकट करता हू।

आशा है भविष्य में भी राज्य सरकार एवं अन्यान्य उदारमना महानुभावों द्वारा हमें इसी प्रकार सहायता एवं सहयोग प्राप्त होते रहेंगे।

मूलचद पारीक
रजिस्टार
भारतीय विद्यामदिर बीकानेर

हिंदी के महारथी

बाबू श्यामसुंदरदास, बी ए, डी लिट,

की

स्मृति म

भूमिका

पृथ्वीराज रासो म मेरी अभिरुचि छात्रावस्था से ही रही है। सन १९३१ मे जब मैं वाराणसी मे गुरुवर श्री श्यामसुदरदास के दशन करने गया तो उन्होंने मुझे हिंदू विश्वविद्यालय की डी लिट उपाधि के लिए पृथ्वीराज रासो पर अनुसधान प्रबध प्रस्तुत करने का आदेश दिया। उनके आदेश का पालन तो मैं नही कर सका पर रासो-सबधी अनुसधान काय चलता रहा। इसी समय श्री अगरचद नाहटा स परिचय हुआ। उनकी भी इस विषय म रुचि थी। उन्होंने रासो की दजनो प्रतिया के विवरण जेकत्र किये थे। मैंन इन विवरणो का विस्तार स अध्ययन किया। अध्ययन से पता चला कि रासो के तीन अलग अलग रूपातर है जिनका नामकरण मैंने लघु रूपातर मध्यम रूपातर और बृहद रूपातर इस प्रकार किया। नाहटाजी ने इन विवरणा को लकर कलकत्ते की राजस्थानी साहित्य परिषद् की मुखपत्रिका त्रैमासिक राजस्थानी म एक विस्तृत लेख लिखा। इसक पश्चात नाहटाजी को गुजरात क सुप्रसिद्ध विद्वान मुनि श्री पुण्यविजयजी स रासो की एक हस्तप्रति की प्रतिलिपि प्राप्त हुई। यह प्रति अब तक की प्राप्त सब प्रतिया से प्राचीन और भिन्न थी और विस्तार म बहुत छोटी थी। इसस पता चला कि रासो का एक चौथा रूपातर भी है। इस नये रूपातर को मैंन लघुतम रूपातर नाम दिया। इसी समय बीकानेर म सादूळ राजस्थानी रिसच इस्टीटयूट की स्थापना हुई और उसकी मुखपत्रिका 'राजस्थान भारती' के प्रकाशन की व्यवस्था हुई। इस पत्रिका के प्रथम अक म मैंन पृथ्वीराज रासो पर एक निबध प्रकाशित करवाया जिसम अपने अनुसधान के परिणामा को सक्षप म प्रस्तुत किया। इस निबध म रासो शब्द की व्युत्पत्ति, रासो की भाषा रासो का उद्धार-कर्ता, रासो की प्रामाणिकता आदि विषयो पर विचार किया गया था रासो की प्रामाणिकता-सबधी विवाद का सक्षिप्त इतिहास देते हुए प्रामाणिकता-सबधी चार पक्षा का विवरण दिया गया था, तथा रासो के चारो रूपातरों का सवप्रथम विवरण दिया गया था।

इसके पश्चात् रासो के सबध मे दो चार और भी छोटे-मोटे निबध इधर-उधर पत्र-पत्रिकाओं म प्रकाशित हुए। सन् १९५० मे पजाब-विश्वविद्यालय न हिन्दी-साहित्य का अेक बृहत् इतिहास तैयार करने का काम उठाया। उसके

रासा साहित्य और पृथ्वीराज रासो सबधी दो अध्याय लिखने के लिए मुझे कहा गया। मैंने इस काय को सहप स्वीकार किया, और लगभग ५० ६० पृष्ठो का एक निबध तयार किया। कुछ कारणावश वह निबध अप्रकाशित ही रहा।

प्रस्तुत पुस्तक का मूल यही वह निबध है। जब भारतीय विद्यामन्दिर (बीकानेर) म शोध प्रतिष्ठान की स्थापना हुई तो एक ग्रथमाला के प्रकाशन की आयोजना भी की गयी। प्रतिष्ठान के अधिकारियो ने निबध को इस ग्रथमाला म प्रकाशित करने का विचार किया। निबध के साथ कुछ और विषय जोडकर मैंने उन्ह प्रकाशनाथ द दिया। पर प्रकाशन के लिए राजकीय स्वीकृति प्राप्त करन और आर्थिक यवस्था करने म बहुत समय लग गया और निबध यो ही पडा रहा।

इस प्रकार लगभग १२ वर्षों के पश्चात वह निबध परिवर्धित रूप म प्रकाशित हो रहा है। अब इस निबध न कहकर प्रबध कहना अधिक उपयुक्त होगा।

प्रबध म १२ अध्याय है जिनम वर्णित और विवेचित विषयो का ज्ञान सूचनिका (विषय सूची) को देखन स हो सकेगा।

इस प्रबध के लेखन म अनेक दिशाओ स प्रेरणा और सहायता मिली है। जिन ग्रथो निबधो पत्र पत्रिकाओ आदि स सहायता ली गयी है उनका उल्लेख पाद टिप्पणियो मे और अत म परिशिष्ट म कर दिया गया है।

प्रबध के लेखन म मूल प्रेरणा श्रद्धेय गुरुवर स्वर्गीय बाबू श्यामसुदरदास की है। इस प्रबध के प्रकाशन के समय उनका स्मरण करना मैं अपना अत्यत आवश्यक कर्तव्य समझता हूँ।

श्री अगरचन्द नाहटा स मुझे प्रेरणा ही नही किन्तु सक्रिय सहायता भी बराबर प्राप्त हुई। पृथ्वीराज रासो और वीसलदेरास की प्रतियो के उनके द्वारा सगृहीत विवरणो का मैंने स्वतत्रता से उपयोग किया है। अध्याय ४ म दिया हुआ पृथ्वीराज रासो की प्रतियो का तथा उनकी रूपक सख्या का विवरण मुख्यत उनके द्वारा सगृहीत सामग्री के आधार पर ही लिखा गया है।

हिन्दू विश्वविद्यालय के अग्रेजी विभाग के भूतपूर्व प्राध्यापक बीकानेर राज्य के भूतपूर्व शिक्षा विभागाध्यक्ष तथा सादूल राजस्थानी रिसर्च इस्टीटयूट के प्रथम डाइरेक्टर सुहृद्वर ठाकुर रामसिंह एम ए पिलाणी के बिडला कालेज के भूतपूर्व वाइस प्रिंसिपल स्वर्गीय श्री सूर्यकरण पारीक एम ए, सादूल राज स्थानी रिसर्च इस्टीटयूट के भूतपूर्व डाइरेक्टर तथा इस समय दिल्ली विश्व विद्यालय के इतिहास और पाली के प्राध्यापक डाक्टर दशरथ शर्मा एम ए, डी लिट राजस्थान राज्य के पुरालेख विभाग के डाइरेक्टर श्री नाथूराम खडगावत एम ए बीकानेर के भारतीय विद्यामन्दिर के उपकुलपति श्री

शंभूदयाल सक्सेना विद्यामंदिर के शोध प्रतिष्ठान के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री अक्षय चंद्र शर्मा, एम ए साहित्यरत्न प्रतिष्ठान के भूतपूर्व उपाध्यक्ष श्री चंद्रदान चारण, बीकानेर के अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री दीनानाथ खत्री, एम ए उदयपुर के महाराणा भूपाल कालेज के प्राध्यापक (अब हिंदी विभाग के अध्यक्ष) श्री कृष्णचंद्र श्रोत्रिय एम ए उदयपुर के सरस्वती भंडार के अधीक्षक श्री ब्रजमोहन जावळिया एम ए आदि से भी समय-समय पर अनेक प्रकार की सहायता प्राप्त हुई। अध्याय ११ के दोनों प्रकरण श्री अक्षयचंद्र शर्मा के लिखे हुए है। ग्रंथ के प्रकाशन में भारतीय विद्यामंदिर के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण पारीक एम ए एवं मंदिर के रजिस्टार श्री मूळचंद पारीक ने तथा मुद्रण में आगरा की श्रीराम मेहरा एण्ड कंपनी के अध्यक्ष श्री श्रीराम मेहरा ने विशेष रूप से अभिरुचि ली। इन सबके प्रति मैं यहां हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

शांति-आश्रम बीकानेर
जन्माष्टमी सं० २०१६

नरोत्तमदास स्वामी

सूचनिका

अध्याय १	रासो साहित्य का सामान्य परिचय	१—६
	(क) रासो शब्द की व्युत्पत्ति	१
	(ख) रासो शब्द का अर्थ	२
	(ग) रासो-साहित्य के लेखक क्षेत्र तथा काल	३
	(घ) रासो-काव्यों की भाषा	४
	(ङ) रासो-काव्यों के छन्द	५
	(च) रासो साहित्य की कुछ प्रमुख विशेषताएँ	६
	(छ) रासो साहित्य का ऐतिहासिक मूल्य	८
अध्याय २	रासो साहित्य की प्रमुख रचनाओं का परिचय	१०—३३
	(क) व्रजभाषा के रासो-काव्य	१२
	हम्मीर रासो विजयपाल रासो सुजाणसिंघ रासो श्याम रासा रतन रासा राणा रासो हम्मीर रासो, करहिया को रायसा लावा रासा	
	(ख) राजस्थानी भाषा के रासो-काव्य	२०
	राउ जइतसीरउ रासउ राम रासा संग्रमान रासो सगतसिंघ रासो खुम्माण रासो	
	(ग) रासो शैली की अन्य रचनाएँ	२२
	(घ) परिशिष्ट—बीसलदे रास	२४
अध्याय ३	चंद और उसकी कृतियाँ	३४—५२
	(क) चंद वरदायी	३४
	(ख) जल्ह	४२
	(ग) चंद के वंशज	४३
	(घ) चंद की कृतियाँ	४४
	(ङ) क्या चंद रासो का कर्ता है ?	४५
अध्याय ४	पृथ्वीराज रासो के रूपांतर	५३—८१
	(क) चार रूपान्तर	५३
	वृहद् रूपान्तर, मध्यम रूपान्तर लघु रूपान्तर लघुतम रूपांतर	

	(ख) विविध रूपातरो के खडो की तालिका	५६
	(ग) चारो रूपातरो के खडो की तुलनात्मक तालिका	६२
	(घ) वृहद् रूपातर के खडो का विश्लेषण	७४
	(ड) रूपातरो का अतर	७७
अध्याय ५	पृथ्वीराज रासो के विविध रूपातरो की प्रतियाँ	८२—९५
	(क) लघुतम रूपातर की प्रतियाँ	८२
	(ख) लघु रूपातर की प्रतियाँ	८२
	(ग) मध्यम रूपातर की प्रतियाँ	८३
	(घ) वृहद रूपातर की प्रतियाँ	८४
	(ड) स्वतत्र खडो की प्रतियाँ	८८
	(च) रासो की दो तथाकथित प्राचीन प्रतियाँ	८८
	(छ) रासो की प्राचीन प्रतियो म रूपको की सख्या	९०
अध्याय ६	रासो की प्रामाणिकता	९६—१०८
	(क) प्रामाणिकता सबधी विवाद का इतिहास	९६
	(ख) रूपातरो की प्रामाणिकता	९८
	१ वृहद रूपातर और मध्यम रूपातर	९८
	२ लघु रूपातर	९९
	लघु रूपातर के सवत अनदसवत और अनद विक्रम सवत ।	९९
	३ लघुतम रूपातर	१०२
	(१) पृथ्वीराज के पूर्वजो की वशावली	१०३
	(२) अनगपाल और पृथ्वीराज	१०४
	(३) पृथ्वीराज की राजधानी	१०४
	(४) पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन गोरी	१०५
	(५) गोरी के सरदारो के नाम	१०६
	(६) पृथ्वीराज और सयोगिता	१०६
	(७) लघुतम रूपातर के सवत	१०८
अध्याय ७	पृथ्वीराज रासो की भाषा	१०९—११७
	(क) रासो की भाषा पृथ्वीराज के काल की भाषा नही है	१०९
	(ख) रासो की भाषा डिंगल या राजस्थानी नही है	१०९
	(ग) क्या रासो की भाषा अव्यवस्थित है ?	११३
	(घ) पृथ्वीराज रासो की भाषा की कुछ विशेषताएँ	११४

अध्याय ८ पृथ्वीराज रासो के छन्द ११८—१२३

(क) सामान्य कथन ११८

(ख) वर्णिक छन्द ११९

(ग) मात्रिक छन्द १२१

अध्याय ९ पृथ्वीराज रासो की कथा का सार १२४—१३७

(क) लघु रूपांतर के अनुसार रासो की कथा १२४

(ख) बृहद रूपांतर की कथा का विश्लेषण—पृथ्वीराज के विवाह, पृथ्वीराज के आखेट, पृथ्वीराज के युद्ध, अन्यान्य प्रसंग १३१

अध्याय १० पृथ्वीराज रासो (बृहद रूपांतर) में वर्णित इतिहास की परीक्षा १३८—१५६

१ अजमेर २ दिल्ली ३ कन्नौज ४ मेवाड़ ५ गजनी ६ गुजरात ७ आबू ८ अन्य स्थान ९ पृथ्वीराज के सामन्त

अध्याय ११ पृथ्वीराज रासो का साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यांकन १५७—१७२

(क) पृथ्वीराज रासो का साहित्यिक मूल्य १५७

(ख) पृथ्वीराज रासो का सांस्कृतिक मूल्य १६६

अध्याय १२ उपसंहार १७३

परिशिष्ट—अध्ययन सामग्री १७४

१

रासो-साहित्य का सामान्य परिचय

(क) 'रासो' शब्द की व्युत्पत्ति

विद्वानों ने रासो शब्द की व्युत्पत्ति भिन्न भिन्न प्रकार से की है। रामचन्द्र शुक्ल उसे रसायन का अपभ्रंश मानते हैं।[1] काशी के विश्वेश्वरीप्रसाद दुबे के मतानुसार रासो का मूल शब्द राजयश है।[2] कई विद्वानों ने उसे रहस्य से बना बताया है।[3] श्री पारसनाथ शाह ने उसको रस से व्युत्पन्न माना है।[4] राज-सुत शब्द से भी उसकी उत्पत्ति बतायी गयी है। पृथ्वीराजरासो के संपादक मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या के अनुसार रासो शब्द संस्कृत के रास या रासक शब्द से बना है।[5] इनमें अन्तिम मत को छोड़कर बाकी मतों में कोई तथ्य नहीं, वे कल्पना मात्र हैं। रासो का मूल रासक शब्द है जो रास शब्द का ही दूसरा रूप है। संस्कृत का रासक शब्द अपभ्रंश में रासउ हुआ और

---

१ ये ग्रन्थ रासो कहलाते हैं। कुछ लोग इस शब्द का सम्बन्ध रहस्य से बताते हैं पर बीसलदेव रासो में काव्य के अर्थ में रसायण शब्द बार-बार आया है। अतः हमारी समझ में इसी रसायण शब्द से होते होते रासो हो गया है।—हिन्दी साहित्य का इतिहास (सं १९९९ का संस्करण) पृष्ठ ७।

रसायण शब्द बीसलदेवरास में रस-मय के अर्थ में आया है इसके साथ रास शब्द को अव्याहृत समझना चाहिए (दो स्थानों पर यह रास शब्द के साथ भी आया है)।

२ Har Prasad Sastri *Preliminary Report on Operation in Search of Bardic Chronicles*

३ (क) My friend Mr K P Jayaswal thinks that rāsā is connected with the sense—'problem mystery' In Braja bhāṣā rahasya becomes rāsā (*Ibid* page 25 footnote)

(ख) कविराज श्यामलदास ने पृथ्वीराज रासो की अप्रामाणिकता पर लिखी हुई पुस्तिका का नाम पृथ्वीराज रहस्य की नवीनता रखा था।

४ जैन-काव्य-दर्शन भाग १ प्रस्तावना पृष्ठ ७।

५ पृथ्वीराजरासो, नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पृष्ठ १६२।

मध्यकालीन राजस्थानी तथा ब्रजभाषा में रासौ होकर आधुनिक काल में रासो हो गया। खड़ीबोली में इसका रूप रासा होगा।

रासो शब्द राइसो या रायसो रूप में भी मिलता है। पिंगल और डिंगल के नियमानुसार छन्द की आवश्यकता पूरी करने के लिए कभी-कभी शब्द के मध्य में इ या य का आगम किया जा सकता है जैसे राठौड़ का राइठौड़ या रायठौड़, रत्थ का रयत्थ, वक्खर का वयक्खर, मव्व का मयव्व, लक्खण का लयक्खण इत्यादि इत्यादि।[2]

(ख) 'रासो' शब्द का अर्थ

रास या रासक का मूल अर्थ नृत्य है। कृष्ण और गोपियों का रास-नृत्य प्रसिद्ध है।[3] ये नृत्य तालों के साथ किये जाते थे और डंडों के साथ भी। मध्यकाल में ताला रास और लकुट रास या दण्डिक रास प्रसिद्ध थे।[4] ताला और डंडों के ये रास राजस्थान और गुजरात में अब भी प्रचलित हैं। सम्भवतः अन्य प्रान्तों में भी प्रचलित हों।

रास नृत्य के साथ आगे चलकर गीत का योग हुआ। ये गीत विविध रागों में गाये जाते थे। इनके साथ अभिनय का योग होने से एक विशेष प्रकार के दृश्यकाव्य की सृष्टि हुई जिसको पाठ्य दृश्य-काव्य से भिन्न गेय दृश्य काव्य का नाम दिया गया।[5] रास लीला इसी प्रकार का गेय नाट्य है।

---

1 रासो की उपलब्ध प्राचीनतम प्रति (लिपिकाल संवत् १६६७) में ग्रन्थ का उल्लेख रासउ नाम से हुआ है।

2 उदाहरण के लिए राउ जैतसी रउ छन्द देखिए—
ठाकिए प्रधान राइठौड़ (पद्य १६)।
कूरणी रयत्थ क्रिम पडइ पाळ (पद्य २०६)।

3 हारावली कोष में रास का अर्थ गोदुहा गोठा अर्थात् गोपों का खेल विशेष किया हुआ है।

4 जिनदत्त सूरि के उपदेश रसायन रास (रचनाकाल बारहवीं शताब्दी) पद्य ३६ तथा सप्तक्षेत्री रास (रचनाकाल सं० १३२७) पद्य ४८, में इनका उल्लेख मिलता है।

5 काव्यं प्रेक्ष्यं श्रव्यं च। प्रेक्ष्यं पाठ्यं गेयं च। पाठ्यं नाटक प्रकरण नाटिका समवकार ईहामृग-डिम-व्यायोग उत्सृष्टिकाङ्क प्रहसन भाण-वीथी-सट्टकादि। गेयं डोम्बिका भाण प्रस्थान शिगक भाणिका प्रेरण रामाक्रीड हल्लीसक रासक गोष्ठी-श्रीगदित रागकाव्यादि। (हेमचन्द्र कृत काव्यानुशासन, अध्याय ८ सूत्र ३ ४)

डोम्बिका भाण प्रस्थान भाणिका प्रेरण शिगक रामाक्रीड हल्लीसक श्रीगदित रासक-गोष्ठी प्रभृतीनि गेयानि। (वाग्भट कृत काव्यानुशासन, अध्याय १)

आरम्भ म रास के साथ गाये जाने वाले गीत किसी भी प्रकार के हो सकते थे।[1] पर धीरे धीरे वे कथा प्रधान होने लगे। कुछ समय के अनन्तर नृत्य वाला अंश गौण हो गया और कथा काव्य को ही रास कहने लगे। अब ऐसे रासो की रचना होने लगी जो नृत्य के साथ गाये जाने के लिए नहीं किन्तु पढ़े जाने के लिए ही होते थे। ये वास्तव म कथा-काव्य होते थे। प्राचीन राजस्थानी गुजराती म एसे दर्जनो रास लिखे गये और उनकी परम्परा अन्त तक चलती रही। राजस्थानी और गुजराती भाषाओं में जैन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ रास-साहित्य विशाल परिमाण म उपलब्ध है।

जैनो से रास रचना को भाटो चारण आदि राज-दरबारों से संबद्ध कवियो न ग्रहण का। उन्होंने रास के स्थान पर रासो शब्द को अपनाया। जैनो के रास काव्यो और इनके रासो-काव्यों म कुछ अन्तर था। राज-दरबारो स संबंध होने के कारण इनकी रचनाओं म वीर-कार्यों और युद्धो की प्रमुखता थी—युद्ध-वर्णन इनका एक अनिवार्य अंग था। धीरे धीरे रासो-काव्यो स ऐसी रचनाओं का अर्थ लिया जाने लगा जिनमें युद्ध का वर्णन हो। आधुनिक राजस्थानी म रासो शब्द का अर्थ ही झगड़ा उपद्रव झंझट आदि का हो गया है।

इस प्रकार रासो-साहित्य का विकास रास-साहित्य स हुआ। रासो मूलत कथात्मक या चरितात्मक काव्य थे। भाटो और चारणो के संपर्क स उनम वीर रसात्मक और युद्धात्मक तत्त्व प्रधान हो गये।

(ग) रासो साहित्य के लेखक, क्षेत्र तथा काल

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है रासो-साहित्य राज दरबारी अथवा राज दरबारो म संबंध रखने वाले कवियो द्वारा रचा गया है। उपलब्ध रासो म स अधिकांश के रचयिता भाट[2] और चारण हैं। इन का रचयिता मुसलमान राजकुमार एक का जैन साधु और एक का जैन सेवक है।

रासो साहित्य की रचना प्रधानतया दिल्ली मण्डल व्रज मण्डल बुन्देलखण्ड और राजस्थान म हुई जहाँ राजपूत राजाओं का शासन रहा। रासो-साहित्य के प्रथम लेखक संभवत भाट थे जिनका प्रधानता पूर्वी राजस्थान दिल्ली व्रज और बुन्देलखण्ड म था।

रासो काव्यो की परम्परा विक्रम की सोलहवी शताब्दी के अन्त म या सत्रहवी शताब्दी म प्रारम्भ हुई और उन्नीसवी शताब्दी के अन्त तक चलती

---

[1] जिनदत्तसूरि का उपदेश रसायन रास नीति प्रधान पद्यो का संग्रह है।

[2] भाट (सं० भट्ट) स अभिप्राय ब्रह्मभट्ट जाति स है जिस चन्द सूरदास गंग आदि अनेक प्रसिद्ध कवियो को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गयी। जतसी रासो, जिसमें जतसी और कामरा के सं० १५६१ में होने वाले युद्ध का वर्णन है, तथा पृथ्वीराज रासो, जिसका रचनाकाल वर्तमान में प्राप्त साक्ष्य को देखते हुए अकबर के शासनकाल (सं० १६१२–१६६२) से पूर्व नहीं जाता, उपलब्ध रासो साहित्य की प्राचीनतम रचनाएँ हैं।[1]

(घ) रासो काव्यों की भाषा

रासो-काव्य प्रधानतया ब्रजभाषा में लिखे गये जिसे राजस्थान में पिंगल कहा जाता है। राजस्थानी अर्थात् डिंगल में भी उनकी रचना हुई। पिंगल मूलतः भाटों की भाषा थी और डिंगल चारणों की। आगे चलकर यह भेद मिट गया—चारण भी पिंगल में लिखने लगे और भाटों की भी डिंगल में लिखी रचनाएँ मिलती हैं। उपलब्ध रासो में पृथ्वीराज रासो, विजयपाल रासो, क्याम रासो, रतन रासो, राणा रासो, हम्मीर रासो, करहिया को रासो, लावा रासो और सुजाण रासो ब्रजभाषा या पिंगल की रचनाएँ हैं और जतसी रासो, खुम्माणरासो, सत्रसाल रासो, सगतसिंघ रासो तथा राम रासो राजस्थानी या डिंगल की। इन रासो में से कुछ में कहीं कहीं कवायत या निसाणी छन्द आये हैं जिनकी भाषा प्रायः खड़ीबोली है।

रासो-ग्रन्थों की पिंगल और डिंगल साधारण बोलचाल की ब्रजभाषा और राजस्थानी से कुछ अंतर रखती है विशेषकर उन स्थानों में जहाँ युद्ध या किसी अन्य प्रसंग का वर्णन (description) होता है। यह विशेषता अधिकतर ध्वनियों से संबंध रखती है पर कहीं-कहीं शब्द रूप रचना में भी। डिंगल में कभी कभी शब्दकोष (vocabulary) संबंधी भिन्नता भी पायी जाती है अर्थात् उन शब्दों का भी प्रयोग होता है जो बोलचाल से उठ गये हैं या जो बोलचाल में कभी प्रयुक्त नहीं हुए। इसी प्रकार शब्द के अंत में भी प्रायः अनुस्वार का आगम किया जाता है। काव्य में ओज गुण लाने के लिए अथवा मात्रा पूरी करने के लिए शब्द की मध्यगत ध्वनियाँ को प्राकृत या अपभ्रंश की भाँति प्रायः द्वित्व कर दी जाती है अथवा अनुस्वार का आगम कर दिया जाता है जैसे कनक का कनक्क या कनंक, निर्मल का निम्मल, निम्मल्ल, निम्मंल, निरम्मल, निरम्मल्ल आदि। इसी प्रकार शब्द के अंत में भी प्रायः अनुस्वार का आगम किया जाता है। इस शैली की परम्परा अपभ्रंश के प्रबंध काव्यों से आरम्भ होती है

---

[1] हिन्दी साहित्य के इतिहासों में इनमें से कतिपय कृतियों को चरित्र नायकों की सम सामयिक रचनाएँ मानकर आदिकाल में स्थान दिया गया है पर वस्तुतः इनमें से कोई भी रचना सोलहवीं शताब्दी के पूर्व की नहीं। अतः इन्हें मध्यकाल में स्थान देना ही उचित होगा।

और अब तक चली आयी है।[1] तुलसी, भूषण आदि ने भी युद्ध-वर्णन के प्रसंगों में इस शैली का प्रयोग किया है।

वर्णनात्मक अंशों की भाषा में वर्णमैत्री का ध्यान बराबर रखा गया है।

(ङ) रासा-काव्यों के छंद

रासा ग्रंथों के छंद अपभ्रंश से आये हुए हैं। उनमें वर्णिक भी हैं और मात्रिक भी। वर्णिक छंद मूलतः संस्कृत के हैं और अपभ्रंश में भी प्राकृत से होते हुए आये हैं। मात्रिक छंद अपभ्रंश के अपने हैं। कथा के कथन (narration) में प्रधानतया दूहा, कवित्त (छप्पय), पद्धरि और चौपाई के विविध रूपों का प्रयोग हुआ है और वर्णनों (description) में भुजंगी (भुजंगप्रयात), अर्धभुजंगी (विराज), रसावला, त्राटक, नाराच, अर्धनाराच, मोतीदाम आदि का। शार्दूलविक्रीडित, भुजंगी, त्राटक, मोतीदाम आदि वर्णिक छंद मात्रिक रूप में भी प्रयुक्त हुए हैं अर्थात् एक गुरु वर्ण के स्थान पर दो लघु वर्णों का यथेच्छ प्रयोग हुआ है (कहीं कहीं दो लघु वर्णों के स्थान पर एक गुरु वर्ण का भी)। शार्दूलविक्रीडित के मात्रिक रूप का छंदशास्त्र में साटक नाम मिलता है।

आर्या, गाहा, श्लोक (अनुष्टुप) आदि शुद्ध प्राकृत या संस्कृत के छंद भी कहीं-कहीं आये हैं पर उद्धरण रूप में (अवश्य ही इन उद्धरणों की भाषा बहुत कुछ विकृत हो गयी है)।

पीछे के रासों में सवैया और मनहरण कवित्तों का प्रयोग भी पाया जाता है।

बीच-बीच में वारता (वार्ता), वानिका, वचनिका, चूर्णिका आदि नामों से गद्य का प्रयोग भी मिलता है। ऐसा साधारणतया शीर्षक के रूप में, या प्रसंग के उल्लेख के लिए हुआ है। वर्णन में कहीं-कहीं तुकान्त वाले गद्य का प्रयोग भी हुआ है जिसे वचनिका या दवावैत कहा जाता है (दवावैत की भाषा खड़ी बोली होती है)।

छंद की इकाई को प्रायः रूपक कहा जाता है। अध्यायों की छंद-संख्या रूपक-संख्या के द्वारा सूचित की जाती है। भुजंगी, त्राटक, मोतीदाम, नाराच

---

[1] मिलाओ—

ण जत्त ण वित्त ण मित्त ण सत्त। ण धम्म ण कम्म ण जाय ण दत्त ॥
ण पुत्त कलत्त ण इट्ठ पिइट्ठ। सय सयउ दूर स्सम पसट्ठ ॥
सय जाइ णूण अहम्मण धम्म। विणट्ठण धम्मण सव्व अकम्म ॥
वय दुविलय साहसण हणण। सुगयाए भट्ठु ण दुट्ठेण गत्त ॥
अणिट्ठ वणिट्ठ भुय सप्पहाय। समुद्द रउद्द सय तुम्ह जाय ॥

[भविसयत्त-कहा ३।३६]

आदि छ: चार चार चरणों में विभक्त नहीं किये जाते। उनके जितने भी चरण एक साथ आते हैं उन सबको एक ही रूपक समझा जाता है। फलस्वरूप चार से विभक्त करने पर कभी-कभी अंत में दो ही चरण शेष रह जाते हैं (और कभी-कभी तो केवल एक ही)।

(च) रासो साहित्य की कुछ प्रमुख विशेषताएँ

(१) रासो साहित्य लौकिक साहित्य है—

हिन्दी का प्राचीन साहित्य प्रधानतया धार्मिक है। आदिकालीन साहित्य जैन धर्म से प्रभावित है और मध्यकालीन साहित्य वैष्णव धर्म से। रीति साहित्य भी धार्मिकता से सर्वथा मुक्त नहीं। वहाँ भी नायक और नायिका प्रायः कृष्ण और राधा ही हैं। रासो-साहित्य धार्मिक के विपरीत लौकिक साहित्य कहा जा सकता है। पृथ्वीराज रासो (बृहद् रूपांतर) में अवश्य ही स्थान-स्थान पर धार्मिक स्तुतियाँ आती हैं और चन्द का चित्रण भी एक परम धार्मिक व्यक्ति के रूप में किया गया है, पर यह धार्मिक तत्त्व संपूर्ण काव्य में नितान्त गौण है। राम रासो अवश्य ही अपवाद है।

(२) रासो ऐतिहासिक काव्य हैं—

रासो ग्रन्थों को ऐतिहासिक काव्यों की कोटि में रखा जा सकता है।[१] उनके दो विभाग किये जा सकते हैं—(१) काव्य-तत्त्व प्रधान और (२) इतिहास तत्त्व प्रधान। पृथ्वीराज रासो, खुम्माण रासो, बिजपाल रासो आदि प्रथम विभाग में आते हैं और क्याम रासो, राणा रासो, रतन रासो, जतसी रासो आदि दूसरे विभाग में। ध्यान रहे कि यह विभाजन अत्यन्त स्थूल है क्योंकि इतिहास तत्त्व प्रधान रासो में भी काव्य तत्त्व थोड़ा या बहुत अवश्य पाया जाता है।

(३) रासो चरित्र काव्य हैं—

विषय की दृष्टि से रासो-काव्यों के तीन विभाग किये जा सकते हैं—(१) जिनमें किसी वंश का चरित्र वर्णित हो, जैसे क्याम रासो और राणा रासो, (२) जिनमें किसी विशिष्ट घटना का वर्णन हो, जैसे जतसी रासो, सुजाणसिंघ रासो, करहिया को रासो और छावा रासो, तथा (३) जिनमें किसी व्यक्ति का चरित्र हो, जैसे पृथ्वीराज रासो, खुम्माण रासो, हम्मीर रासो, बिजपाल रासो, राम रासो आदि। तीसरे विभाग की रचनाओं में भी चरित्र-नायक या प्रधान पात्र के वंश का वर्णन संक्षेप से या विस्तार से अवश्य मिलता है। रतन रासो में यह वर्णन बहुत विस्तार से है। खुम्माण रासो में खुम्माण के

---

[१] राम रासो इसका अपवाद है। राम रासो का कथानक पौराणिक है

पूर्वजों का वर्णन तो है ही पर कवि के समय तक के वंशजों का वर्णन भी पाया जाता है।

चरित-काव्यों की यह परम्परा संस्कृत काल से आयी है। रघुवंश कुमार सम्भव, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध नैषध चरित श्रीकंठ चरित इस प्रकार की प्रसिद्ध रचनाएं हैं। दरबारी कवियों ने अपने आश्रयदाताओं को विषय बनाकर चरित-काव्य लिखे जैसे विक्रमांकदेव चरित कुमारपाल चरित पृथ्वीराज विजय हम्मीर महाकाव्य, सुरजन चरित आदि। इनमें रासो-काव्यों की भांति ही अलौकिक तत्वों का समावेश देखा जाता है।

(४) रासो साहित्य वर्णन प्रधान है—

ऐतिहासिक एवं चरितात्मक काव्य होने के कारण विवरण या वृत्त-कथन (narration) तो रासो काव्यों का प्रधान अंग है ही परन्तु वर्णन (description) भी कम प्रधान नहीं। काव्यतत्व प्रधान रासो का तो वह मानो प्राण ही है पर इतिहासतत्व प्रधान रासो में भी उसका अभाव नहीं। कवि को जहां कहीं वर्णन करने का अवसर मिलता है वह उसे नहीं छोड़ता। इस प्रकार शास्त्र में निर्दिष्ट दिन रात्रि प्रभात मध्याह्न-संध्या षड्ऋतु-बारहमास नगर वन पवन-नदी-सरोवर समुद्र, मृगया यात्रा जलक्रीड़ा जलविहार, विवाह भोजन एवं उत्सव, नख शिख शृंगार सजावट संयोग वियोग आदि विभिन्न दृश्यों, व्यापारों वस्तुओं और परिस्थितियों के वर्णन किसी-न किसी अंश में रासो काव्यों में पाये जाते हैं। युद्ध तो रासो-काव्यों का विशिष्ट तत्व ही ठहरा अतः वर्णनों में प्रधानता युद्धवर्णन की है। पृथ्वीराज रासो जैसे बड़े रासो में तो वह न जाने कितनी बार आया है।

(५) रासो साहित्य वीर रस प्रधान है—

रासो-साहित्य का प्रधान विषय वीर-कार्य और युद्ध होने के कारण रासो काव्यों में वीर रस की प्रधानता स्वाभाविक है। युद्ध वर्णनों में वीर के साथ रौद्र भयानक और वीभत्स का भी समावेश हुआ है। अद्भुत करुण और शांत की भी यथास्थान अवतारणा हुई है। पर रासो-काव्यों की (काव्यतत्व प्रधान रासो की) सबसे बड़ी विशेषता है वीर के साथ शृंगार का संयोग। वीर और शृंगार के मिश्रण की यह परम्परा शास्त्रीय-साहित्य और लोक-साहित्य दोनों में प्राचीन काल से चली आया है। मध्यकाल में उसका खूब विकास हुआ। मध्ययुगीन यूरोप में chivalry के रूप में उसके दर्शन होते हैं।

(६) रासो साहित्य में अलौकिक तत्व—

रासो-साहित्य में अलौकिक तत्वों का प्रचुर समावेश पाया जाता है। उसमें देव और दानव सुर और असुर वीर और बेताल भूत और प्रेत गंधर्व और

अप्सराएं यागिनियां और डाकिनियां कम हो पाती हैं जैसे मानव पशु पक्षी भी मनुष्यों की भांति बोलते चालते और व्यवहार करते हैं देवता और ऋषि वरदान और शाप देते हैं अप्सराएं नायिकाओं के रूप में अवतीर्ण होती हैं देवता और ज्योतिषी भविष्यवाणियां करते हैं। पृथ्वीराज रासो में जन यति अमरसिंह मन्त्रबल से अमावस्या को पूर्णिमा करके दिखा देता है गिद्धनी और डकनी आकर संयोगिता को युद्ध का वृत्तान्त सुनाती हैं वीरभद्र प्रकट होता है, कारागार के कपाट स्वयं खुल जाते हैं और पृथ्वीराज और चंद के मरण पर देवता पुष्पवृष्टि करते हैं। इतिहासतत्त्व प्रधान रासो तक में युद्धों में नारद नाचते हैं और योगिनियां खप्पर भर भरकर रुधिर पान करती हैं।

पृथ्वीराज रासो के बड़े रूपान्तरों में पृथ्वीराज को ढुण्ढा दानव का अवतार तथा संयोगिता को रम्भा का अंशजा बताया गया है। मध्यकालीन चरित-काव्यों में कथा के पात्रों को अलौकिक रूप देने की एक रूढ़ि सी पड़ गयी थी। पृथ्वीराजविजय में पृथ्वीराज को राम का अवतार कहा गया है और उसकी भावी पत्नी को तिलोत्तमा का। सुर्जन चरित में आनल को राम का एक नाग-कन्या है जिसे व्याहने के लिए वह पाताल तक जाता है। वाहुन्द चरित में वाहुन्द और उससे प्रेम करने वाली शाह कुमारी रंगाओ नाइणा के पूर्व के छह जन्मों का विवरण दिया गया है।

(७) रासो साहित्य में अतिशयोक्ति और रूढ़ि पालन—

काव्यों की कुछ बंधी बंधाई अतिशयोक्ति-पूर्ण रूढ़ियां चली आयी हैं जैसे सेना के प्रयाण के समय दूर दूर के देशों अथवा स्वर्ग और पाताल तक के निवासियों का भय से कंपित होना पृथ्वी का धसकना, शेषनाग और वराह एवं कच्छप का व्याकुल हो उठना आदि-आदि। रासो-काव्यों में इन रूढ़ियों का पूरी तरह पालन हुआ है। नायक जब दिग्विजय को निकलता है तो भारतवर्ष भर के राज्यों और राजवंशों को विजय करके लौटता है। राजाओं की सेनाओं में सुभटों की संख्या लाखों से क्या कम हो।

(छ) रासो साहित्य का ऐतिहासिक मूल्य

काव्यतत्त्व प्रधान रासो इतिहास की दृष्टि से सर्वथा निरुपयोगी है। उनका कथानक जनश्रुतियों पर आधारित है और उनमें कवियों की कल्पना भी घुलकर मिली है। अलौकिक तत्त्वों की उनमें भरमार है। बात यह है कि इन रासों का रचनाकाल चरित्रनायकों के काल के बहुत पीछे का था जब तक चरित्र नायकों के चारों ओर अद्भुत और अलौकिक तत्त्वों से मिश्रित जनश्रुतियों का जाल-सा बिछ चुका था जिसमें कल्पना को खुलकर खेलने के लिए पूरा अवकाश प्राप्त था। इस प्रकार इस विभाग में आने वाली रचनाओं का जो कुछ भी मूल्य

है वह साहित्यिक ही है ऐतिहासिक तनिक भी नहीं। हाँ, पृथ्वीराज रासो जैसे परिवर्धनशील महाकाव्य (epic of growth) का अपना सांस्कृतिक मूल्य भी है।

इतिहासतत्त्व प्रधान रासो का बहुत बड़ा ऐतिहासिक मूल्य है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अनेक अंधकाराच्छन्न स्थलों पर उनसे अच्छा प्रकाश पड़ता है। मुसलमानी आधारों पर निर्मित एकपक्षीय इतिहास के संशोधन और पूर्ति में उनसे अच्छी सहायता मिल सकती है। निस्संदेह उनके उपयोग में सावधानी की आवश्यकता है। इतिहास का जो अंश कवि का समकालीन अथवा निकट भूतकालीन नहीं उसकी प्रामाणिकता असंदिग्ध नहीं क्योंकि वह किसी न किसी अंश में जनश्रुतियों से अमिश्रित नहीं। निकट भूतकालीन और समकालीन इतिहास की प्रामाणिकता तो संदिग्ध नहीं पर वह अतिशयोक्ति और एकपक्षीयता के दोषों से सर्वथा मुक्त है ऐसा नहीं कहा जा सकता।

२

रासा साहित्य की प्रमुख रचनाओ का परिचय

रासा नामवाली जो रचनाएँ प्रसिद्ध है अथवा जो प्रकाश म आ चुकी है उनके नाम इस प्रकार है –

व्रजभाषा या पिंगल की रचनाएँ

(१) चन्द कृत पृथ्वीराज रासा (तथाकथित रचनाकाल—बारहवी शताब्दी)
(२) शार्ङ्गधर कृत हम्मीर रासो (तथाकथित रचनाकाल— पद्रहवा शताब्दी)
(३) नरल कृत विजयपाल रासो (तथाकथित रचनाकाल—ग्यारहवी शताब्दी)
(४) न्यामतखा उपनाम जान कवि कृत क्याम रासा (स १६६१ स १७११)
(५) साद्ू कुम्भकरण कृत रतन रासा (सवत् १७३२ क लगभग)
(६) दयालदास कृत राणा रासो (सवत् १७५० क लगभग)
(७) महात्मा जोगीदास कृत सुजाणसिंघ रासो (१७६६ के लगभग)
(८) जोधराज कृत हम्मीर रासो (सवत् १८८५)
(९) गुलाब कवि कृत करहिया को रायसो (स १८२४)
(१०) रसिया गोपाळदास कृत लावा रासा (स १८३० से पूव)

राजस्थानी या डिंगल की रचनाएँ

(१) अज्ञात कवि कृत राउ जतसी रा रासा (स १५६१ क लगभग)
(२) दधवाडिया माधोदास कृत राम रासा (स १६५० क आसपास)
(३) डूगरसी कृत सत्रसाल रासा (स १७१० क लगभग)
(४) गिरधर कृत सगतसिंघ रासा (स १७२८ क लगभग)
(५) दलपत या दोलत विजय कृत खुम्माण रासा (१७६७ और १७९० क बीच म)

राजस्थाना भाषा म पिछले काल म लिखी गयी ऊदर रासा मांकण रासो आदि कई परिहास-कृतियां तथा जता रासा वाणिया रासा आदि अनेक व्यग्य रचनाएँ भी रासा नाम स मिलती हैं।

बगाल एशियाटिक सोसाइटी क पुस्तकालय म प्रसिद्ध पृथ्वीराज रासा स

भिन्न पृथ्वीराज रासो की एक प्रति है जिसमें महोबा-खंड और कनवज खंड नाम के दो विभाग हैं। इनमें से महोबा-खंड को श्यामसुन्दरदास ने परमाल रासो के नाम से नागरी प्रचारिणी-सभा द्वारा प्रकाशित करवाया था। कनवज खंड को भी वे एक रासो के नाम से प्रकाशित करवाना चाहते थे पर अपनी इस इच्छा को वे पूरा नहीं कर सके।[१]

इनके अतिरिक्त राममल रासो का उल्लेख कविराजा श्यामलदास ने[२] तथा गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने[३] किया है जिसमें मेवाड़ के महाराणा रायमल का चरित्र वर्णित है। यह देखने में नहीं आया अतः नहीं कहा जा सकता कि पिंगल में है या डिंगल में।

अपभ्रंश में पंद्रहवीं शताब्दी में लिखित सन्देश रासक (संदेश रासक) नामक एक ग्रंथ मिलता है जिसे म्लेच्छ देश वासी मीरसेन के पुत्र अद्दहमाण तन्तुवाय (अब्दुर रहमान जुलाहे) ने लिखा था। नाम रासक (रासक रासउ) होने पर भी यह वीर रसात्मक रचना नहीं है। अतः इसे रासो-काव्यों में गिनना उचित नहीं होगा। वस्तुतः यह एक रास-काव्य ही है।[४]

हिन्दी के इतिहासकारों ने बीसलदेव रास को भी रासो-काव्यों में गिना है। पर उनका ऐसा करना युक्ति-युक्त नहीं क्योंकि —

(१) इस काव्य की हस्तलिखित प्रतियों में इसे बीसलदेव रास कहा गया है बीसलदे रासो नहीं।

(२) रासो-काव्यों की भांति यह वीर रस और युद्ध-वर्णन का काव्य नहीं किन्तु प्राचीन राजस्थानी के अन्य रास-काव्यों की भांति एक सीधी-सादी प्रेम कथा है।

(३) इसकी भाषा अन्य रासो-काव्यों की भांति पिंगल नहीं और न खुम्माण रासो की सी डिंगल है, किन्तु सीधी-सादी बोलचाल की घरेलू राजस्थानी है।

(४) इसका छन्द भी वीर रसात्मक रासो-काव्यों में पाये जाने वाले छन्दों से नहीं मिलता।

---

[१] श्यामसुन्दरदास द्वारा सम्पादित परमाल रासो भूमिका।

[२] वीर विनोद खण्ड १ पृष्ठ ३२७ और ३२६।

[३] उदयपुर राज्य का इतिहास भाग १, पृष्ठ ३२६ और ३२६ तथा भाग २ पृष्ठ ११५८।

[४] इसका प्रकाशन मुनि जिनविजय द्वारा सम्पादित सिंघी जैन-ग्रन्थमाला में हुआ है।

(५) रासो-काव्य सभी पाठ्य काव्य है जबकि वीसलदेव रास गेय-काव्य है।
(६) स्वयं काव्य में कवि ने उसे रास कहा है, रासो कहीं नहीं।

इस रास का परिचय इस अध्याय के अंत में परिशिष्ट में दिया गया है। रासो-काव्यों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया जाता है—

(क) ब्रजभाषा के रासो काव्य

(१) हम्मीर रासो

हिन्दी-साहित्य के इतिहासों में कहा गया है कि शार्ङ्गधर पद्धति के रचयिता कवि शार्ङ्गधर ने रणथंभौर के चौहान नरेश हम्मीर के चरित्र को लेकर हम्मीर रासो की रचना की थी। हिन्दी के इतिहासकारों में यह प्रवाद कैसे चला इसका पता नहीं चलता। शार्ङ्गधर हम्मीर की राज-सभा के सभासद राघवदेव के पुत्र दामोदर का पुत्र था और उसने सं० १४२० में शार्ङ्गधर पद्धति नामक संस्कृत के सुभाषित संग्रह की रचना की थी।[1] उसके हम्मीर काव्य अथवा हम्मीर रासो लिखने का उल्लेख कहीं नहीं मिलता।

प्राकृत पिंगल नामक छन्द-ग्रन्थ में किसी हम्मीर से संबंध रखने वाले कतिपय पद्य उद्धृत हुए हैं। रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं— मुझे पूरा निश्चय है कि ये पद्य हम्मीर रासो के ही हैं।[2] पता नहीं शुक्लजी के इस दृढ़ निश्चय का आधार क्या है। उस समय राजाओं के आश्रय में अनेक कवि रहा करते थे और समय-समय पर प्रसंगानुसार स्फुट पद्यों की रचना किया करते थे। अतः स्पष्ट प्रमाण के अभाव में शुक्लजी का कथन मान्य नहीं किया जा सकता।[3]

मिश्रबन्धु विनोद में शारंगधर का उल्लेख करके लिखा है कि उसने शारंगधर-पद्धति, हम्मीर काव्य और हम्मीर रासो नामक तीन ग्रन्थ बनाये तथा उसकी भाषा वर्तमान ब्रजभाषा तथा अवधी से बहुत-कुछ मिलती है। इसके पश्चात् उसकी कविता का यह उदाहरण दिया गया है—

> सिंह गमन सुपुरुष वचन कदलि फरै इकबार।
> तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार॥[4]

---

[1] कीथ : हिस्ट्री आव संस्कृत लिटरेचर, पृष्ठ २२२।
[2] हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ २६।
[3] अगरचन्द नाहटा : वीरगाथा-काल की रचनाओं पर विचार (ना० प्र० पत्रिका भाग ४७, पृष्ठ २६०)।
[4] मिश्रबन्धुविनोद, भाग १, पृष्ठ २०८।

प्राकृत पिंगल में आये हुए पद्य नीचे उद्धृत किये जाते हैं—

[1]मुंचहि सुंदरि पाअं अप्पहि हसिऊण सुमुहि खग्गं मे ।
कप्पिअ मेच्छ-सरीरं पेच्छइ वअणाइं तुम्ह धुअ हम्मीरो ॥ ७१ ॥

[2]पिंधउ दिढ सण्णाह वाह उप्पर पक्खर दइ ।
बंधु समदि रण धसउ सामि हम्मीर वअण लइ ॥
उड्डल णह पह भमउ खग्गु रिउ-सीसहि डारउ ।
पक्खर पक्खर ठल्लि पेल्लि पव्वअ अप्फालउ ॥
हम्मीर कज्जु जज्जल भणइ कोहाणल मुह मह जलउ ।
सुरिताण सीस करवाल दइ तज्जि कलेवर दिअ चलउ ॥१०६॥

[3]पअ भर दरमरु धरणि तरणि रह धुल्लिअ झंपिअ ।
कमठ पिट्ठ टरपरिअ मेरु मंदर सिर कंपिअ ॥
कोह चलिअ हम्मीर वीर गअ जूह संजुत्ते ।
किअउ कट्ठु हाकंद मुच्छि मेच्छह के पुत्ते ॥ ९२ ॥

[4]ढोल्ला मारिअ ढिल्लि महं मुच्छिअ मेच्छ सरीर ।
पुर जज्जल्ला मंतिवर चलिअ वीर हम्मीर ॥

---

[1] हे सुन्दरी! पैर को छोड़ दे। हे सुमुखी! हँसकर मुझे खड्ग दे। म्लेच्छों के शरीर काटकर हम्मीर निश्चय ही तुम्हारा मुख देखेगा।

[2] बाहों पर पाखर देकर दृढ़ कवच पहनूँगा। स्वामी हम्मीर की आज्ञा मानकर बांधवों से विदा लेकर रण में धँस पड़ूँगा। उडुगणों से भरे (या उड़कर) आकाश मार्ग में भ्रमण करूँगा। शत्रु के सिर पर खड्ग मारूँगा। पाखर-से पाखर ठेल पेल कर पर्वत को भी उखाड़ दूँगा। जज्जल कहता है कि हम्मीर के लिए क्रोधानल से मुख में जल रहा हूँ। सुलतान के सिर पर तलवार मारकर उसी शरीर से स्वर्ग को चला जाऊँगा।

[3] पैरों के भार से पृथ्वी दलमला उठी। सूर्य का रथ धूल से ढक गया। कच्छप की पीठ दब गयी। मेरु और मन्दराचल की चोटियाँ काँप उठीं। हाथियों के यूथ के साथ वीर हम्मीर क्रोध करके चला। म्लेच्छों के पुत्रों ने (म्लेच्छों ने) कष्टपूर्वक हाहाकार का आक्रन्द किया और मूर्च्छित हो गये।

[4] हम्मीर ने ढोल बजाया, दिल्ली में म्लेच्छों के शरीर मूर्च्छित हो गये। श्रेष्ठ मंत्री जज्जल को आगे करके वीर हम्मीर चला। जब वीर हम्मीर चला तो पैरों के भार से पृथ्वी काँपने लगी। दिशाओं में, मार्गों में और आकाश में अन्धकार छा गया। धूलि ने सूर्य के रथ को ढक लिया। दिशाओं, मार्गों और आकाश में अन्धकार हो गया। खुरासानियों के ओल (धन की वसूली के लिए जामिन के रूप में पकड़े हुए पुरुष) लाकर तुम विपक्षियों का दल मल कर त्यार करते हो और दिल्ली में ढोल बजाते हो।

चलिअ वीर हम्मीर पाअभर मेइणि कंपइ।
दिगमग णह अंधार धूलि सूरह रह झंपइ॥
दिगमग णह अंधार आणु खुरसाण क ओल्ला।
दरमरि दमसि विपक्ख मारि ढिल्ली मह ढोल्ला॥१४७॥

[४]भंजिअ मलअ चोलवइ णिवलिअ गंजिअ गुज्जरा।
मालवराअ मलअगिरि लुक्किअ परिहरि कुंजरा॥
खुरासाण खुहिअ रण मह मुहिअ लंघिअ साअरा।
हम्मीर चलिअ हारव पलिअ रिउगण काअरा॥१५१॥

[६]धर लग्गइ अग्गि जलंत धह धह कइ दिगमग णहपह अणल भरे।
सब दीस पसरि पाइक्क लुलइ धणि थणहर जहण दिआव करे॥
भअ लुक्किअ थक्किअ वइरि तरुणि जण भइरव भेरिअ सद्द पले।
महि लोट्टइ पिट्टइ रिउ सिर तुट्टइ जक्खण वीर हमीर चले॥१६०॥

[७]ढुल्लु ढुल्लु खुलि खुलि महि घघर रव कलइ
ण ण ण ण गिदि करि तुरअ चले।
ट ट ट गिदि पलइ टपु धसइ धरणि धर
चक्कमक करि बहु दिसि चमले॥

---

४ हम्मीर चला तो हाहाकार शब्द होने लगा, शत्रुगण कायर हो गये, मलय पराजित हो गया, चोल देश का स्वामी निपतित हो गया, गुजर विध्वस्त हो गया। हाथियों को छोड़कर मालव का राजा मलयाचल में जा छिपा, खुरासान क्षुब्ध हो उठा और रण में मूर्च्छित हो गया और सागर को पार कर गया।

६ जब वीर हम्मीर चलता है तो शत्रुओं के घरों में आग लग जाती है। वह धक धक करके जलती है। दिशाओं के मार्ग और आकाश के पथ अग्नि (की ज्वालाओं) से भर जाते हैं। सैनिक सब दिशाओं में फैलकर चलते हैं। (?)। भय से शत्रुओं की स्त्रियों के समूह छिप गये और जड़ हो गये और नगाड़ों का भयंकर शब्द होने लगा। शत्रुओं के सिर टूटते हैं फूटते हैं और पृथ्वी पर लोटते हैं।

७ वीर हम्मीर जब युद्ध में चला तो घोड़ों के खुरों से पृथ्वी को खोदकर घघर करके घोड़े युद्धभूमि में सनसनाते हुए बढ़े। टपटप करते हुए उनके टाप (पैरों के आघात) पड़ने लगे, पहाड़ धसने लगे, चक्करों में सब दिशाएँ चमचमा उठीं, सेना दनदनाती चली, पैदल चले और हाथी धमधम करते चले। वह श्रेष्ठ सत्पुरुष शत्रुओं के हृदयों में शल्य करता है।

चलु दमकि दमकि चकु चलइ पक्खु रजु
घुलकि घुलकि करि करि ललिआ।
वर मणसअर कन्द विपख हिअअ सल
हमिर वीर जब रण चलिआ ॥२०४॥

[1]जहा भूत वेताल णच्चंत गावंत खाए कबंधा।
सिआ फार फक्कार हक्का चलंता फुल्ले कण्णरंधा ॥
कआ टुट्ट फुट्टेइ मथा कबंधा णचंता हसंता।
तहा वीर हम्मीर संगाम मज्झे तुलंता जुझंता ॥२१८३॥

(७) विजयपाल-रासो

कहा जाता है कि नल्लसिंह ने विजयगढ़ (करौली) के यादव-नरेश विजयपाल के चरित्र को लेकर विजयपाल रासो नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ का कुछ अंश मुंशी देवीप्रसाद को मिला था।[2] उसमें लिखा है कि नल्ल सिरोहिया भाट था और उसे विजयपाल ने हिंडौन नगर, सौ गाँव, हाथी, घोड़े, रत्न आदि पुरस्कार में दिये थे तथा पल्ल, मल्ल और जल्ल नाम के तीन भाई भी उसके थे।

विजयपाल का समय ग्यारहवीं शताब्दी बताया जाता है। इस ग्रंथ में उसका समय सं० १०९३ दिया है पर विजयपाल के दिग्विजय का जो वर्णन किया है वह कल्पना और अतिशयोक्तिपूर्ण है। उसे भारतवर्ष के समस्त राजपूत-वंशों का विजेता कहा गया है। इस ग्रंथ में जो नाम आये हैं वे तेरहवीं शताब्दी के हैं जैसे गजनी का शहाबुद्दीन, दिल्ली का अनंगपाल, अजमेर का राम (सोमेश्वर) और कन्नौज का पज्जून। ये नाम जान पड़ता है पृथ्वीराज रासो से लिये गये हैं।

मिश्रबन्धु इसे सं० १३५५ के लगभग की रचना मानते हैं[3] पर भाषा और शैली को देखते हुए यह ग्रंथ बहुत पीछे का जान पड़ता है। इसका निर्माण-काल श्री अगरचन्द नाहटा अठारहवीं या उन्नीसवीं शताब्दी और श्री मोतीलाल

---

[1] जहाँ भूत-वेताल कबंधों को खाकर नाचते और गाते हैं, सियार विपुल आवाज करते हुए कर्ण रंध्रों को फाड़ते हैं। शरीर टूटते हैं, माथे फूटते हैं तथा कबंध नाचते और हँसते हैं ऐसे संग्राम में वीर हम्मीर खड्ग के साथ जूझ रहा है।

[2] (क) मुंशी देवीप्रसाद — कवि रत्नमाला पृष्ठ ७७-२७।
(ख) अगरचन्द नाहटा — वीरगाथा काल की रचनाओं पर विचार (ना० प्र० पत्रिका भाग ४७ पृष्ठ २५६)।

[3] मिश्रबन्धु विनोद भाग १ पृष्ठ २०७।

मेनारिया स १६०० के लगभग का अनुमान करते हैं।[1] हम मनारियाजी का कथन ठीक जान पडता है।

मुसिफ दवाप्रसाद को प्राप्त हुए अश म कुल ४२ छद हैं—८ छप्पय १८ मोतीदाम २ चौपाई ८ पद्धरि और ६ दोह।[2]

(३) सुजाणसिंघ रासो-

इसका दूसरा नाम वरमलपुर-गढ विजय है। वरसलपुर के भाटी सरदार न मुलतान स आते हुए एक काफिले को लूट लिया। काफिले के लोगो न बीकानेर के महाराजा सुजाणसिंह से शिकायत की जिस पर सुजाणसिंह न वरसलपुर पर आक्रमण करके उसके सरदार को पराजित किया। इसी आक्रमण का वणन इस रासो म है। यह ६८ पद्यो की एक छोटी सी कृति है जिसका रचयिता महातमा (मथण) जाति का जोगीदास था।

(४) क्याम रासो या रासा अलफखां का

इसका नाम अलफखां का रासो है पर यह क्याम रासा के नाम से प्रसिद्ध है। इसम राजस्थान के फतहपुर (शेखावाटी) के क्यामखानी नवाब अलफखां के पराक्रमो का वणन है। प्रस्तावना रूप म क्यामखानी नवाबो का वृत्तात आरम्भ स दिया गया है। परिशिष्ट रूप म अलफखां के वशजो का वणन भी है। इसकी रचना म १६६१ म हुई पर परिशिष्ट भाग स १७११ म समाप्त हुआ।[4]

क्याम रासा का रचयिता यामतखा था जो अलफखां का द्वितीय पुत्र था। उसका उपनाम जान कवि था। जान हिन्दी का एक बहुत बडा प्रतिभाशाली कवि हुआ है। उसन लगभग ८० ग्रथो की रचना की जिनम स अधिकाश प्रेमाख्यानक है। क्यामखानी वश मूलत चौहान था। जान न अपन चौहान

---

[1] (क) अगरचद नाहटा वीरगाथा काल की रचनाओ पर विचार।
(ख) मोतीलाल मनारिया राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ ८३ ८४।

[2] विशाल भारत के अक्तूबर सन १६३४ के अक म कुवर महेन्द्रपालसिंह न महाराज विजयपाल और उनका रासा नामक लेख प्रकाशित करवाया था। उसम इस रासो के ११ पद्य (३ कवित्त और १० मालती छद) भी दिए गए हैं जो मुसिफ देवीप्रसाद को प्राप्त हुए अश म नहीं हैं।

[3] इसकी दो प्रतिया बीकानेर के अनूप सस्कृत पुस्तकालय म हैं। टसीटोरी न रचनाकाल स १७६६ अनुमित किया है क्योकि एक प्रति इसी वष की माघ सुदी ५ की लिखी हुई है।

[4] यह ग्रथ अगरचद नाहटा द्वारा सपादित होकर जोधपुर के राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान म प्रकाशित हुआ है।

वंशीय होने का बड़े गर्व के साथ उल्लेख किया है। फतहपुर का यह क्यामखानी राजवंश अपनी धार्मिक उदारता के लिए प्रसिद्ध रहा है। हिन्दी की सुप्रसिद्ध कृष्ण भक्त कवयित्री ताज जान कवि के परदादा ताजखां द्वितीय की सहोदरा थी।[1] उसका विवाह अकबर के साथ हुआ था।

क्यामखां रासा की भाषा साधारणतया व्रजभाषा है। उसमें दोहा छंद का ही विशेष प्रयोग हुआ है यद्यपि मनहरण कवित्त सवैया चौपाई छप्पय अर्धभुजंगी, नाराच आदि भी बीच-बीच में आये हैं। ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा मूल्यवान है। प्रारम्भ के भाग में जिसमें प्राचीन इतिहास आया है, दंतकथाओं और जनश्रुतियों की प्रधानता है पर पिछला भाग ऐतिहासिक है और मध्यकालीन भारत तथा राजस्थान के अंधकाराच्छन्न इतिहास पर बहुत महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।

(५) रतन-रासो

रतन रासो में रतनसिंह राठौड़ का चरित्र वर्णित है।[2] यह रतनसिंह जोधपुर के राजा उदयसिंह के पुत्र महेशदास राठौड़ का पुत्र था और उज्जैन के पास धरमत में जसवंतसिंह और औरंगजेब के बीच में जो युद्ध हुआ था उसमें लड़कर मारा गया था। उसके वंशजों ने मध्य भारत में रतलाम सैलाना और सीतामऊ के राज्य स्थापित किये थे।

रतन रासो का रचयिता कुंभकरण सांदू शाखा का चारण था। वह रतनसिंह का समकालीन था और उसके पुत्र रामसिंह के समय में उसने इस ग्रंथ की रचना की थी। रचनाकाल में १७३० और १७४८ के बीच में अनुमान किया गया है।

यह पृथ्वीराज रासो की भांति विविध छंदों में लिखा गया है। इसमें चार अध्याय हैं—

(१) प्रस्तावना।

(२) राव गांगा से महेशदास तक रतनसिंह के पूर्वजों के पराक्रमों का वर्णन।

(३) रतनसिंह के पराक्रमों का वर्णन।

(४) उज्जैन समय—उज्जैन के युद्ध और रतनसिंह की मृत्यु का वर्णन।

यह आश्चर्य की बात है कि रासो की प्राप्त सीतामऊ प्रतियों में इन अध्यायों

---

[1] भारतभूषण शर्मा क्यामखानी नवाब अलफखां (राजस्थानी भाग ३ अंक ४, पृष्ठ २८)।

[2] इस ग्रंथ का संपादन महाराजकुमार रघुबीरसिंह के निर्देशानुसार पण्डित काशीराम शर्मा ने साहित्यरत्न ने किया है।

की संख्या प्रथम द्वितीय तृतीय और चतुर्थ के स्थान पर तृतीय चतुर्थ, पंचम और षष्ठ भी हुई है।[1]

इसी विषय को लेकर खिड़िया शाखा के चारण जग्गा ने राजस्थानी भाषा में रतन महेसदासोत री वचनिका नामक चम्पू-ग्रन्थ की रचना की थी।[2] यह जग्गा उज्जैन वाले युद्ध में स्वयं उपस्थित था। वचनिका और रासो के ऐतिहासिक वर्णन एक-दूसरे का समर्थन करते हैं। फलतः इन दोनों ग्रन्थों का ऐतिहासिक मूल्य बहुत बड़ा है।

(६) राणा-रासो[3]

राणा रासो में मेवाड़ के राणा-वंश का इतिहास वर्णित है। इसका लेखक दयाल था जो संभवतः मेवाड़ निवासी ब्रह्मभट्ट (राव) था। उसका पूरा नाम दयालदास था। इस ग्रन्थ की सं. १९४४ की लिखी हुई एक प्रति मिली है जिसमें लिखा है कि वह सं. १६७५ की प्रति की नकल है। पर यह लेख ठीक नहीं क्योंकि इस काव्य में महाराणा करणसिंह (सं. १६७६ १६८४) का विस्तृत वर्णन किया हुआ है और महाराणा जगतसिंह, राजसिंह तथा जयसिंह (सं. १७३७ १७५५) के नामों का भी उल्लेख है जो सभी सं. १६७५ के पश्चात् हुए हैं। इसलिए अनुमान होता है कि ग्रन्थ का निर्माण महाराजा जयसिंह के राज्यकाल में अठारहवीं शताब्दी में हुआ होगा।[4]

राणा रासो की रचना चारण भाटों की प्रथाबद्ध रीति पर हुई है। कल्पना, अलौकिकता, अतिशयोक्ति और अनैतिहासिकता का मेल सर्वत्र

---

1. श्री काशीराम शर्मा, रतनरासो के रचयिता का वंश-परिचय (राजस्थान भारती भाग ३ अंक ३ ४)
2. इस ग्रन्थ का डाक्टर एल पी टैसीटोरी ने सम्पादित करके बंगाल एशियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित कराया था। श्री काशीराम शर्मा ने भी हाल में ही इसका सम्पादन किया है।
3. (क) मोतीलाल मेनारिया, राजस्थान में हिंदी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज भाग १ पृष्ठ ११८ ११९।

   (ख)—वही— राजस्थानी भाषा और साहित्य पृष्ठ १७२।
4. सन् १९४४ का यह प्रति पृथ्वीराज रासो के समर्थक सुप्रसिद्ध प० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने तैयार करवायी थी। पंडित जी द्वारा खोजी हुई तथा प्रसिद्ध की हुई कुछ अन्यान्य रचनाएँ भी इसी प्रकार संदिग्ध अथवा जाली सिद्ध हुई हैं। सं. १६७५ की प्रति का उल्लेख भी हमारी समझ में निराधार है और पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता तथा प्राचीनता सिद्ध करने के लिए किया गया है।

पाया जाता है, विशेषत प्रारम्भ के भाग में। इसमें पद्यों की संख्या ८०० के लगभग है।

(७) हम्मीर रासो[1]

इसमें रणथंभोर के प्रसिद्ध चौहान-नरेश हम्मीर का चरित्र वर्णित है। इसका लेखक जोधराज अत्रिगोत्रीय आदि गौड ब्राह्मण था। उसकी उपाधि डिडवरिया राव थी।[2] उसने नीमराणा के चौहान राजा चन्द्रभानु की प्रेरणा से सं. १८८५ में इस रासो की रचना की। आरम्भ में चौहान वंश और हम्मीर के पूर्वजों का भी संक्षेप में वर्णन है। मुख्य कथा हम्मीर और अलाउद्दीन खिलजी के युद्ध की है जिसमें हम्मीर मारा जाता है।

इस काव्य में लगभग ११०० पद्य हैं। कथा में कल्पना की मात्रा बहुत अधिक है। प्रायः सभी घटनाओं का वर्णन इतिहास के विरुद्ध पड़ता है। फलतः इसका ऐतिहासिक मूल्य कुछ भी नहीं है। कविता की दृष्टि से भी सामान्य कोटि की रचना है।

(८) करहिया को रायसो[3]

इसमें करहिया के युद्ध का वर्णन है जो भरतपुर के जाट राजा जवाहरसिंह और करहिया के परमारों के बीच सं. १८२४ में हुआ था। इसका कर्त्ता गुलाब कवि माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण था। उसने यह युद्ध अपनी आंखों से देखा था। यह रायसो ६५ पद्यों की एक छोटी-सी रचना है जिसमें दोहा, सोरठा, छप्पय, पद्धरि, मोतीदाम, नगस्वरूपी (नाराच), भुजंगी (भुजंगप्रयात), हनूफाल छन्दों के साथ साथ मनहरण कवित्त और सवैया छन्दों का प्रयोग भी हुआ है। कविता की दृष्टि से साधारण रचना है।

(९) लावा-रासा[4]

इसका दूसरा नाम पूम-यश प्रकाश है। इसमें लावा, लदाना और उणियारा के नरूका सरदारों के एक अमीरखाँ और उसके पुत्र के साथ हुए युद्धों का वर्णन है। इसका कर्त्ता कविया शाखा का चारण गोपालदान था जिसने राजस्थानी भाषा में भी शिखर-वंशोत्पत्ति नामक मुख्य ऐतिहासिक कृति लिखी।

---

1. यह रासो श्यामसुन्दरदास द्वारा सम्पादित होकर काशी की नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हो चुका है।
2. इस उपाधि से जोधराज का भाट (ब्रह्मभट्ट) होना पाया जाता है। ब्रह्मभट्ट भी ब्राह्मण होते थे।
3. नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १० और वागासव-स्मारक ग्रंथ में प्रकाशित।
4. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा प्रकाशित।

रासो ग्रन्थ में विविध छन्दों के अतिरिक्त 'वचनिका' नाम से तुकांत गद्य का प्रयोग भी हुआ है जिसकी भाषा मराठवाड़ा है। मेनारिया ने रासो का रचना काल सं० १८२६ और १८ ० के बीच में अनुमान किया है।

कविता की दृष्टि से साधारण रचना है पर वर्णित घटनाओं की लगभग समसामयिक रचना होने से इतिहास की दृष्टि से मूल्यवान् है।

(ख) राजस्थानी भाषा के रासो काव्य

रासो लिखने की प्रथा संभवतः व्रजभाषा (पिंगल) में ही आरम्भ हुई। पर राजस्थानी में भी अनेक रासो लिखे गये। इनमें सबसे प्राचीन 'जैतसी रो रासो' और सबसे बड़ा 'खुम्माण रासो' है जिसे हिन्दी के इतिहास-लेखकों ने हिन्दी की सर्वप्रथम रचना मानने की भूल की है।

(१) राउ जैतसी रो रासो[1]

इसकी एक प्रति बीकानेर के अभय-जैन-ग्रन्थ भण्डार में है। यह २० छन्द ७६ नाराच और १ कवित्त—इस प्रकार कुल ९७ छन्दों की छोटी-सी आख्यानात्मक रचना है। इसमें बीकानेर पर किये गये कामरां के आक्रमण और राजा जैतसी की वीरता का वर्णन है। रचयिता और रचनाकाल दोनों ही अज्ञात हैं पर रचना वर्णित घटना की समसामयिक जान पड़ती है। इसी घटना से सम्बद्ध एक और समसामयिक रचना 'राउ जैतसी रो छन्द' नाम से प्राप्त हुई है। इस रासो की भाषा पानी आदि इन दुर्ग-काव्यों से मिलती-जुलती है।

(२) राम-रासो

राम रासो में राम-कथा का वर्णन है। इसके रचयिता माधोदास दधवाड़िया जाति के चारण थे। इनके पिता का नाम चूंडा था। कहा जाता है कि उनका जन्म जोधपुर राज्य के बलूंदा गाँव में हुआ था। उनका समय सं० १६१० और १६९० के बीच में अनुमान किया जाता है। उनके विषय में राठौड़ पृथ्वीराज का कहा हुआ यह दूहा प्रसिद्ध है—

> चरु चनभुज सेवियो तत-फल लाधो तास।
> चारण जीवो चार जुग मरो न माधोदास॥

माधोदास की तीन रचनाएँ प्रसिद्ध हैं (१) राम रासो (२) भाषा दसम स्कंध। और (३) गज-मोक्ष। राम रासो में १२०० के लगभग छन्द हैं। उसकी कविता अत्यन्त उत्कृष्ट है। राजस्थानी साहित्य में यह रचना बड़े आदर की दृष्टि से देखी जाती रही है।

---

[1] राजस्थान भारती के भाग २ अंक २ में प्रकाशित।

(३) शत्रसाल-रासो[1]

इसमें बूंदी के चौहान-नरेश शत्रसाल (छत्रसाल) का चरित्र वर्णित है। इसका कर्ता बूंदी राज्य का निवासी डूंगरसी था जो जाति का राव या ब्रह्मभट्ट था। श्री मेनारिया ने इसका रचना काल सं. १७१० के लगभग बताया है। इस ग्रंथ में ५०० पद्य हैं। कविता अच्छी है।

(४) सगतसिंघ रासो[2]

इसमें महाराणा प्रताप के छोटे भाई सगतसिंघ (शक्तिसिंह) का चरित्र वर्णन किया गया है। इसमें ८०० के लगभग पद्य हैं। काव्य दृष्टि से यह सुन्दर रचना है। इसकी रचना आसिया शाखा के चारण गिरधर ने सं. १७२८ के लगभग की थी।

(५) खुम्माण रासो[3]

इस काव्य में मेवाड़ के महाराणाओं का वर्णन है। बाप्पा से आठवीं पीढ़ी में होने वाले खुमाण-सुत खुम्माण का चरित्र बहुत विस्तार से वर्णित किया गया है। संभवतः इसी कारण इसका नाम खुम्माण रासो रखा गया हो (वैसे खुम्माण के वंश में उत्पन्न होने से मेवाड़ के सभी महाराणाओं का खुम्माण विरुद है)। महाराणा राजसिंह तक पहुंचकर ग्रंथ खंडित हो जाता है। अध्याय ६ के अंत में दिये गये दोहे से प्रतीत होता है कि ग्रंथ की रचना महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के शासन-काल (सं. १७६७ १७९०) में हुई थी।

खुम्माण रासो का लेखक जैन साधु दौलतविजय उपनाम दलपति था। ग्रंथ के द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ खंडों की प्रशस्ति में उसने अपना संक्षिप्त परिचय दिया है जिससे ज्ञात होता है कि वह तपागच्छीय सुमतिसाधु की शिष्य परम्परा में पद्मविजय के शिष्य जयविजय के शिष्य शांतिविजय का शिष्य था। शांतिविजय की लिपि की हुई दो पुस्तकें मिली हैं जिनका लिपिकाल सं. १७३३ और सं. १७[illegible] है। इसको देखते हुए दौलतविजय का समय अठारहवीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना जा सकता है। खुम्माण रासो की रचना उसने सं. १७७५ के आसपास की होगी।

---

1. मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ १४८।
2. वही, पृष्ठ १६०।
3. इसकी एक सचित्र प्रति पूना के भाण्डारकर ओरियंटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट के संग्रह में है। श्री कृष्णचंद्र श्रोत्रिय ने इसका संपादन किया है तथा इस पर शोध प्रबंध लिखा है।

उपलब्ध प्रति के अनुसार खुम्माण रासो में आठ खंड हैं जिनमें आठवाँ खण्डित है। खंडों में आये हुए विषयों का विवरण इस प्रकार है—

खंड १—बाप्पा रावळ अधिकार। बाप्पा से खुम्माण तक आठ पीढ़ियाँ हुई।

खंड २—खुम्माण चरित्र रतिसुंदरी अभिग्रह करण चित्र कारिका चरित्र रमण, राजकुआरि पाणिग्रहण, पंच सहेली चित्रगढ़ मिलण।

खंड ३—रावळ करण तनुज खुम्माण चरित्र दंपति संवाद पंच सहेली आश्वटक नलवर गढ़ गमन नागगृह तिनोत्तम आगमण धोला गवरी पुनरपि तरुन मृत सजीवन गमन मिलण सामंत वनिमाल्ट नायक भाव नवरस विलास।

खंड ४—संदेसा मोचन पुन प्रिय तरुन चित्रगढ़ आगमन गजनीपति महमद पातसाह चित्रगढ़ आगमन सामंत जुध करण सामंत नायक जुद्ध करण। पातसाह गुन मोचन कानन्द वमामाड रतिसुन्दरी दवळद इत्यादि चरित्र।

खंड ५—खुम्माण संतान राहप अधिकार आसणसी रावळ अधिकार, समरसी रावळ अधिकार।

खंड ६—राणा रतनसेन पदमणी सारा बादल संबंध।

खंड ७—रतनसेन के आगे के राणाओं का वर्णन।

खंड ८—राणा राजसिंह के राजसमुद्र बंधान की तयारी तक का वर्णन आया है। इस खंड के ७६ वें पद्य के तीसरे चरण पर ग्रंथ खंडित हो जाता है।

ग्रंथ का अधिकांश भाग ऐतिहासिक दृष्टि से कोई मूल्य नहीं रखता। कथोपयोगी काल्पनिक घटनाओं और अलौकिक तत्त्वों की सर्वत्र भरमार है। साहित्यिक दृष्टि से कविता सुन्दर है।

(ग) रासो शैली की अन्य रचनाएँ

इन रासो नाम वाली कृतियों के अतिरिक्त कुछ और भी कृतियाँ हैं जिनका नाम यद्यपि रासो नहीं है फिर भी जो रासो शैली की ही रचनाएँ हैं। नाम के अतिरिक्त रासो काव्यों की अन्य सभी विशेषताएँ उनमें मिलती हैं। इनमें से अधिकांश राजस्थान में ही लिखी गयी हैं और विभिन्न राजाओं या वीरों के युद्धादि पराक्रमों का वर्णन करती हैं। कुछ उल्लेखनीय कृतियों के नाम इस प्रकार हैं —

(१) श्रीधर कृत रणमल्ल छंद
(२) महाकवि केशवदास कृत रतन-बावनी
(३) जैन यति मानसिंह कृत राजविलास
(४) हरिनाभ कृत कमरसिंह समर
(५) सूदन कृत सुजान चरित्र
(६) चंद्रशेखर कृत हम्मीर-हठ

(७) श्रीधर या मुरलीधर कृत जंगनामा

(८) सूरजमल मीसण कृत वंशभास्कर

इनमें प्रथम को छोड़कर बाकी सभी व्रजभाषा की रचनाएँ हैं वंश-भास्कर में स्थान-स्थान पर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और राजस्थानी (डिंगल) का भी प्रयोग हुआ है। रासो की सी भाषा-शैली तुलसीदास की कवितावली एवं रामचरितमानस के लंकाकांड तथा भूषण के शिवराज-भूषण के कई एक युद्ध-वर्णन के पद्यों में भी दिखायी पड़ती है। श्री धीरेन्द्र वर्मा के शब्दों में इस शैली का प्रयोग ऐसे[1] अवसरों पर मध्य-युग के कवियों ने बराबर किया है और आज तक यह परम्परा चल रही है।[2]

टिप्पणी—ऊपर व्रजभाषा और राजस्थानी के प्रमुख रासो ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस परिचय के लिखे जाने के पश्चात् कुछ और भी छोटे मोटे रासो ग्रंथों के नाम ज्ञात हुए हैं उदाहरणार्थ महेश कृत हम्मीर रासो, सदानंद कृत भगवतसिंह का रासो, श्रीधर रचित पारीछत रायसा इत्यादि।

इनमें महेश कृत हम्मीर रासो विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसमें २४३ पद्य हैं। उसकी रचना महेश कवि ने सं० १८२३ के पूर्व की थी (रासो की हस्तलिखित प्रति सं० १८२३ की प्राप्त हुई है)। जोधराज के हम्मीर रासो (रचनाकाल १८८५) पर उसका बहुत प्रभाव दिखायी पड़ता है। दोनों के अनेक पद्यों के चरण हूबहू मिलते जुलते हैं। जहाँ चरण हूबहू मिलते-जुलते नहीं हैं वहाँ भी शब्दावली बहुत कुछ मिलती-जुलती है और ऐसा जान पड़ता है मानो एक ने दूसरे का छंदांतर मात्र किया है।

---

[1] अर्थात् युद्ध के।

[2] धीरेन्द्र वर्मा रासो की भाषा पर विचार (साहित्यसंदेश, भाग ३ अंक ६, जून, १९४४ पृष्ठ ७८)।

(घ) परिशिष्ट—बीसलदे-रास

१ कर्त्ता

बीसलदे रास का कर्त्ता नरपति नाल्ह था। रास में कई स्थानों पर उसने अपना नाम दिया है कहीं नरपति कहीं नाल्ह और कहीं नल्ह कवीसर। रामचन्द्र शुक्ल ने उसे भाट बताया है पर रास में उसे जोइसी (या व्यास) कहा गया है[1] जिससे वह ब्राह्मण जान पड़ता है। श्री मोतीलाल मेनारिया व्यास जाति को सेवग या भोजग जाति का पर्याय मानते हैं पर राजस्थान में व्यास तो एक आस्पद है जो सभी ब्राह्मण जातियों में पाया जाता है।

२ रूपान्तर

बीसलदे-रास के दो रूपान्तर मिलते हैं जिनमें से एक खंडों में विभाजित है और दूसरा सलग या खंडों में अविभाजित। अविभाजित रूपान्तर के भी तीन अलग-अलग संस्करण मिलते हैं। जिनको छोटा, मध्यम और बड़ा नाम दिये जा सकते हैं। विभाजित रूपान्तर की दो ही प्रतियां देखने में आयी हैं पर अविभाजित रूपान्तर की कई दर्जन प्रतियां उपलब्ध हो चुकी हैं। सबसे अधिक प्रतियाँ मध्यम संस्करण की मिली हैं।

विभाजित रूपान्तर में चार खंड हैं। उसकी पद्य-संख्या एक प्रति के अनुसार ७७+७९+१०२+४१=२९९ और दूसरी प्रति के अनुसार ८४+८६+१०३+४२=३१५ होती है। अविभाजित रूपान्तर की पद्य-संख्या इस प्रकार है—

(१) लघु संस्करण २०० से २११

(२) मध्यम संस्करण २४० से २६८

(३) बड़ा संस्करण २७८ से ३११।

चारों रूपान्तरों में लघु रूपान्तर प्राचीन और मूल कृति के अधिक निकट और प्रामाणिक जान पड़ता है।

दोनों रूपान्तरों की प्रमुख भिन्नताएं इस प्रकार हैं—

(१) विभाजित रूपान्तर के चौथे खंड की कथा अविभाजित रूपान्तर में नहीं है अर्थात् जहां विभाजित रूपान्तर का तीसरा खंड समाप्त होता है वहां अविभाजित रूपान्तर समाप्त हो जाता है।

---

[1] अविभाजित रूपान्तर में जोइसी और विभाजित रूपान्तर में व्यास।

(२) विभाजित रूपांतर में कवि का अस्पष्ट नाम दिया गया है पर अविभाजित रूपांतर में नाल्ह (नाल्हि)।

(३) विभाजित रूपांतर में ग्रंथ के रचना-संवत का सूचक पद्य आरम्भ में आता है पर अविभाजित रूपांतर में अंत में।

(४) विभाजित रूपांतर की प्रतियों में रचनाकाल तेरहवीं शताब्दी (सं १२१२ या १२७२) दिया गया है पर अविभाजित रूपांतर की प्रतियों में ग्यारहवीं शताब्दी (सं १०७३ या १०७७)। इस रूपांतर के बड़े संस्करण की कुछ प्रतियों में रचनाकाल चौदहवीं शताब्दी (सं १३०७) दिया हुआ है। छोटे संस्करण की प्रतियों में रचना संवत वाला पद्य नहीं पाया जाता।

(५) विभाजित रूपांतर में विवाह प्रसंग का वर्णन अविभाजित रूपांतर की अपेक्षा अधिक विस्तृत है।

(६) विभाजित रूपांतर की प्रस्तावना भी अविभाजित रूपांतर की प्रस्तावना से विस्तृत है। उसमें यह भी बताया गया है कि रास किस प्रकार गाया जाता था।

(७) विभाजित रूपांतर में बीसलदेव उड़ीसा जाकर वहाँ के राजा का प्रधान (मंत्री) बन जाता है। अविभाजित रूपांतर के संक्षिप्त संस्करण में यह प्रसंग नहीं है। इस रूपांतर के मध्यम और बड़े संस्करणों के अनुसार बीसलदेव उड़ीसा जाकर वहाँ के प्रधान से मिलता है, प्रधान उसे रानी के पास ले जाता है और रानी उसे भाई बनाकर अपने यहाँ रख लेती है तथा उसके रहने की व्यवस्था बाँध देती है।

(८) विभाजित रूपांतर में पांडे उड़ीसा जाकर बीसलदेव का पता स्वयं लगाता है और उसे पत्र देता है। छोटे संस्करण में उड़ीसा का राजा उससे कहता है कि हमारे यहाँ तो प्रधान ही पत्नी से विरहित है। मध्यम और बड़े संस्करणों में राजा को पांडे की बात पर आश्चर्य होता है और वह बीसलदेव का पता लगाने का प्रयत्न करता है। पता लगने पर वह उसे राजसभा में बुला लेता है और पांडे से कहता है कि तुम अपने राजा को स्वयं पहचान लो।

(९) विभाजित रूपांतर में निम्नलिखित बातें अविभाजित रूपांतर की अपेक्षा अधिक हैं—

१ राजा भोज का पुरोहित को राजमती का वर खोजने के लिए भेजना, पुरोहित का मथुरा-मण्डल मण्डलगढ़, दिल्ली-मंडल अयोध्या टोंक जगन्नाथ आदि स्थानों में जाना, तथा अन्त में अजमेर के बीसलदेव को पसन्द करना।

२ वगन व जीमन का वणन ।
३ साम्हेळ के समय सामने जाने वाले राजकुमारो सरदारो उनके घोडो और राजवंशो के नाम ।
४ विवाह म काम करने वाले माघ कान्तिराम आदि पंडितो के नाम ।
५ चौथ फेरे म वीसलदेव का चित्तौड का मागना ।
६ अजमेर लौट आने पर अजमेर नगर तथा आना सागर तालाब की शोभा और राजा रानी के विलास का वणन ।
७ वीसलदेव के प्रवास म जाते समय साथ जाने वाले सरदारो तथा उनके घोडो के नाम ।
८ वीसलदेव के प्रवास म जाते समय उसकी मा बहन आदि संबंधियो का दुखी होना ।
९ वीसलदेव के प्रवास म जाते समय होने वाले शकुनो का वणन ।

(१०) अविभाजित रूपान्तर म प्रवास के पूव राजा रानी का सवाद तथा प्रवास के पश्चात रानी और पाडे का सवाद विभाजित रूपान्तर की अपेक्षा अधिक विस्तृत हैं ।

(११) अविभाजित रूपान्तर में बड़ सस्करण के वणन विभाजित रूपान्तर की अपेक्षा प्राय विस्तृत हैं ।

३ प्रतियां[1]

(क) विभाजित रूपान्तर की प्रतियां—

(१) अभय जैन ग्रन्थ भडार (बीकानेर) की प्रति न० १—इसका लिपि काल स १६६६ दिया हुआ है । पद्य-सख्या ८४+८६+१०३+४२=३१५ है । यह गुटकाकार है ।

(२) अभय जैन ग्रन्थ भडार (बीकानेर) की प्रति न० २—लिपि-काल स १७२८ । पद्य-सख्या—७७+७६+१०२+४१=२६६ । यह खुले पत्रों की प्रति है ।[2]

(ख) बड़ सस्करण की प्रतियां—

(१) अभय जैन ग्रन्थालय (बीकानेर) की प्रति न० ३—पद्य सख्या ३१० । लिपिकाल नहीं दि[illegible] [illegible] आदि से प्रति सबसे प्राचीन जान पड़ती है ।

---

1 श्री अगरचन्द [illegible] त सामग्री के [illegible]
[illegible]
2 [illegible] ५६ की [illegible] प्रति[illegible]
[illegible]

(२) खरतरगच्छ भंडार (कोटा) की प्रति—पद्य-संख्या ३१०। लिपि-काल नहीं है। इसकी प्रतिलिपि अभय-जैन ग्रंथालय में प्राप्य है।

(३) अनन्तनाथ भंडार (बम्बई) की प्रति—पद्य-संख्या ३०६। लिपि-काल १७६३।

(४) मोतीचंद खजानची संग्रह (बीकानेर) की प्रति—पद्य-संख्या २८४।

(५) बड़ा भंडार (जैसलमेर) की प्रति—पद्य-संख्या २८३।

(६) ज्ञानसागर भंडार (बड़ा उपासरा, बीकानेर की प्रति)—पद्य-संख्या २८०।

(७) जिनचारित्रसूरि-संग्रह की प्रति—पद्य-संख्या २७८ दी हुई है पर वास्तव में २८३ है। इसकी प्रतिलिपि हमारे संग्रह में विद्यमान है।

मध्यम संस्करण की प्रतियाँ—इस संस्करण की सबसे अधिक प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं—

(१) फूलचंद झाबक-संग्रह (फलौदी) की प्रति नं० २—लिपि-काल १६३३। पद्य-संख्या २४६। संवत् के उल्लेख वाली यह सबसे प्राचीन उपलब्ध प्रति है।

(२) भावहर्षीय-खरतर गच्छ भंडार (बालोतरा) की प्रति—लिपि-काल १६८५। पद्य-संख्या २९८।

(३) वृद्धिचंद्र-संग्रह (बीकानेर) की प्रति—लिपि-काल १७२२। पद्य-संख्या २९२।

(४) अभय-जैन ग्रंथालय (बीकानेर) की प्रति नं० ९—लिपि-काल १७३७। पद्य-संख्या २४८।

(५) अनूप-संस्कृत पुस्तकालय (बीकानेर) की प्रति—लिपिकाल १७४२। पद्य-संख्या २४१।

(६) ओरियन्टल-कालेज-लाइब्रेरी (बड़ौदा) की प्रति—लिपि-काल १७४३। पद्य-संख्या २६९।

(७) अभय जैन-ग्रंथालय (बीकानेर) की प्रति नं० ९—लिपि-काल १७५१। पद्य-संख्या २९८।

(८) जयचंद भंडार (बीकानेर) की प्रति—लिपि-काल १७४५।

(९) खरतर-आचार्य शाखा भंडार (बीकानेर) की प्रति—लिपि-काल सं० १७७३।

(१०) जैनाचार्य विजयधर्मसूरि-संग्रह की प्रति—लिपि-काल १७३५। कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी में।

(११) बगाल एनियाटिक सोसाइटी (कलकत्ता) की प्रति—ऊपर की स १७७४ की प्रति की प्रतिलिपि ।

(१२) कृपाचद्रसूरि ज्ञानभडार (बीकानेर) की प्रति—लिपि-काल १७८६ पद्य सख्या २४० ।

(घ) छोटे सस्करण की प्रतिया—

(१) वृहद् ज्ञान भडार (बडा उपासरा बीकानेर) की प्रति—लिपिकाल १६८१ । पद्य सख्या २०० दी गयी है पर गणना करने मे २११ होती है । गुटकाकार ।

(२) अभय जैन ग्रथ भडार बीकानेर की प्रति न० ६ - पद्य-सख्या २०२ । लिपिकाल नहीं दिया है ।

(३) जिनभद्रसूरि भडार (जैसलमेर) की प्रति—पद्य सख्या २०२ । लिपिकाल नहीं दिया है ।

इनके अतिरिक्त और अनेक प्रतिया राजस्थान के हस्तलिखित ग्रन्थों के भण्डारों मे मिलती है । बीकानेर के अभय जैन ग्रन्थालय मे और कई एक पूर्ण तथा अपूर्ण प्रतियाँ सगृहीत है ।

६ रचनाकाल

अविभाजित रूपान्तर के छोटे सस्करण की प्रतियों मे रास का रचनाकाल नहीं दिया गया है । बाकी प्रतियों मे विभिन्न रचनाकाल दिये हुए है ।

(क) विभाजित रूपान्तर की प्रतियों मे—

(१) सवत बार बारोत्तरा (१२१२) मझारि ।
जेठ बदी नवमी बुधवार ॥ (१७४४ की प्रति मे)

(२) बारह से बहोत्तराहा (१२७२) मझारि ।
जेष्ट बदी नवमी बुधवार ॥ (१६६६ की प्रति मे)

(ख) अविभाजित रूपान्तर के बड़े सस्करण की तीन प्रतियों मे—

(१) सवत तेर सतोतरे (१३०७) जाणि ।
सुद पचमी नै श्रावण मास ॥
हस्त नक्षत्र रविवार सू ।
शुभ दिन जोसी रे जोडियउ रास ॥

(ग) बड़े सस्करण की बाकी प्रतियों मे और मध्यम सस्करण की प्रतियों मे—

(१) सवत सहस सतिहुतरे (१०७७) जाणि ।
शुकल पचमी श्रावणि मास ॥
रोहिणि नक्षत्र सोहामणउ ।
शुभ दिन जोडियउ जोसियउ रास ॥

(२) सवत सहस तिहुतरइ (१०७३) जाणि ।
सुकुल पचमी श्रावणि मास ॥
रोहिणि नक्षत्र साहाभणउ ।
॥

रास का रचनाकाल गौरीशकर हीराचन्द ओझा और श्यामसुन्दरदास स १२७२ रामचन्द्र शुक्ल और सत्यजीवन वर्मा स १२१२ और रामकुमार वर्मा स १०७३ मानते है।[1] सोलहवी शताब्दी मे गुजरात मे नरपति नाम का एक कवि हुआ है। श्री मोतीलाल मनारिया उसे ही बीसलदे रास का कर्त्ता मानते है और रास का रचनाकाल स १५४५ ६० के आसपास ठहराते है।[2] उनकी यह मान्यता हम ठीक नही जान पडती। गुजरात वाला नरपति अपने को न तो कही नाल्ह लिखता है और न व्यास या जोल्सी।

हमारी सम्मति मे बीसलदे रास का मूल रूप प्राचीन है। उसका रचना काल तेरहवी शताब्दी का अत या चौदहवी का आरम्भ माना जा सकता है। यह कहने की आवश्यकता नही कि रास के गेय-काव्य होने के कारण उसके रूप और आकार मे परिवर्तन होता रहा है। छोटा सस्करण अपभ्रंशकृत मूल के निकट है। छोटे सस्करण मे रचना-सवत-सूचक पद्य नही पाया जाता। बडे सस्करणो के सवत सूचक पद्य हमारी समझ मे पीछे से जोडे हुए है।

५ भाषा

बीसलदे रास की भाषा शुद्ध राजस्थानी है।[3] अवश्य ही यह तेरहवी या चौदहवी शताब्दी की नही पर उससे बहुत दूर भी नही है। जैसा कि ऊपर

---

[1] गौ ही ओझा बीसलदेव रासा का निर्माणकाल (ना प्र पत्रिका भाग ४५ अक २ पृष्ठ १७१)।
श्यामसुन्दरदास हिन्दी साहित्य (द्वा सस्करण (स २००६) पृष्ठ १०४। रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास (स १९९९ का सस्करण) पृष्ठ ३६।
रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास द्वितीय सस्करण, पृष्ठ २१०।

[2] मोतीलाल मनारिया राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृष्ठ ८८ ८९।

[3] (क) श्री रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं—इस ग्रथ मे एक बात का आभास अवश्य मिलता है। वह यह कि शिष्ट काव्य भाषा मे ब्रज और खडीबोली के प्राचीन रूप का ही राजस्थान मे भी व्यवहार होता था। साहित्य की सामान्य भाषा हिन्दी ही थी। बीसलदेवरासो मे बीच बीच मे बराबर इस साहित्यिक भाषा (हिन्दी) को मिलाने का प्रयत्न दिखायी पडता है।
ध्यान देने की पहली बात है राजपूताने के एक भाट की अपना

बीसलदेव के विरह में रानी विलाप करती है और सखियाँ समझाती हैं। इतने में एक बुढ़िया रानी के बारह मासों के दुःख का वर्णन करती है। दूती उसके पास आती है और कहती है कि जब तक बीसलदेव नहीं लौटता तब तक के लिए मैं दूसरा सुन्दर पुरुष बनाती हूँ। राजमती उसे तिरस्कार कर निकलवा देती है। इस प्रकार ग्यारह वर्ष बीत जाते हैं। बारहवें वर्ष में राजमती पाण्डे का पत्र देकर उड़ीसा भेजती है। वह सात महीनों में वहाँ पहुँचता है और बीसलदेव को संदेश देता है। बीसलदेव उड़ीसा के राजा को आज्ञा लेकर लौटने की तैयारी करता है। राजा और रानी उसे नाना प्रकार की भेंट देते हैं। चलने के बाद राजा एक जोगी को अजमेर भेजता है कि वह राजमती को उसके आने का समाचार दे। फिर बीसलदेव लौट आता है और राजमती से मिलता है।

अविभाजित रूपान्तर की कथा यहाँ समाप्त हो जाती है। विभाजित रूपान्तर में इतना कथा अधिक है— बीसलदेव लौटने पर अपने लौट आने का समाचार भोज के पास भेजता है। भोज बीसलदेव से मिलते अजमेर आता है और लौटते समय राजमती को साथ ले जाता है। कुछ समय के पश्चात् बीसलदेव धार जाता है और राजमती को लेकर लौट आता है। राजा और रानी के मिलन के साथ कथा की समाप्ति होती है।

७ ऐतिहासिकता

बीसलदेवरास एक गीत काव्य है। उसमें ऐतिहासिक तत्त्व ढूँढना उचित न होगा। रास का मुख्य उद्देश्य एक प्रेम-कथा का वर्णन है। सभी प्रेमकथाओं में प्रायः किसी प्रसिद्ध राजा का नाम जोड़ दिया जाता है। नरपति नाल्ह संभवतः अजमेर का रहने वाला था। अजमेर में बीसलदेव का नाम बहुत प्रसिद्ध था। नरपति ने उसी राजा को लेकर एक प्रेम-कथा रची कर दी। राजा के और संभवतः रानी के नाम के सिवाय काव्य में कोई ऐतिहासिक तत्त्व नहीं है।

साँभर में चौहानों का राज्य बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा था। बीसलदेव का जन्म इसी राजवंश में हुआ। इस वंश की राजधानी पहले साँभर में थी। अजयराज ने अजमेर बसाया तब से अजमेर में राजधानी हुई। अजयराज का पुत्र अर्णोराज हुआ जिसने अजमेर में आना सागर का निर्माण कराया।

साँभर अजमेर के इस चौहान राजवंश में बीसलदेव नामक दो राजा हुए। प्रथम बीसलदेव (विग्रहराज तृतीय) का समय सं० ११३० के लगभग और दूसरे बीसलदेव (अर्थात् विग्रहराज चतुर्थ) का समय सं० १२१० से १२२१ तक था। प्रथम बीसलदेव इन दोनों में से कोई धार के राजा भोज का समकालीन नहीं था। प्रथम बीसलदेव

का संबंध धार से अवश्य था। उसने धार के राजा उदयादित्य की, जो भोज का छोटा भाई था और अपने भतीजे के पश्चात् धार के सिंहासन पर बैठा था सैनिक सहायता की थी। इस बीसलदेव की रानी का नाम शिलालेख में राज नहीं मिला है जो राजमती से मिलता जुलता है। इन कारणों से गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा प्रथम बीसलदेव को ही इस रास का नायक मानते हैं। पर इस बीसलदेव के समय तक अजमेर और आना सागर का निर्माण नहीं हुआ था। रामचन्द्र शुक्ल दूसरे बीसलदेव (विग्रहराज चतुर्थ) को रास का नायक मानते हैं। बीसलदेव का उड़ीसा जाना कवि की कल्पना है। इसी प्रकार भोज द्वारा दहेज में चित्तौड़, बूंदी, मंडोर, माडलगढ़, कुडाल, सोरठ, गुजरात आदि का दिया जाना भी कल्पना मात्र है।

विशेष द्रष्टव्य

हाल में श्री नाहटाजी को कुछ और भी प्रतियां प्राप्त हुई हैं। ग्रंथ के छपते छपते उनकी कृपा से दो और प्राचीन प्रतियां देखने को मिली। दोनों प्रतियां सत्रहवीं शताब्दी की लिखी हुई हैं। उनका विवरण इस प्रकार है—

(१) विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान की प्रति नं. ८६—लिपि-काल सं. १६४६। पद्य-संख्या १६५। अविभाजित रूपान्तर।

(२) विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान की प्रति नं. ६६—लिपि-काल सं. १६६६। पद्य-संख्या १८७। अविभाजित रूपान्तर।

प्रथम प्रति के ८२ पद्य दूसरी प्रति में नहीं हैं और दूसरी के ७४ पद्य प्रथम प्रति में नहीं हैं अर्थात् ११३ पद्य दोनों में समान हैं। अब तक प्राप्त प्रतियों में इनकी पद्य संख्या सब से कम है। सत्रहवीं शताब्दी की लिखित ६ प्रतियाँ अभी तक देखने में आयी हैं जो क्रमशः १६३३ (पद्य-संख्या २४६), १६४६ (पद्य-संख्या १६५) १६६६ (पद्य-संख्या ३१५) १६८१ (पद्य-संख्या २११) १६८४ (पद्य-संख्या २४८), और १६६६ (पद्य संख्या १८७) की हैं।

३

चद और उसकी कृतियाँ

(क) चद बरदायी

पृथ्वीराज रासो का कर्ता चद बरदायी प्रसिद्ध है। वह जाति का ब्रह्म भट्ट था और अजमेर दिल्ली के चौहान राजा पृथ्वीराज तृतीय (राज्यकाल संवत् १२३६ से १२४९) तथा काशी-कन्नौज के गाहड़वाल राजा जयचन्द्र (सं १२२६ से १२५०) का समकालीन था।

चद की जीवनी के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी ज्ञात नहीं। अनुश्रुति में बहुत सी बातें प्रसिद्ध हैं पर उनके लिए कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं।

(क) पृथ्वीराज विजय और हम्मीर चरित काव्यों में जो चौहान राजवंश और पृथ्वीराज के इतिहास से संबंध रखते हैं चद का उल्लेख नहीं मिलता।[1] पृथ्वीराज विजय में पृथ्वीराज के राज बन्दीजन (भट्ट) का नाम पृथ्वीभट्ट दिया हुआ है। कुछ विद्वान उसी के चद होने का अनुमान करते हैं।

(ख) चद का प्राचीनतम उल्लेख दो जैन प्रबंधों में मिलता है जिनके नाम पृथ्वीराज प्रबंध और जयचन्द्र प्रबंध हैं। जिस संग्रह में ये प्रबंध संगृहीत हैं उसकी लिपि काल १५२८ विक्रमी है।[3] उनके रचनाकाल का कुछ पता नहीं। इस संग्रह में कुछ अन्य प्रबंध भी संगृहीत हैं जिनका रचनाकाल

---

[1] पृथ्वीराज विजय काव्य के प्रथम सर्ग में चौहान राजा चन्द्रराज का वर्णन करते हुए कवि चन्द्रराज से उसकी उपमा दी गयी है। कुछ विद्वानों का मत है कि यहाँ चन्द्रराज से चन्द का ही अभिप्राय है। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा का कहना है कि चन्द्रराज चद नहीं हो सकता संभव है कि वह काश्मीर कवि चन्द्रक हो जिसका उल्लेख क्षेमेन्द्र ने किया है।

[2] (क) मथुराप्रसाद शर्मा महाकवि चन्द अने पृथ्वीराज रासो (गुजराती) पृष्ठ ५२। शर्माजी चद का पूरा नाम पृथ्वीचन्द भट्ट बताते हैं।

(ख) राव मोहनसिंह पृथ्वीराज रासो शंकाएँ और समाधान (शोध पत्रिका भाग २ अंक ४ पृष्ठ ३५०)।

[3] ये प्रबंध मुनि जिनविजय द्वारा संपादित और सिंघी जैन ग्रंथमाला में प्रकाशित पुरातन प्रबंध संग्रह में (पृष्ठ ८६ ८८ ९२) प्रकाशित हुए हैं।

संवत् १२९० दिया हुआ है। अतः उक्त दोनों प्रबंधों का रचनाकाल संवत् १२९० और संवत् १४२८ के बीच का होना चाहिए।

पृथ्वीराज प्रबंध के अनुसार चंद पृथ्वीराज का द्वारभट्ट था। उसका नाम चंद बलिद्दिक, चंद बलिद्द और चंद बलद्दिअ इन तीन रूपों में आया है।[1] एक बार पृथ्वीराज ने किसी बात पर अप्रसन्न होकर अपने मंत्री कइंबास (कयंबवास कयमास) को मारने का विचार किया। रात के समय जब मंत्री दरबार से उठकर घर जा रहा था तब राजा ने छिपकर उस पर बाण चलाया पर निशाना चूक गया। चंद इस बात को जान गया और उसने एक पद्य द्वारा राजा को फटकारा। भेद खुलने के भय से राजा ने उसे कैद में डाल दिया। दूसरे दिन मंत्री को अधिकारच्युत करके निकाल दिया और चंद को भी छोड़ दिया। चंद राजा से यह कहकर कि तुम शीघ्र ही म्लेच्छों द्वारा कैद करके मारे जाओगे वहाँ से काशी चला गया। काशी के राजा जयचंद्र ने उससे कहा कि मैंने तुम्हें कई बार बुलाया पर तुम नहीं आये। चंद यह कहकर कि 'राजन्! तुम्हारी मृत्यु भी निकट ही है' वहाँ से भी चला गया।

चंद के कहे हुए वे पद्य इस प्रकार हैं—

इक्कु बाणु पहुवीसु जु पइं कइंबासह मुक्कओ।
उर भिंतरि खडहडिउ धीर कक्खंतरि चुक्कउ॥
बीअं करि संधीउं भंमइ सूमेसर नंदण।
एहु सु गडि दाहिमओ खणइ खुद्दइ सइंभरिवणु॥
फुडु छंडि न जाइ इहु लुब्भि(यउ) वारइ पलकउ खल गुलह।
न जाणउं चंद बलद्दि(म)उ किं न वि छुट्टइ इह फलह॥१॥
[पृष्ठ ८६, पद्य २७५]।

---

[1] बलिद्द या बलिद्दिअ शब्द का अर्थ बैल या सांड होता है। यहाँ वह संस्कृत के वृषभ और ऋषभ शब्दों की भाँति प्रशंसासूचक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। सांड अपनी शक्ति के लिए प्रसिद्ध होता है। अतः वीरों के साथ इस प्रकार की उपाधि लगाई जाती है। प्रसिद्ध विजेता सिकन्दर की एक उपाधि जुलकरनैन कही गयी है जिसका अर्थ दो सींगों वाला अर्थात् सांड होता है। गुजरात के प्रसिद्ध सुलतान महमूद की उपाधि बेगड़ा थी जिसका भी यही अर्थ होता है। राजस्थानी-साहित्य में वीरों के लिए सांड की उपमा का प्रयोग बहुत देखा जाता है, जैसे राउ जैतसी रउ छंद काव्य में वीरम के लिए कहा गया है—वगडउ सांड वीरम वियाउ। बलिद्दिअ का ब्रजभाषा में बरद्दिया या बरदिया रूप बनता है। पिछले लेखकों ने इसकी व्युत्पत्ति वर+दिया से की और इसका अर्थ किया जिसको शिव शक्ति ने वर दिया था। वरदिया शब्द का प्रयोग रासो में मिलता है। पीछे भाटों ने इसी को वरदाया बना लिया।

जगहु म गहि गाहिमओ रिपु राय खयकर।
कूद मन मम ठवओ एहु जवय मिनि जगार॥
सहनामा मिक्खवउ ज मिक्खिविउ बुज्झइ।
जपइ चद वलिन्दु मज्झ परमक्खर सुज्झइ॥
पह पहुविराय सम्भरि धनी सम्भरि सण्णउ समिरिसि।
कइवास विआस विसट्ठ विण मच्छि बधि बद्धओ मरिसि॥२॥

[पृष्ठ ८६ पद्य २७६]

ये दोनों पद्य रासो के बृहद् रूपान्तर में विकृत रूप में मिलते हैं पहला कमास वध खण्ड में और दूसरा वनी लड़ाई खण्ड में। अन्य रूपान्तरों में केवल पहला पद्य मिलता है दूसरा नहीं मिलता।

एक वान पहुमी नरेस कमासह मुक्यौ।
उर उप्पर थरहर्‌यौ बीर कक्खतर चुक्यौ॥
बियौ बान संधान हन्यौ सोमसर नन्दन।
गाढौ करि निग्रह्यौ खनिव गड्‌यौ संभरि धन॥
थल छोरि न जाइ अभागरौ गाड्‌यौ गुन गहि अग्गरौ।
इम जपै चद बरद्दिया कहा निघट्टै इय प्रलौ॥

[कमास वध खण्ड (२१) पृष्ठ १४६६ पद्य २३६]

अगह मगह दाहिमौ देव रिपु राय खयंकर।
कूर मंत जिन करौ मिले जबु व जगर॥
मो सह नामा सुनौ एह परमारथ सुज्झै।
अक्खै चंद विरद्द बियौ कोइ एह न बुज्झै॥
प्रथिराज सुनवि संभरि धनी इह संभलि संभारि रिस।
कैमास बलिष्ट वसीठ बिन म्लेच्छ बंध बध्यौ मरिस॥

[वही लड़ाई खण्ड (६६) पृष्ठ २१८२ पद्य ४७५]

जयचंद्र प्रबंध में जयचन्द के विषय में कहे हुए दो पद्य उद्धृत किये गये हैं जिनको चन्द की रचना बताया गया है। वे पद्य इस प्रकार हैं—

त्रिण्हि लक्ख तुषार सबल पाखरियइ जसु हय।
चऊदसय मयमत्त दंति गज्जंति महामय॥
वीस लक्ख पायक्क सफर फारक्क धणुद्धर।
ल्हूसडु अरु बलु यान संख कु जाणइ ताह पर॥
छत्तीस लक्ख नराहिवइ विहि विनडिओ हो किम भयउ।
जइचंद न जाणउ जल्हु कइ गयउ कि मूउ कि धरि गयउ॥१॥

[पृष्ठ ८८ पद्य २७८]

जइतचदु चक्कवइ देव तुह दुसह पयाणउ ।
धरणि धसवि उद्धसइ पडइ रायह भगाणउ ॥
सेसु मणिहिं सकियउ मुक्कु हय खुरि सिरि खडिउ ।
तुट्टओ सो हर धवलु धूलि जसु चिय तणि मडिउ ॥
उच्छलिउ रेणु जसगिग गय सुकवि जल्हु सच्चउ चवइ ।
वग्ग इदु विदु भुय जुअलि सहस नयण किण परि मिलइ ॥२॥

[पृष्ठ ८८-८९ पद्य २७९]

इनमें से पहला पद्य रासो के बृहत् रूपान्तर के रनसी-खंड में कुछ परिवर्तित रूप में मिलता है। दूसरा पद्य रासो के किसी रूपान्तर में नहीं पाया जाता।

अमिय लष्ष तोखार सजड पष्षर सायद्दल ।
सहस हस्ति चवसट्ठि गरुअ गज्जन्त महाबल ॥
पंच कोटि पाइक्क सुफर पारक्क धनुद्धर ।
जुध जुवान वर वीर तोन बंधन सद्धन भर ॥
छत्तीस सहस रन नाइबौ बिहि निमान ऐसो कियौ ।
जयचंदराइ कविचंद कहि उदधि बुड्डि कै धर लियौ ॥

[रनसी खंड पद्य २१६ पृष्ठ २५०२]

इस प्रबंध में दोनों पद्य चंद के नाम से दिए हुए हैं पर पृथ्वीराज प्रबंधवाले पद्यों के विपरीत इनमें चंद का नाम नहीं है। उसके बदले दोनों में जल्ह का नाम आया है। हमारी सम्मति में ये पद्य चंद के नहीं किन्तु जल्ह के हैं। रनसी-खंड में उद्धृत पद्य में चंद का नाम है पर स्वयं रासो के अनुसार ही रनसी प्रस्ताव चंद की नहीं किन्तु जल्ह की कृति है। रासो के अनुसार जयचंद की पराजय के पूर्व ही चंद और पृथ्वीराज गजनी में अपने प्राण दे चुके थे।

इन प्रबंधों में दी गयी बात कहाँ तक सत्य है यह बताना संभव नहीं। प्रबंधों में ऐतिहासिक और अनैतिहासिक सभी प्रकार की बातें संगृहीत हैं। प्रबंधों के रचनाकाल तक पृथ्वीराज और जयचंद के संबंध में बहुत-सी जन-श्रुतियाँ प्रचलित हो गया था। प्रबंधकार ने उनका संग्रह कर लिया जान पड़ता है। एक प्रबंध में पृथ्वीराज द्वारा सुलतान के सात बार पराजित किए जाने का उल्लेख है।

(ग) इसके पश्चात् चंद का उल्लेख सूरदास की साहित्य-लहरी के एक पद में मिलता है। सूरदास स्वयं ब्रह्मभट्ट और चंद के वंशज थे। इस पद के अनुसार पृथु के यज्ञ में एक अद्भुत रूप वाले पुरुष का जन्म हुआ। ब्रह्मा ने उसका नाम ब्रह्मराव रखा। उसे दुर्गा ने स्तनपान कराया जिससे वह दुर्गा-पुत्र कहलाया। उसके वंश में चंद हुआ जिसे पृथ्वीराज ने ज्वाला देश दिया सऊरे।

चार पुत्र हुए जिनमें से दूसरे पुत्र के वंश में सूर का जन्म हुआ। इस पद की प्रामाणिकता में विद्वानों ने संदेह प्रकट किया है।

यह पद इस प्रकार है—

प्रथम ही प्रिथु जाग ते भे प्रगट अदभुत रूप।
ब्रह्मराव विचारि ब्रह्मा राख नाम अनूप॥
पान पय देवी दियो सिव आदि सुर सुख पाय।
कह्यो दुर्गा ! पुत्र तेरो भयो अति अधिकाय॥
पारि पायन सुरन के सुर सहित अस्तुति कीन।
तासु बंस प्रसिद्ध में भौ चंद चारु नवीन॥
भूप पृथ्वीराज दीन्हों तिन्हैं ज्वाला देस।
तनय ताके चार कीनो प्रथम आप नरेस॥
दूसरे गुनचन्द ता सुत सीलचन्द सरूप।
वीरचन्द प्रताप पूरन भयो अद्भुत रूप॥
रथंभौर हमीर भूपत संग खेलत आप।
तासु बंस अनूप भौ हरचन्द अति बिख्यात॥
आगरे रहि गोपचल में रह्यो ता सुत बीर।
पुत्र जनमे सात ताके महा भट गभीर॥
कृष्णचंद उदारचन्द जु रूपचंद सुहाइ।
बुद्धचन्द प्रकास चौथो चन्द भे सुखदाइ॥
देवचंद प्रबोध संसृति चंद ताको नाम।
भयो सप्तो नाम सूरजचंद मंद निकाम॥
सो समर करि साहि सेवक गये विधि के लोक।
रह्यो सूरजचंद दृग ते हीन भर वर सोक॥
परो कूप पुकार काहू सुनो ना संसार।
सातवें दिन आइ जदुपति कियो आपु उधार॥
दियो चख दै कही सिसु सुनु माँग वर जो चाइ।
हौं कही प्रभु ! भगति चाहत सत्रु-नास सुभाइ॥
दूसरो ना रूप देखौं देखि राधा स्याम।
सुनत करुनासिंधु भाख्यो एवमस्तु सुधाम॥
प्रबल दच्छिन विप्रकुल ते सत्रु ह्वै है नास।
अखिल बुद्धि विचारि विद्या मान माने मास॥
नाम राख्यो मोर सूरजदास सूर सु स्याम।
भये अंतरध्यान बीते पाछली निसि जाम॥

माहि पन सो ऱ्है ब्रज की बस सुख चित थाप ।
थापि गोसाई करी मरी आठ मद्ध छाप ॥
विप्र ह्व प्रिथु-जाग ते को भाव भूरि निकाम ।
सूर है नँद-नन्दजू को लयो मान गुलाम ॥

(घ) इसके पश्चात् चंद के नाम का उल्लेख कवि चंद्रशेखर के सुरजन चरित काव्य में मिलता है। चंद्रशेखर बूंदी के राजा सुरजन और भोज के (जो अकबर के समकालीन थे) दरबार का कवि था। काव्य का रचनाकाल सं० १६३५ वि० है। सुरजन के पूर्वजों का वर्णन करते हुए पृथ्वीराज के प्रसंग में उसने चंद का उल्लेख किया है। जहाँ तक चौहानों की प्राचीन वंशावली और पृथ्वीराज संबंधी घटनाओं का संबंध है यह काव्य रासो से मेल न खाने पर भी इतिहास विरुद्ध होने में रासो से होड़ लगाता है। इस काव्य के अनुसार चंद एक बंदीजन था जिसे पृथ्वीराज ने प्रचुर धन-दान से संतुष्ट कर रखा था। राजा के गजनी में बंदी होने पर चंद भी भूमंडल में घूमता घामता वहाँ पहुँचता है और सुलतान से कहता है कि पृथ्वीराज अंधा होने पर भी एक कुंठित बाण से ही सात लोहे के कड़ाहों को एक साथ बेध सकता है और सुलतान को पृथ्वीराज के बाण की करामात देखने के लिए राजी कर लेता है। चंद का षड्यंत्र सफल होता है, सुलतान मारा जाता है और चंद राजा को घोड़े पर बैठाकर वापिस कुरुजांगल देश में लौटा लाता है। कुछ समय राज्य करने के बाद पृथ्वीराज का स्वर्गवास होता है और उसका पुत्र प्रह्लाद राजसिंहासन पर बैठता है। (सुरजनचरित, सर्ग १० और ११)

(ङ) इस समय के आसपास रासो का संग्रह (अर्थात् निर्माण) कार्य आरंभ हो जाता है और उसे चंद के नाम के साथ जोड़ दिया जाता है (रासो की सबसे प्राचीन उपलब्ध प्रति सं० १६६७ की—लघुतम रूपांतर की—है)।

(च) सं० १६७६ में रचित अपने रस रतन कथा काव्य में पुहकर कवि ने चंद बरदायी का उल्लेख किया है—

प्रथम सेस जेहि बासु न्द्र सुखदेवहु पायो ।
बालमीक श्रीव्यास कालिदासहु गुन गायो ॥
माघ माघ दिन जमि बाण जयदेव सु दरिय ।
मानदेव उद्योत चंद बरदाइक चड्डिय ॥
अ काव्य राग विद्यानिपुन बाकबानि कंठह धरन ।
कविराज सकल गुन गन तिलक करि पीठिका बन्दत चरन ॥

(छ) संवत् १७०५ में रचित दलपति मिश्र के जसवन्त उद्योत नामक काव्य में रासो का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। इसमें चंद का नाम भी आया है।

(ज) महाराणा राजसिंह (सं १७०६ से सं १७३७) की राजसमंद पर खुदवायी हुई राजप्रशस्ति में रासो का उल्लेख हुआ है।

(झ) कुंभकर्ण सांदू ने अपने रतन रासा काव्य (रचनाकाल सं १७३० के लगभग) में चंद वर्णित प्रिथिराज-जस का उल्लेख किया है।

(ञ) सुप्रसिद्ध गुजराती कवि प्रेमानंद के पुत्र वल्लभ ने अपने कुंतीप्रसन्नाख्यान नामक काव्य में (रचनाकाल सं १७७८) में चंद और उसके रासो का उल्लेख किया है और अपने पिता के सामने चंद का मंद बताया है—

भारत भमु प्रमाण रासो ना तमासा भारी
  वरदा भारत व्यास आगल उच्चरीत।
पृथ्वीराज रासो कीधो मान न माय न मा
  प्रेमानंद ना कविता सविता नी प्रभात।।
ब्राह्मण थी भाट थया कराज विधिना आ ता
  ग्वाल्हेर ना पिता थी चंद मंद दरसीत।।

(ट) सं १८०० के लगभग होने वाले कवि जदुनाथ ने जो अपने को चंद का वंशज बताता है अपने वृत्त विलास ग्रंथ में चंद का परिचय इस प्रकार दिया है—पृथ्वीराज के यहाँ चंद नामक भाट हुए। उनने शिव के मंदिर में शक्ति की सेवा की। शिव ने प्रगट होकर चंद को वरदान दिया जिससे वे वरदायी नाम से प्रसिद्ध हुए। फिर उनने गंगा की सेवा की। गंगा ने प्रसन्न होकर उनको हार सहित वचन दिया जिससे वे सहार कहलाये। पृथ्वीराज उनको देवता की तरह मानता था। उनने एक लक्ष पाँच सहस्र प्रमाण पृथ्वीराज के सुयश की रचना की।[1]

(ठ) विद्वानों ने चंद की जीवनी से संबंध रखने वाली कुछ और भी बातें लिखी हैं जिनमें से अधिकांश स्वयं रासो (वृहद् संस्करण) में वर्णित है[2]—

चंद जगात गोत्र का भाट था।[3] उसके पूर्वज पंजाब के रहने वाले थे। उनकी जजमानी अजमेर के चौहानों के यहाँ परम्परा से चली आती थी। चंद का जन्म लाहौर में हुआ था।[4] उसके पिता का नाम वेण और गुरु का नाम

---

1 गौरीशंकर हीराचंद ओझा कवि जदुनाथ का वृत्त विलास (नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग ५ पृष्ठ १९६ १९७)।
2 श्यामसुंदरदास चंदवरदायी (द्वितीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का कार्य विवरण पृष्ठ १२४ और १३५)।
3 जगात नाम का कारण जग्य (यज्ञ) से उत्पन्न होना बताया जाता है।
4 कविभद्र सु नागौर चंद उत्पत्ति लाहौरं। (रासो वृहद् रूपान्तर मुद्रित संस्करण आदि पर्व पद्य ५८४)

गुरुभाई था। चंद और पृथ्वीराज का जन्म एक ही दिन हुआ और मरण भी एक ही साथ हुआ।[1] चंद साहित्य तथा अन्यान्य शास्त्रों का बड़ा विद्वान था। उसे जालंधरी देवी का इष्ट था। उसके दो स्त्रियाँ थीं जिनमें एक का नाम कमला उपनाम मेवा था और दूसरी का गौरी उपनाम राजौरा। रासो की कथा चंद ने गौरी से कही थी। उसके ग्यारह संतान थीं जिनमें एक पुत्री और दस पुत्र थे। पुत्री का नाम राजबाई तथा पुत्रों के नाम सूर, सुन्दर, सुजान, जल्ह, वल्ह, बलभद्र, केहरि, वीरचंद, अवधूत और गुणराज थे।

पृथ्वीराज और गोरी का युद्ध हुआ तब चंद उपस्थित नहीं था। हाहुलिराय नामक विश्वासघाती सामंत ने उसे देवी के मन्दिर में कैद कर दिया था। कैद से छूटने पर चंद दिल्ली आया। तब तक गोरी पृथ्वीराज को गजनी ले जा चुका था। चंद भी गजनी पहुँचा। चंद के षडयंत्र से गोरी पृथ्वीराज के बाण से मारा गया। इसके पश्चात चंद और पृथ्वीराज दोनों ने कटार से अपना अंत किया।[2]

इन सब बातों का आधार स्वयं पृथ्वीराज रासो ही है। इतिहास से इन बातों का समर्थन नहीं होता। कई बातें तो स्पष्ट ही इतिहास के विरुद्ध हैं।

इतिहास के अनुसार पृथ्वीराज युद्ध भूमि में ही पकड़कर मार डाला गया था। इस प्रसंग को लेकर अनेक जनश्रुतियाँ प्रचलित हो गयी थीं जिनका उल्लेख प्रबन्ध-संग्रहों में तथा काहड़दे प्रबन्ध, सुरजन चरित और पृथ्वीराज रासो में मिलता है।

पुरातन प्रबन्ध संग्रह की C संज्ञक प्रति के पृथ्वीराज प्रबन्ध के अनुसार पृथ्वीराज पकड़े जाने के बाद, अपने प्रति सुलतान के दुर्व्यवहार से खिन्न होकर, [illegible] हुआ और मारा गया।

उसी संग्रह की P संज्ञक प्रति के अनुसार सुलतान पृथ्वीराज को पकड़कर दिल्ली लाया। वहाँ पृथ्वीराज ने अपने मंत्री से जिसने सुलतान को बुलाया था, कहा कि यदि मुझे धनुष-बाण मिल जाय तो मैं सुलतान को मार डालूँ।

---

१ (क) इक्क थान मग्गा जनम्म गुरुन
नररिंद् विति ससि लग्गि रवि ॥ (वही पद्य ७६०)
(ख) इक्क दीह उप्पन्न इक्क दीह समाय क्रम ॥ (वही पद्य ९२)
यह पद्य मध्यम रूपान्तर में भी पाया जाता है।

२ पृथ्वीराज रासो बानवेध प्रस्ताव। यह कथा चारों रूपान्तरों में पायी जाती है पर मध्यम रूपान्तर की लन्दन की संवत् १६६२ की प्राचीन प्रति में तथा और भी दो-एक प्रतियों में यह अंश नहीं है। रासो के कथन के अनुसार भी बानवेध प्रस्ताव चंद का नहीं किन्तु जल्ह की रचना है।

इस पर मन्त्री ने उत्तर दिया कि मैं प्रयत्न करूँगा। उसने राजा को धनुष बाण ला ला दिये पर सुलतान को सावधान कर दिया और सुलतान के स्थान पर लोहे का पुतला धरवा दिया। राजा ने बाण से पुतले के दो टुकड़े कर दिये। साथ ही उसे मालूम हो गया कि सुलतान मारा नहीं गया। इसके बाद सुलतान ने पृथ्वीराज को पत्थरों की मार से मरवा दिया।

इन दोनों ही जनश्रुतियों में चंद का नाम नहीं है। प्रबंधों के अनुसार तो चंद पृथ्वीराज को बहुत पहले ही छोड़कर चला गया था।

कान्हड़दे प्रबन्ध के अनुसार जिसका रचनाकाल सं १५१२ है राजा पृथ्वीराज का चित्तविकार हुआ। रानी ने उस [illegible] में [illegible] प्रधानों को मरवा डाला। उसका राज्य चला गया। वह सुलतान के द्वारा घग्घर नदी के तीर पर मारा गया। तब उसकी रानी पद्मावती अयोध्या में सती हुई।[1]

सुर्जन चरित (रचनाकाल सं० १६३५) के अनुसार सुलतान पृथ्वीराज को पकड़कर गजनी ले गया और वहाँ उसे अंधा बना दिया। उसके पश्चात् चंद पृथ्वी पर घूमता घामता गजनी पहुँचा। वहाँ वह सुलतान को पृथ्वीराज की बाण विद्या का चमत्कार देखने के लिए राजी कर लेता है। उसका षड्यन्त्र सफल होता है और सुलतान मारा जाता है। तब चंद पृथ्वीराज को पीठ पर चढ़ाकर कुरजांगल देश में ले आता है। वहाँ पृथ्वीराज अपने देश को लोक में पाकर स्वर्गवासी होता है।[2]

(ख) जल्ह

पृथ्वीराज रासो के अनुसार चंद के दस पुत्र तथा एक पुत्री इस प्रकार ग्यारह संतानें थीं। पुत्रों में एक का नाम जल्ह था। गजनी जाते समय चंद रासो के ग्रंथ को जल्ह को दे गया था। जल्ह ने उसकी पूर्ति की। बानबेध और रैनसी ये दो खण्ड जल्ह की रचना हैं। एक दूसरे मत के अनुसार अंतिम दस खण्ड जल्ह के लिखे हुए हैं।

जल्ह के विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं। पर जैसा कि ऊपर कहा गया है पुरातन प्रबंध संग्रह में जयचंद्र प्रबंध में दिये गये जयचंद्र के संबंध के दो पद्यों

---

1 कान्हड़दे प्रबंध तृतीय खण्ड पद्य २०१ से २०४।

2 सुर्जन चरित सर्ग १० तथा सर्ग ११।

3 जल्हन जिनराज गुन साज करि चंद छन्द-सायर तिरन।
अप्प्यौ सु हित रासौ मरम चल्यौ अप्प राजन चरन॥
— बानबेध खण्ड पद्य ८३
पुस्तक जल्हन हथ्थ दे चलि गज्जन नृप कज्ज।
—बानबेध खण्ड पद्य ८५

म जल्ह का नाम आता है। प्रबंध म उनका च" का रचना बताया गया है पर पृथ्वीराज प्रबध म आय हुए पद्या म जहा चद का नाम आया है वहा इनम चद का नाम नही है प्रत्युत ा्ह का नाम है। हमारी सम्मति म य पद्य चद की नहा ति तु जल्ह की रचना है। इन ा म स एक पद्य विकृत रूप म रासा क वृह" रूपातर क कानवध मण्ड म आया है आ रासा क अनुसार भी जल्ह की रचना है।

इस प्रकार प्रबन्धा म जल्ह का अस्तित्व ता सिद्ध हाता है पर च" स उसका क्या सबध था इसका पता नहा चलता।

रासा म लिखा है कि पृथ्वीराज की बहन पृथाबाई का विवाह चित्तौड क रावल समरसी स हुआ तब समरसी न दूपावन्त वद्य क साथ जल्ह का भी माग लिया था और अपन साथ मवाड ले गय थ।

(ग) चद के वशज

च" क वशजा क सबध म भी अनक किवदन्तिया हैं। कहा जाता है कि च" क पुत्र जल्ह क वशज मवाड म अभी तक विद्यमान हैं। वहाँ का रानौरा राय वश जल्ह का सतान बताया जाता है।[१]

नागौर (आर जाधपुर) क नानूराम भट्ट न ा अपन का चद का वशज कहता था टाक" हरप्रसाद शास्त्री का बताया था कि च" क चार पुत्र थे जिनम स एक क सबध म कुछ भी ज्ञात नहा दूसरा मुसलमान हो गया[२] तीसर के वशज अमरौरा म बस गय और चौथा जल्ह था जिसका वश नागौर म है। महाकवि सूरदास का जन्म इसी वश म हुआ।[३]

महाकवि सूरदास साहित्य म उनका च" का वशज कहा गया है पर उसक अनुसार सूर जल्ह क वश म नहा किन्तु गुणचन्द क वश म हुए थ।[४]

करौली क राजा गापालसिंह (१७८१ १८१८) क आश्रित जगन्नाथ कवि

---

१ श्यामसुन्दरदास च" वरदाया (द्वितीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन काय विवरण, भाग २ लखमाला पृष्ठ १३६)।

२ पटाना की एक शाखा का नाम वरदाया है। कहा जाता है कि य च" की सतान हैं जिनक पूर्वज बलपूर्वक मुसलमान बना लिए गए थ।

३ हरप्रसाद शास्त्री *Preliminary Report on the Operation in Search of Bardic Chronicles* पृष्ठ २५।

४ वशावली क बाकी नाम प्राय समान हैं। भविष्य-पुराण म भी सूरदास का च" का वशज बताया गया है—

सूरदास इति चय कृष्णलीलाकर कवि।
चमुद् क चन्द्र भट्टस्य कुल जाता हरि प्रिय॥

इस पर मन्त्री ने उत्तर दिया कि मैं प्रयत्न करूंगा। उसने राजा को धनुष बाण ला दिया पर सुलतान को सावधान कर दिया और सुलतान के स्थान पर लोहे का पुतला धरवा दिया। राजा ने बाण से पुतले के दो टुकड़े कर दिये। साथ ही उसे मालूम हो गया कि सुलतान मारा नहीं गया। इसके बाद सुलतान ने पृथ्वीराज को पत्थरों की मार से मरवा दिया।

ऐसे दोनों ही जनश्रुतियों में चंद का नाम नहीं है। प्रबन्धों के अनुसार तो चंद पृथ्वीराज का बचपन पहले ही छोड़कर चला गया था।

कान्हडदे प्रबन्ध के अनुसार जिसका रचनाकाल सं० १५१२ है राजा पृथ्वीराज का चित्तविकार हुआ। रानी ने उसे वश में करके प्रधानों को मरवा डाला। उसका राज्य चला गया। वह सुलतान के द्वारा घग्घर नदी के तीर पर मारा गया। तब उसकी रानी पद्मावती अयोध्या में सती हुई।[१]

सुरजन चरित (रचनाकाल सं० १६३८) के अनुसार सुलतान पृथ्वीराज को पकड़कर गजनी ले गया और वहां उसे अंधा बना दिया। उसके पश्चात् चंद पृथ्वी पर घूमता घामता गजनी पहुंचा। वहां वह सुलतान को पृथ्वीराज का बाण विद्या का चमत्कार देखने के लिए राजी कर लेता है। उसका षडयन्त्र सफल होता है और सुलतान मारा जाता है। तब चंद पृथ्वीराज को घोड़े पर चढ़ाकर कुरुजांगल देश में ले आता है। जहां पृथ्वीराज अपने यश को लोक में फैलाकर स्वर्गवासी होता है।[२]

(ग) जल्ह

पृथ्वीराज रासो के अनुसार चंद के दस पुत्र तथा एक पुत्री इस प्रकार ग्यारह संतानें थीं। पुत्रों में एक का नाम जल्ह था। गजनी जाते समय चंद रासो के ग्रन्थ को जल्ह को दे गया था।[३] जल्ह ने उसकी पूर्ति की। बानबध और रैनसी ये दो खण्ड जल्ह की रचना है। एक दूसरे मत के अनुसार अंतिम दस खण्ड जल्ह के लिखे हुए हैं।

जल्ह के विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं। पर जैसा कि ऊपर कहा गया है पुरातन प्रबन्ध संग्रह के जयचंद्र प्रबन्ध में दिये गये जयचंद्र के संबंध के दो पद्यों

---

१ कान्हडदे प्रबन्ध तृतीय खण्ड पद्य २०१ से २०८।

२ सुरजन चरित सर्ग १० तथा सर्ग ११।

३ जल्हा जिहाज गुन साज करि चंद छंद सायर तिरन।
  जप्यौ सु हित रासौ सरस चल्यौ अप्प राजन चरन॥
  —बानबध खण्ड, पद्य ८३

पुस्तक जल्हन हत्थ दै चलि गज्जन नृप कज्ज।
  —बानबध खण्ड पद्य ८५

म जल्ह का नाम आता है। प्रबध म उनका चद का रचना बताया गया है पर पृथ्वीराज प्रबध म आय हुए पद्य म जहा चद का नाम आया है वहा इनम चद का नाम नही है प्रत्युत जल्ह का नाम है। हमारा सम्मति म य पद्य चद का नहा किंतु जल्ह की रचना है। इन दो म स एक पद्य विकृत रूप म रासो क वृहत् रूपातर क बानवध-खण्ड म आया है जो रासो क अनुसार भी जल्ह का रचना है।

इस प्रकार प्रबधो म जल्ह का अस्तित्व तो सिद्ध होता है पर चद स उसका क्या सबध था इसका पता नहा चलता।

रासो म लिखा है कि पृथ्वीराज की बहन पृथाबाई का विवाह चित्तौड़ क रावल समरसी स हुआ तब समरसी न दहायचा वद्य क साथ जल्ह को भी माग लिया था और अपन साथ मवाड़ ल गय थ।

(ग) चद के वशज

चद क वशजो क सबध म भी अनक किवदन्तिया ह। कहा जाता है कि चद क पुत्र जल्ह क वशज मवाड़ म अभी तक विद्यमान ह। वहा का गनीराम वश जल्ह की सतान बताया जाता है।[1]

नागौर (और जोधपुर) क नानूराम भट्ट न जो अपन को चद का वशज कहता था शकर हरप्रसाद शास्त्री को बताया था कि चद क चार पुत्र थ जिनम स एक क सबध म कुछ भी ज्ञात नहीं दूसरा मुसलमान हो गया तीसरा क वशज अमरकोट म बस गय और चौथा जल्ह था जिसका वश ——— म है। महाकवि सूरदास का जन्म इसी वश म हुआ।

महाकवि सूरदास बाद म उनको चद का वशज कहा ——— अनुमार सूर जल्ह क वश म नही किंतु गुणराज क वश म ———।

कनौजी क राजा भगवतसिंह (१७८१ १८) क ——— ———

---

[1] श्यामसुन्दरदास चद वरदाया (हिन्दी ——— विवरण भाग २ नागरी पृष्ठ) ।

[2] पटाला की पत्र नागरी का नाम ——— सतान है जिसक पुरा ———

[3] हरप्रसाद शास्त्री *Preliminary Report ... Bardic Chronicles* पृष्ठ ।

[4] बद्यावली क बाबा नाम ——— चद का वशज बनाया ———

सूरदास ——— ———

शाहदूर क ——— ———

न वृत्तविलास नामक ग्रंथ म अपने को चद का वशज लिखा है। उसके कथनानुसार चद के वश म मयागम हुआ जिस पर सम्राट अकबर ने कृपा की थी। उसी के वश म जदुनाथ हुआ।

(घ) चद की कृतिया

चद पृथ्वीराज रासो क कर्ता क रूप म प्रसिद्ध है। पृथ्वीराज रासो के अतिरिक्त कुछ और रचनाए भी चद क नाम स मिलती है। उनको भी पृथ्वीराजरासो क ही भाग बताया गया है। उनके नाम इस प्रकार है—

(१) **महोबा को समयो**—यह रासो का वृहद् रूपान्तर की किसी किसी प्रति म पाया जाता है। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित रासो के सपादको न इस सम्मिलित रचना मानकर रासो क अत म छापा है। इसकी स्वतन्त्र प्रतियाँ भी मिलती हैं।

(२) **महोबा खण्ड**—इसका विषय तो वही है जो ऊपर वाली रचना का है पर है यह उसस भिन्न और विस्तार म उससे बहुत कम है। इसे परमाल रासो क नाम स नागरी प्रचारिणी सभा न प्रकाशित किया है।

(३) **कनवज खण्ड**—रासो के वृहद रूपातर क एक प्रस्ताव का नाम कनवज खण्ड है। पर यह कनवज खण्ड उसस सर्वथा भिन्न है। यह भी बहुत बडी रचना है।[1]

(४) **पीर खण्ड या अजमेर खण्ड**—इसम अजमेर क पीरो और पृथ्वीराज के सामन्तो के युद्ध का वर्णन है।

इनके अतिरिक्त कुछ और भी (रासो क) खण्ड स्तुतिया और भविष्य वाणिया चद के नाम स प्रसिद्ध है।[2]

---

[1] नबर २ और ३ की हस्तलिखित प्रति कलकत्ते की बगाल एशियाटिक सोसाइटी क पुस्तकालय म विद्यमान है।

[2] ऐसी एक भविष्यवाणी टाड राजस्थान क बलदेवप्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित और वेकटेश्वर प्रेस बम्बई द्वारा प्रकाशित संस्करण क प्रथम भाग के अध्याय ८ म दी गयी है। वहाँ उसे पृथ्वीराजरासो का अग बताया गया है पर नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित रासो के संस्करण म वह नहीं पायी जाती। उसम बताया गया है कि पृथ्वीराज की पराजय होगी और मुसलमानो का राज्य होगा। मुसलमान दो सौ वर्ष राज्य करेंगे फिर चकत्ता (मुगल) आवेंगे। फिर दक्षिण स दक्खिनियो का दल आवेगा। फिर टोपी का राज्य होगा। उनम नारी राजा होगी। व धर्मराज्य की स्थापना करेंगे। उनके पापो का घडा पूरा होने पर कापुर और कनवज के दल तथा नागो का अधिकार होगा। फिर सीसोदियो का राज्य होगा।

ये सभी बहुत पीछे की रचनाएँ हैं। रासो की भाँति ही ये इतिहास विरुद्ध बातों से भरी हैं। इनमें से किसी को चंद की रचना स्वीकार नहीं किया जा सकता।

(ङ) क्या चंद रासो का कर्ता है ?

चंद ने रासो लिखा था इसके पक्ष में नीचे लिखी युक्तियाँ दी जा सकती हैं या दी गयी हैं—

(१) यह अनुश्रुति बहुत गहरी और दीर्घकालीन है कि चंद ने रासो लिखा था। इसकी सहज ही अवहेलना नहीं की जा सकती।

(२) जैन प्रबंधों में आये हुए पद्यों से सूचित होता है कि चंद ने रासो लिखा होगा। कुछ विद्वान इन्हें फुटकर पद्य मानकर इस सिद्धांत का निराकरण

तब अजमेर का पीर जागेगा। फिर तोमर दिल्ली पर अधिकार करेंगे। उनके पश्चात् राठौड़ दिल्ली में आवेंगे और धर्मराज्य करेंगे।

स्पष्ट ही यह भविष्यवाणी विक्रमारिया के शासन काल की रचना है। मूल भविष्यवाणी इस प्रकार है—

रण राग बामन बदृय । घन घोर मोर प्रगटृय ॥
मुनि अलष बार न जग्गय । सिर पवर ऊधिम पग्गय ॥
सवा असी गज मज्जय । पिक्राम चौडिय गज्जय ॥
दस गज सु न्ल परमानय । तहि गुफा सुनौ ज मानय ॥
कनक मुद्रा धारय । मुख सभु सभु उचारय ॥
कर लग खप्पर गग्गय । मुख सभु सभू भाग्गय ॥
पृथिराज कीन्ह प्रणामय । बोल्यो न बीरम तामय ॥
तहा रेव राजन समरसी । दिध्यौ न जामन रघुवंसी ॥
पूछन चंद सु कीनिय । कहो हानहार सु बध्धिय ॥
यह हानहार स हायहै । दिल्ली न थिरता मायहै ॥
पुनि मलेच्छ दल बल आरहै । कर सहर दिल्ली लारहै ॥
पृथिराज युद्ध न जीतहै । रण समय गरल जीतहै ॥
सामन्त्राग गुरगामहा । कर परहि भारत कामहा ॥
पृथिराज बधहि पारसी । गर साम त्रिपनि बिहावही ॥
नृप साह चक्र रतानय । गढ़ गज्ज ठौर सु लीनय ॥
गाजी सु दिल्ली आनय । पुनि करत हिंदुसथानय ॥
निहि दुम दक्ख भाजय । अति आरम्भ स माजय ॥
करत ग कम्मा दाय म । ता पीछे नवना आवस ॥
हिन्दवान दल भगावही । नृप घर घरहि थिय पावही ॥
दसनार सू दर आवहा । जिहि तन्त जिन्निन पावहा ॥
ता पीछे टोरा आवहा । बहु रम्भ कनम चलावहा ॥
नारी सु राजा वज्जमा । हिंदू तुरक सब भज्जमी ॥
रहि तमन जिन्निय आवहा । नृप घर घरहि सुख पावहा ॥

न किसी ग्रंथ की रचना की थी। कमास वाली घटना के पश्चात वह पृथ्वीराज के आश्रय को छोड़कर चला गया था। रासो की इन प्रमुख घटनाओं संयोगिता हरण और गोरी के साथ की लड़ाई है। रासो स्वयं रासो के अनुसार कमास वाली घटना के पश्चात घटित हुई। रासो में संयोगिता हरण की घटना में चन्द का उपस्थित रहना लिखा है और गोरी वाली लड़ाई के पश्चात् उसका पृथ्वीराज के लिए गजनी जाना लिखा है। जब चन्द पृथ्वीराज के यहाँ था ही नहीं तो ये बातें कैसे संभव हो सकती हैं? और जब वह अपमानित होकर गया था तब उसने पृथ्वीराज रासो क्यों और किस प्रकार लिखा होगा?

रासो का कमास वाला प्रसंग भी पृथ्वीराज प्रबन्ध से मेल नहीं खाता। प्रबन्ध के अनुसार राजा ने कमास को मार डालने का प्रयास किया पर उसमें वह असफल रहा और दूसरे दिन उसे पदच्युत करके निकाल दिया। रासो के अनुसार कैमास मार डाला गया था। इस प्रबन्ध के तथा जयचंद्र प्रबन्ध के अन्यान्य प्रसंग भी रासो से मेल नहीं खाते।

(३) अब इन प्रबन्धों में आये हुए पद्यों को लीजिये। श्री दशरथ शर्मा का यह कहना ठीक नहीं है कि ये पद्य रासो के हर एक रूपान्तर में पाये जाते हैं। केवल पृथ्वीराज प्रबन्ध का पहला पद्य चारों रूपान्तरों में मिलता है। बाकी तीन पद्य वृहद् रूपान्तर को छोड़कर किसी भी रूपान्तर में नहीं पाये जाते। अन्तिम पद्य तो वृहद् रूपान्तर में भी नहीं है। जयचन्द प्रबन्ध वाला पद्य वास्तव में चन्द का है भी नहीं, वह तो स्पष्ट ही जल्ह कवि की रचना है।

शर्मा जी का यह कहना भी ठीक नहीं कि ये आख्यान-कारों के पद्य हैं इसलिए फुटकर पद्य नहीं हो सकते। ये किसी आख्यान के भाग हैं और आख्यान चाहे कोई हो, यह मानने में तो किसी को आपत्ति नहीं हो सकती पर इससे निष्कर्ष यह निकालना भी आवश्यक नहीं कि ये किसी आख्यान-काव्य के भाग ही हों जैसा शर्माजी के कहने का अभिप्राय है। कवियों के विशेषतः राजस्थान के रसिया के ऐसे सैकड़ों पद्य मिलते हैं जो आख्यान वाले हैं जिनसे अन्य आख्यान जान लिया जाता समझा जा सकता पर वे किसी आख्यान-काव्य के भाग नहीं हैं।[1] स्वयं जैन प्रबन्ध संग्रहों में ऐसे अनेक पद्य विद्यमान हैं।

[1] उदाहरणार्थ – (१) बापा मन कर उतावलो [illegible] है केराण।
पकण बापा फिर कहाँ सुरग सजावा प्राण॥
(२) [illegible] बड़े गापाळगा सांथां हाथ मेल्ह।
पतसाहा घर मोडकर आयो नै अमरेस॥
( ) मौर बुराव घात्र [illegible] आयो सगा।
बाग [illegible] मारणा [illegible] अभळगा॥

बात यह है कि चंद (और जल्ह) के पद्य लोगों में काफी प्रचलित होंगे, कम-से-कम भट्ट लोग उनसे अवश्य परिचित रहे होंगे और जब चंद और जल्ह के नाम से रासो की रचना करने बैठे तो उपयुक्त स्थानों पर उनको डाल दिया होगा। ध्यान रहे कि जल्ह वाला पद्य रैणसी समय में डाला गया है जो जल्ह की रचना माना जाता है। जल्ह के दूसरे पद्य के लिए उनको उपयुक्त स्थान नहीं मिला, फलतः वह चारों में से एक भी रूपांतर में नहीं पाया जाता।

(४) जिन छंदों की भाषा बिना छंद को हानि पहुँचाये अपभ्रंश में परिवर्तित हो जाय उनके संबंध में यह कहना अयुक्त नहीं कि वे शुद्ध अपभ्रंश से विकृत हुए होंगे। भाषा की प्राचीनता की परख का यह एक महत्वपूर्ण साधन है पर साथ ही यह भी कहना पड़ता है कि एकदम निर्भ्रांत साधन नहीं है। कभी-कभी बहुत पीछे की रचनाएँ भी इस प्रकार बिना छंद को हानि पहुँचाये परिवर्तित हो जाती हैं। शर्माजी अनेक स्थलों पर परिवर्तन करने में सफल नहीं हुए हैं—छंद की गति या लय को बराबर हानि पहुँचती है, कई स्थानों पर तो उन्हें शब्दों का क्रम भी बदलना पड़ा है।

(५) मुनि कांतिसागर वाली प्रति के विषय में यही कहा जा सकता है कि उसका अस्तित्व असिद्ध है। मुनिजी के सिवाय और किसी ने उसके दर्शन नहीं किये हैं। उसका अस्तित्व सिद्ध भी हो तो भी वह सत्रहवीं अठारहवीं शताब्दी के पूर्व की नहीं हो सकती क्योंकि मुनिजी के ही कथन के अनुसार उसमें उसी लिपिकार के हाथ का लिखा हुआ सुरजन चरित भी है जो संवत् १६३५ की रचना है और उसके साथ कांगड़ा कलम के चित्र हैं जिसका आरम्भ अठारहवीं शताब्दी के लगभग हुआ था।

(६) जैसा कि ऊपर कहा गया है रासो का उद्देश्य निश्चित राजवंशों का प्राचीन सिद्ध करना था। चंद का नाम नहीं लिया जाता तो नयी रचना को प्रामाणिक कौन मानता? रासो को किसी एक ही व्यक्ति ने एक ही साथ नहीं लिखा। धीरे धीरे उसकी रचना होती रही। रासो के छोटे रूपांतर कोई बहुत बड़े कार्य नहीं कहे जा सकते। वे रूपांतर तो स्पष्ट ही बाद की रचनाएँ हैं। अपनी रचना को प्रामाणिक बनाने के लिए उसे प्राचीन कवि के नाम से चला देना भारतीय साहित्य के इतिहास में कोई नयी बात नहीं है। ज्योतिर्विदाभरण का उदाहरण श्री गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने दिया ही है। कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के संग्रहालय में लगभग उतना ही बड़ा एक दूसरा पृथ्वीराज रासो है जिसको चंद की रचना बताया

गया है। स्पष्ट ही भाटों व कवियों ने यह रचना की है और चंद के नाम से प्रसिद्ध की है।

निम्नलिखित बातों को देखते हुए चंद ने रासो लिखा था यह किसी प्रकार संभव नहीं जान पड़ता—

(१) रासो के चारों रूपांतर इतिहास विरुद्ध बातों से भरे हैं। काव्य के नायक के जीवन की प्रमुख घटनाएँ तक इतिहास के विरुद्ध पड़ती हैं। उसके दादा, माता और पुत्र तक के नाम अशुद्ध हैं। किसी भी समकालीन कवि की रचना में ऐसी अशुद्धियाँ असंभव हैं।

(२) चौहान वंश से घनिष्ठ संबंध रखने वाले पृथ्वीराज विजय, हम्मीरचरित, सुरजन चरित, कान्हडदेप्रबंध आदि किसी ग्रंथ में चंद या रासो ग्रंथ का उल्लेख नहीं मिलता और न उनके वर्णन ही रासो से मेल खाते हैं।

(३) मेवाड़ के महाराणा कुंभा ने सं० १५१७ में कुंभलगढ़ के कुंभस्वामी के मंदिर में पाँच बड़ी-बड़ी शिलाओं पर जो प्रशस्ति खुदवायी थी उसमें समरसिंह के वर्णन में पृथाबाई, पृथ्वीराज आदि का तथा चंद या उसके रासो का कोई उल्लेख नहीं।

(४) सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक इस काल का एक भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उल्लेख नहीं मिलता कि चंद ने रासो काव्य की रचना की थी।

(५) रासो के सभी रूपान्तरों की भाषा तेरहवीं शताब्दी की भाषा से सर्वथा भिन्न है। वह सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दियों में ब्रह्मभट्टों द्वारा प्रयुक्त भाषा है। बीसवीं शताब्दी के चारण महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपने वंश भास्कर में ऐसी ही भाषा का प्रयोग किया है।

जान पड़ता है कि इतिहास प्रेमी सम्राट अकबर ने जब अबुलफजल आदि को इतिहास ग्रंथ लिखने का आदेश दिया तब राजपूत राजाओं को भी आज्ञा दी कि वे अपना अपना इतिहास उपस्थित करें। तब राजाओं को अपनी अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने की भी पड़ी। उन्होंने भाटों की और कवियों की शरण पकड़ी। फलतः रासो और सुरजन चरित जैसे ग्रंथ अस्तित्व में आये। चंद का नाम प्रसिद्ध था। उस समय तक पृथ्वीराज और उसके पूर्वजों के संबंध में अनेक झूठी-सच्ची अनुश्रुतियाँ प्रचलित हो चुकी थीं जैसा कि जैन प्रबंधों में संगृहीत अनुश्रुतियों से प्रतीत होता है। भाटों ने उनसे लाभ उठाया और चंद के नाम से रचनाएँ लाकर रख दीं। ये ही रचनाएँ रासो नाम से संगृहीत हुईं। इनमें विविध राजवंशों का संबंध पृथ्वीराज एवं

उनके सामन्तो के साथ दिखाया गया। राठौडा का सबध जयचद स स्थापित किया गया।[1]

मुगल साम्राज्य स सपर्क होने पर मेवाड म महाराणा जगतसिह और राजसिह क आश्रय म रासो का नये सिरे से सग्रह आरम्भ हुआ और नयी नयी रचनाए आने लगी। मेवाड मे रासो सग्रह का यह काय महाराणा अमरसिह द्वितीय क काल म पूरा हुआ।

जैन विद्वान् साहित्य के महान प्रेमी थे। वे साहित्य का निर्माण ही नही करते थ उसका सग्रह भी करते थे। उनके सग्रहो म ग्रथ बडी सभाल के

---

[1] (क) Abul Fazl in several places in his work speaks in enthusiastic terms of the keen interest which Akbar took in matters historical and in the xxii chapter in his second volume explicitly tells us that in the nineteenth year of his reign (1574 a d) Akbar established a record office The example of the Emperor must have been contagious for the Rajput Princes who for the particular reasons pointed above were at that time equally interested in historical pursuits —L P Tessitori *Progress Report of Bardic & Historical Survey of Rajasthan for* 1917 Appendix I Page 27

(ख) It is natural that there before an Emperor who was ever ready to lend an interested and benevolent ear to the stories beliefs and disputes of his subjects the Princes of Rajputana brought all their mutual rivalries and their controversies about pre eminence and seniority and each tried to back his claims with pedegrees of his family and with such stories as tended to add prestige to it In doing so they served a double purpose asserting their right to a conspicuous position among their fellow Princes and commanding more consideration from the Emperor It was thus a spirit of emulation and ambition that awoke in the Rajput Princes who gathered at the Imperial Court an interest in historical matters Such an interest never existed before when the Princes living within the ramparts of their cities were satisfied with the penegyrics of their bards and the flatteries of their parasites and never seemed to care much about their remote ancestors nor to inquire where they came from But now they began to inquire into the origins of their family to refresh the memory of their ancestors and the traditions concerning them and to complete their pedegrees with long lines of *Pauranika* names linking their progenitors with Ramacandra Krsna and other illustrious personages of world wide fame It was at this time that the Rathodas connected their origins with the Gaharwalas of Kanauj —*Ibid* pages 25 26

साथ रख जाते थे। उनकी इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप जैन भंडारों में अनेक ऐसे प्राचीन ग्रंथ सुरक्षित रह गये जो अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं। रासो-ग्रंथ की प्रसिद्धि के साथ जैनों ने उसका भी संग्रह किया। अवश्य ही इसके लिए उन्होंने भाटों से सहायता ली होगी। इस प्रकार जैन संग्रहालयों में रासो के लघु और मध्यम रूपान्तरों की अनेक प्रतियाँ सुरक्षित रह गयी हैं।

(ग) कहते हैं कि बादशाह अकबर को इतिहास लिखाने का बड़ा प्रेम था और उसकी आज्ञानुसार उसके प्रधानमंत्री अबुलफजल ने राजपूत वंशों का हाल लिखना आरम्भ कर प्रत्येक राजवंशी राजा को अपनी वंश-परम्परा का इतिहास उपस्थित करने को कहा। राजा-महाराजा तो उसको बिलकुल भूले हुए थे। उन्होंने अपने-अपने बड़वे व चारण भाटों को ताकीद की कि हमारी ख्यातें उत्पत्ति से आज तक की लिखवाओ। परन्तु जब वे स्वयं ही अजान थे तो बतलाते क्या? उस वक्त कुछ तो वंश-परम्परागत दंतकथाओं, जनश्रुतियों और किस्से-कहानियों के आधार पर और विशेष कल्पित बातें लिखकर दे दी गयीं। आईने अकबरी में दी हुई वंशावलियाँ भी ऐसी-सी ही हैं। (रामनारायण दूगड़ द्वारा अनुवादित मुहणोत नैणसी की ख्यात खंड १, पृष्ठ १६ पर सम्पादकीय पाद टिप्पणी)

४

पृथ्वीराज-रासो के रूपान्तर

(क) चार रूपान्तर

रासो के चार रूपान्तर उपलब्ध हुए हैं, जिनको वृहद्, मध्यम, लघु और लघुतम नाम दिये जा सकते हैं—

(१) वृहद् रूपान्तर

इस रूपान्तर की प्रतियाँ प्रधानतया उदयपुर राज्य में मिली हैं। अन्यत्र भी कहीं-कहीं पूर्ण अथवा अपूर्ण प्रतियाँ देखने में आती हैं। काशी की नागरी प्रचारिणी सभा में संवत् १६४० या १६४२ की जो प्रति बतायी जाती है वह इसी रूपान्तर की है।[1] बंगाल एशियाटिक सोसाइटी तथा सभा द्वारा प्रकाशित संस्करण भी इसी रूपान्तर के हैं।

इस रूपान्तर की श्लोक-संख्या (ग्रन्थाग्रन्थ) लगभग ३०,००० है और रूपक संख्या लगभग १२,०००।[2] इसमें अध्यायों को प्रस्ताव कहा गया है, कहीं-कहीं समय (समयो, सम्यौ) भी। सभा द्वारा मुद्रित संस्करण में शीर्षकों

---

[1] इस प्रति का संवत् (१६४०) अशुद्ध पढ़ा गया है। हमारी सम्मति में उसे १७८० पढ़ना चाहिए। श्री मोतीलाल मेनारिया इस प्रति को १८७६ का बताते हैं पर उनका कथन ठीक नहीं है। वृहद् रूपान्तर की अन्यान्य प्राचीन प्रतियों के समान इसमें भी ६९ खण्ड हैं और प्रत्येक दृष्टि से उनके साथ इसकी समानता है। अतः इसका लिपि-काल महाराणा अमरसिंह की १७६० वाली प्रति के पूर्व ही होना चाहिए। मेनारियाजी ने संभवतः किसी दूसरी प्रति को देखा है। श्री अगरचन्द नाहटा ने इस प्रति को देखा है। उनके अनुसार १ ८ और ० के अंक तो स्पष्ट हैं पर ६ का अंक संदिग्ध है। उनकी सम्मति में भी वह ७ ही होना चाहिए।

[2] विभिन्न प्रतियों में विभिन्न संख्याएँ दी हैं। ग्रन्थ-संख्या जहाँ एक प्रति में २०,७०६ दी गयी है, वहाँ दूसरी प्रति में ८१,००० के लगभग बतायी गयी है। इन दोनों ही प्रतियों में खण्ड-संख्या ६९ है।

में प्रायः समय का, और पुष्पिकाओं में प्रस्ताव का प्रयोग हुआ है। प्राचीनतम प्रतियों में प्रस्तावों की संपूर्ण संख्या ६५ है। महाराणा अमरसिंह द्वितीय वाली प्रति में ६९ प्रस्ताव हैं।[1] मुद्रित प्रति में प्रस्ताव संख्या ६८ है।[2] मुद्रित प्रति के अन्त में परिशिष्ट रूप में छपा हुआ महोबा समय रासो की किसी प्राचीन प्रति में नहीं मिलता।

वृहद् रूपान्तर के संग्रह (अर्थात् संग्रह और परिवर्धन) का कार्य उदयपुर के महाराणाओं के आश्रय में महाराणा जगतसिंह के राज्य-काल (सं. १६८४ से १७०९) में हुआ। महाराणा अमरसिंह द्वितीय के राज्यकाल (सं. १७५६ से १७६७) में उसे अंतिम रूप दिया गया। महाराणा अमरसिंह वाली प्रति का प्रतिलिपि-काल सं. १७६० माघ कृष्ण ६ सोमवासर है।

सरस्वती भण्डार (उदयपुर) में विद्यमान सं. १८६१ की प्रति के अन्त में निम्नलिखित पद्य आये हैं (ये पद्य कुछ और भी प्रतियों के अन्त में पाये जाते हैं)—

(१) मिलि पंचज गन उच्चरि मरद कागद कातरना।
काटि कवी का जलह कमल कटिक तें करना।।
इहि लिखि संख्या गुनित कहे कसका कवियान।
इह श्रम लखनहार भेद लेद सोइ जान।।
इन कष्ट ग्रंथ पूरन करय जन गउया दुग ना नहय।
पालिय जतन पुस्तक पवित्र लिखितलखन बिनती करय।।

(२) गुन मनियन रस पोइ चंद कवियन कर लिद्धिय।
छंद गुनी ते तुट्टि मंद कवि भिन भिन क्रिद्धिय।।
देस देस बिक्खरिय मेल गुन पार न पावय।
उद्दिम करि मेलवत आस विन आलस आवय।।
चित्रकोट रान अमरेस नृप हित श्रीमुख आयस दयौ।
गुन चीन बीन करुनाउदधि लिखि रासौ उद्दिम कियौ।।

---

1 प्राचीन प्रतियों का समरसिंह दिल्ली सहाय प्रस्ताव इस प्रति में बड़ी लड़ाई प्रस्ताव में अन्तर्भूत हो गया है और निम्नलिखित ५ प्रस्ताव बढ़ गये हैं—(१) लोहाना आजानुबाहु (२) पद्मावती (३) होली-कथा (४) दीपमाली कथा (५) पृथ्वीराज विवाह।

2 इसके प्रस्ताव महाराणा अमरसिंह वाली प्रति के अनुसार ही हैं केवल षट्ऋतु प्रस्ताव कनवज्ज प्रस्ताव के अन्तर्भूत हो गया है जैसा कि पीछे की कुछ प्रतियों में भी देखा जाता है।

श्री श्यामसुन्दरदास, अगरचन्द नाहटा आदि कई एक विद्वान् रासो के बृहद् रूपांतर का उद्धारक और संग्राहक महाराणा अमरसिंह द्वितीय (१७५५-१७६७) को नहीं किन्तु महाराणा अमरसिंह प्रथम (सं १६५३-१६७६) को मानते हैं। पर रासो के बृहद् रूपांतर की जो प्रतियाँ मिली हैं उनमें से कोई सं १७३१ के पूर्व की नहीं है। महाराणा अमरसिंह के नाम से पायी जाने वाली प्रति में लिपिकाल स्पष्ट रूप से १७६० दिया हुआ है। सं १८७९ की बाली की राजकीय प्रति के अंत में लिखा है—

"राजा रासा रा पुस्तक लिखाया थो महाराणाजी श्री श्री श्री श्री अमरसिंह जी लिखाया छ संवत १७६० रा माघ वदि ६ सोमवार रे दिन लिखाया थो जो पुस्तक घणो सुद्ध छ ज्णी पुस्तक रे प्रमाण थी हुजूर यो पुस्तक लिखायो।

श्री गंगाप्रसाद कमठान साहित्य मण्डल से प्रकाशित एवं नाथ में लिखते हैं कि सरदार उमरावसिंह के ग्रंथागार में जो रासा की प्रति है उसमें ऊपर उद्धृत द्वितीय पद्य की अंतिम दो पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

> चित्रकोट अमरा द्वितीय नृप हित श्रीमुख आयस दयौ।
> गुन निन बिन करुणा उदधि लिखि रासौ उद्दिम कियौ॥

श्री अगरचन्द नाहटा की एक प्रति में 'अमरेस नृप' के स्थान पर 'जगतेस नृप' पाठ भी मिला है जिससे यदि यह पाठ शुद्ध हो तो यही सूचित होता है कि रासो के संग्रह का कार्य महाराणा जगतसिंह (सं १६८४ से सं १७०९ तक) के काल में आरम्भ हो चुका था और अमरसिंह द्वितीय के काल में भी चालू रहा।

उदयपुर ने मुगल-सम्राट की अधीनता अमरसिंह प्रथम के काल में स्वीकार की थी। महाराणा की अनिच्छा होने पर भी सरदारों और युवराज कर्णसिंह के आग्रह से ऐसा करना पड़ा। उसी समय से वे राज्यकार्य से उदासीन हो गये और राज्य का भार उन्होंने कर्णसिंह पर छोड़ दिया। महाराणा कर्णसिंह का राज्यकाल केवल आठ वर्ष का रहा। महाराणा जगतसिंह के समय में मेवाड़ का मुगल-दरबार से संपर्क बढ़ा। वह उदार और कवियों का आश्रयदाता था। रासो की ओर भी उसका ध्यान गया। महाराणा राजसिंह ने राजसमंद का निर्माण करवाकर वहाँ २५ बड़ी-बड़ी शिलाओं पर राजप्रशस्ति नामक ऐतिहासिक महाकाव्य खुदवाया। इतिहास-संग्रह के संदर्भ में रासो के संग्रह में भी उनकी रुचि रही होगी। उक्त काव्य में रासो का भी उपयोग किया गया।

म प्राय समय का और पुष्पिकाओ म प्रस्ताव का प्रयोग हुआ है। प्राचीनतम प्रतियो म प्रस्तावो की सपूर्ण सख्या ६५ है। *महाराणा अमरसिह द्वितीय* वाली प्रति म ६६ प्रस्ताव हैं।[1] मुद्रित प्रति म प्रस्ताव सख्या ६८ है।[2] मुद्रित प्रति क अत म परिशिष्ट रूप म छपा हुआ महोबा समय रासो की किसी प्राचीन प्रति म नही मिलता।

बृहद रूपान्तर क सग्रह (अर्थात सग्रह और परिवर्धन) का काय उदयपुर क महाराणाओ क आश्रय म महाराणा जगतसिह क राज्य-काल (स १६८४ स १७०६) म हुआ। महाराणा अमरसिह द्वितीय क राज्यकाल (स १७५५ स १७६७) म उस अन्तिम रूप दिया गया। महाराणा अमरसिह वाली प्रति का प्रतिलिपि काल स १७६० माघ कृष्ण ६ सोमवासर है।

सरस्वती भण्डार (उदयपुर) म विद्यमान स १८६१ की प्रति क अत म निम्नलिखित पद्य आय है (य पद्य कुछ और भी प्रतियो के अत म पाय जात ह)—

(१) मिलि पत्रज गन उदधि वरन कागद कातरली।
काढि कवी या जलह कमन कटिक ते करला॥
इहि लिथि सख्या गुनित कहै कवा यविचार।
इह श्रम लखनहार सद और मोइ जान॥
इन कष्ट ग्रथ पूरन करय जन वड्या दुख ना लहय।
पालिय जतन पुस्तक पवित्र लिखि गावक विनती करय॥

(२) गुन मनियन रस पोह चद कविमल कर सिद्धिय।
छद गुनी त तुट्टि मद कवि भिन भिन किद्धिय॥
दस रस विरसमिय भर गुन पार न पावय।
उदिम करि मनवन जाम तिन आलय आवय॥
चित्रकोट रा अमरस पण हित श्रीमुख आयस दयो।
गुन वान वीन करुनाउदधि लिखि रासो उदिम कियो॥

---

[1] प्राचीन प्रतियो का समरसिह दिल्ली महाय प्रस्ताव इस प्रति म कन्ह पडार प्रस्ताव क अन्तर्गत हो गया है और निम्नलिखित ५ प्रस्ताव बढ गय है—(१) लाहाना आजानुबाह (२) पद्मावती (३) हाला-कथा (४) दीपावली कथा (५) पृथिराज विवाह।

[2] इसके प्रस्ताव महाराणा अमरसिह वाली प्रति क अनुसार ही है केवल धर रिलु प्रस्ताव कनवज प्रस्ताव क अन्तर्भूत हो गया है जैसा कि पाद की कुछ प्रतियो म भी देखा जाता है।

श्री न्यायसुन्दरदास, अगरचन्द नाहटा आदि कई एक विद्वान् रासो के बृहत् रूपान्तर का उद्धारक और संग्राहक महाराणा अमरसिंह द्वितीय (१७५५-१७६७) को नहीं किन्तु महाराणा अमरसिंह प्रथम (सं १६५३-१६७६) को मानते हैं। पर रासो के बृहद् रूपान्तर की जो प्रतियाँ मिली हैं उनमें से कोई सं १७२१ के पूर्व की नहीं है। महाराणा अमरसिंह के नाम से पायी जाने वाली प्रति में लिपिकाल स्पष्ट ही सं १७६० दिया हुआ है। सं १८७६ की नागरी की राजकीय प्रति के अन्त में लिखा है—

आगे रासा री पुस्तक लिखाया श्री महाराणाजी श्री श्री श्री श्री अमरसिंहजी लिखाया छे संवत १७६० रा माघ वदि ६ सोमवार रे दिन लिखाया था जो पुस्तक घणा सुद्ध छे जणी पुस्तक रे प्रमाणे श्री हजूर यो पुस्तक लिखायो।

श्री गंगाप्रसाद कमठान ने साहित्य-सन्देश में प्रकाशित एक लेख में लिखा है कि सरदार उमरावसिंह के ग्रन्थागार में जो रासो की प्रति है उसमें ऊपर उद्धृत द्वितीय पद्य की अन्तिम दो पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

चित्रकोट अमरेस द्वितीय नृप हित श्रीमुख आयस दयौ।
गुन रलि तिन करुणा उदधि लिखि रासो उद्दिम कियौ॥

श्री अगरचन्द नाहटा की एक प्रति में 'अमरेस नृप' के स्थान पर 'जगतेस नृप' पाठ भी मिला है जिससे यदि यह पाठ शुद्ध हो तो यही सूचित होता है कि रासो के संग्रह का कार्य महाराणा जगतसिंह (सं १६८४ से सं १७०६ तक) के काल में आरम्भ हो चुका था और अमरसिंह द्वितीय के काल में भी चालू रहा।

उदयपुर ने मुगल-सम्राट की अधीनता अमरसिंह प्रथम के काल में स्वीकार की थी। महाराणा की अनिच्छा होने पर भी, सरदारों और युवराज कर्णसिंह के आग्रह से सन्धि करनी पड़ी। उसी समय से वे राज्यकार्य से उदासीन हो गये और राज्य का भार उन्होंने कर्णसिंह पर छोड़ दिया। महाराणा कर्णसिंह का राज्यकाल केवल आठ वर्ष का रहा। महाराणा जगतसिंह के समय में मेवाड़ का मुगल-दरबार से सम्पर्क बढ़ा। वह उदार और कवियों का आश्रयदाता था। रासो की ओर भी उसका ध्यान गया। महाराणा राजसिंह ने राजसमुद्र का निर्माण करवाकर वहाँ २५ बड़ी-बड़ी शिलाओं पर राजप्रशस्ति नामक ऐतिहासिक महाकाव्य खुदवाया। इतिहास-संग्रह के संबंध में रासो के संग्रह में भी उनकी रुचि रही होगी। उक्त काव्य में रासो का भी उपयोग किया गया।

रासो के निर्माण का कार्य इसके पश्चात भी चालू रहा और कई एक नये खंडों की रचना हुई पर वे रासो के अंग नहीं बन पाये। उनकी स्वतन्त्र प्रतियाँ स्थान-स्थान पर पायी जाती हैं जिनकी पुष्पिकाओं में उन्हें पृथ्वीराज रासो के खंड बताया गया है। इन नये खंडों में महोबा खंड पीर खंड (अजमेर-खंड) ओरछा खंड आदि गिनाये जा सकते हैं। दो नवीन कनवज-खंड और महोबाखंड भी तैयार हुए। वीरभद्र की भविष्यवाणी भी तैयार हुई जो रासो की बहुत पीछे की कुछ प्रतियों के अंत में जोड़ी हुई मिलता है।

महाराणा अमरसिंह के पूर्व की प्राचीन प्रतियों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) गलड की प्रति—अपूर्ण केवल अंत के १२ खंड लिपि-काल सं १७३२।

(२) बीडर की प्रति—अपूर्ण केवल अंत के ५३ खंड लिपि-काल सं १७३८।

(३) नागरी प्रचारिणी सभा की प्रति—लिपि-काल सं १७६०।

(४) बाराड की प्रति—लिपि काल सं १८६६।

(५) विद्याभवन कांकरोली की प्रति—लिपिकाल १७४६ १७५०।

(६) श्री दशरथ शर्मा की प्रति—लिपि-काल नहीं दिया है।

(२) मध्यम रूपान्तर

इसकी प्रतियाँ प्रायः जैन भण्डारों में पायी गयी हैं। इसकी एक प्रति श्री अगरचन्द नाहटा के अभय जैन ग्रन्थालय में दूसरी अबोहर के साहित्य सदन के पुस्तकालय में तीसरी बीकानेर के बड़े उपासरे के बृहद् ज्ञान भण्डार में चौथी पंजाब विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में पाँचवीं उदयपुर के प्रतापसभा के पुस्तकालय में और छठी एक अपूर्ण प्रति अभय जैन-ग्रन्थालय में है। पहली में खण्डों की संख्या ६६ पाँचवीं में ६५ दूसरी में ६० तीसरी में ६२ और चौथी तथा छठी में ६१ है। पिछली दो प्रतियों में दूसरी प्रतियों का अंतिम खण्ड पृथ्वीराज हम्मीर पातिसाह मरण (बृहद् रूपान्तर का बानवध प्रस्ताव) नहीं है।

उल्लिखित पाँच प्रतियों में बृहद् रूपान्तर के कनवज-खण्ड के स्थान पर आठ खण्ड तथा बड़ी लड़ाई प्रस्ताव के स्थान पर चार खण्ड हैं। पर इस रूपान्तर की तीन ऐसी भी प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं जिनमें इन आठ और चार खण्डों के स्थान पर बृहद् रूपान्तर की भाँति एक एक खण्ड ही है। इनमें से पहली प्रति लन्दन की रायल एशियाटिक सोसाइटी में, दूसरी बीकानेर के अनूप संस्कृत पुस्तकालय में तथा तीसरी बीडर (उदयपुर) के यति माणिक्यचन्द्र के संग्रह में है। तीसरी प्रति अपूर्ण है। पृथ्वीराज हम्मीर पातिसाह मरण वाला खण्ड लन्दन वाली प्रति में भी नहीं है। अनूप संस्कृत-पुस्तकालय वाली प्रति बृहद्

॥६० श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सारदाय नमः ॥ ॥अथ [illegible] मंगलाचरन [illegible]
न्योति पटमाप रमिय विउ [illegible] नपम [illegible] पयन्न उन्यो [illegible] नरंग सारदाय [illegible] कनि [illegible]
अगरात सदर सुनय रसर मियघात [illegible] सनक व कालेय [illegible] विन [illegible] कां किय [illegible]
नामि गम [illegible] जे वेद धरि [illegible] नमाय पिंड [illegible] चक्का नरन लगे [illegible] प [illegible] रि [illegible] नाथ [illegible]
[illegible] कल्यो नामे हरि [illegible] सु फल [illegible] यह [illegible] स [illegible] मध्य [illegible] [illegible] नाथ [illegible]
[illegible] दन्न [illegible] जी [illegible] करिया कलिजाइ [illegible] [illegible] कहि [illegible] हि [illegible] गति [illegible] रिया [illegible]
[illegible] जंग [illegible] धाम [illegible] जिने नाम एक [illegible] नेक कहे [illegible] तीन [illegible] दे [illegible]
[illegible] जिने [illegible] पावन [illegible] सुन [illegible] वेद [illegible] किन [illegible] जिने [illegible] म [illegible]
पीत्रि [illegible] लो [illegible] पी [illegible] स [illegible] र [illegible] ता [illegible] जिने उत्र [illegible] र्य [illegible] र [illegible] माप्या [illegible] सु [illegible] देव [illegible]
पाय [illegible] जिने [illegible] व [illegible] सराय [illegible] पंच [illegible] नले राय [illegible] व [illegible]
[illegible] काल [illegible] मा [illegible] जिने से [illegible] [illegible] बंध [illegible] तं [illegible] मा [illegible]
[illegible] जिने [illegible] दितार [illegible] ग [illegible] गा [illegible] रि [illegible] नयेदव [illegible] क [illegible] राय [illegible] जिने केवल [illegible] कि [illegible]
[illegible] दगाय [illegible] कवी [illegible] लछ [illegible] दक [illegible] जिने [illegible] सिय [illegible] विसा [illegible] गर [illegible] कवी [illegible] कि [illegible]
[illegible] का [illegible] जिनके [illegible] कवि [illegible] दन [illegible] र [illegible] ल [illegible] कि [illegible] का [illegible]
गति [illegible] गति [illegible] [illegible] रा [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] या [illegible] कर [illegible]
[illegible] पकनो कन [illegible] राय [illegible] य [illegible] [illegible] जीव [illegible] स [illegible]

रूपान्तर से प्रभावित है। उसके अन्त में वृहद रूपान्तर के कई एक खण्ड भी लिप्त हुए हैं।

उक्त आठों प्रतियों में लन्दन वाली प्रति विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। उसका लिपि-काल सं० १६६२ है जिससे वह रासो की प्राचीनतम प्रतियों में ठहरती है।

इन विविध प्रतियों का आरम्भ एक-सा नहीं है। नाहटाजी वाली और अबोहर की प्रतियाँ लघु रूपान्तर की भाँति—

छप्पजा मद मध घ्राण लुबधा अलि भौर आच्छादिता

इस साटक पद्य से आरम्भ होती हैं जबकि ज्ञान भण्डार पंजाब, लंदन और अनूप संस्कृत पुस्तकालय की प्रतियाँ लघुतम रूपान्तर की भाँति—

प्रथम सु मंगल मत्त गुन बीय

इस वधुआ (वस्तुक छंद) पद्य से आरम्भ होती हैं। बीकानेर की प्रति का प्रारम्भिक अंश खण्डित है।

इस रूपान्तर की ग्रन्थ संख्या लगभग १०,००० श्लोक प्रमाण होती है।

(३) लघु रूपान्तर

इसकी प्रतियाँ बीकानेर तथा शेखावाटी (जयपुर राज्य) में मिलती हैं। तीन प्रतियाँ बीकानेर के अनूप संस्कृत पुस्तकालय में, एक मोतीचन्द खजानची के संग्रह में और दो अगरचन्द नाहटा के अभय जैन ग्रन्थालय में हैं। नाहटाजी वाली एक प्रति फतहपुर (शेखावाटी) में संवत् १७२८ की लिखी हुई है। अनूप संस्कृत-पुस्तकालय की एक प्रति का लिपि-काल सं० १६७९ के पूर्व का होना चाहिए। इसके अतिरिक्त लंदन की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में भी दो प्रतियाँ हैं जो सम्भवतः इस रूपान्तर की हैं।

इस रूपान्तर की श्लोक-संख्या ३,५०० और ४,००० के बीच में होनी चाहिए। इसमें १९ खण्ड हैं। इस रूपान्तर का संग्रह आमेर (जयपुर) के प्रसिद्ध महाराजा मानसिंह के छोटे भाई सूरसिंह के पुत्र चन्द्रसिंह ने करवाया था।[1] इससे ज्ञात होता है कि रासो के संग्रह-कार्य में बीकानेर के महाराजा रायसिंह ने भी विशेष रस लिया था।

---

[1] इस रूपान्तर की प्रतियों के अन्त में ये पद्य मिलते हैं—

(१) प्रथम वेद उद्धरिय बंभ मच्छह तनु किन्नउ।
दुतिय वीर वाराह धरनि उद्धरि जसु लिन्नउ॥
कौमारिक भट्टसा धम्म उद्धरि सुर सक्रियउ।
कूरम सूर नरेस हिंद हद उद्धरि रक्खियउ॥
रघुनाथ चरित हनुमंत क्रित भूप भोज उद्धरिय जिम।
प्रिथिराज सुजसु कवि चंद क्रित चन्द्रसिंह उद्धरिअ इम॥

(४) लघुतम रूपान्तर

इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं। पहली गुजरात के धारणाज गाँव में प्राप्त हुई है। यह बीकानेर के महाराजा रायसिंह के आठ भाई भाण के पुत्र भगवानदास के पठनार्थ लिखी गयी थी। इसका लिपि काल सं. १६६७ है। इस प्रकार यह रासो की सबसे प्राचीन ज्ञात प्रति ठहरती है। इस रूपान्तर की रचना संख्या लिपिकार ने १३०० दी है। यह अध्यायों या खण्डों में विभक्त नहीं है। इसमें प्रधानतया दो ही प्रसंगों का विस्तार से वर्णन है—(१) संयोगिता की कथा और (२) पृथ्वीराज और गोरी का युद्ध। यह प्रति अब मुनि श्री जिनविजयजी के पास है।

दूसरी प्रति श्री अगरचन्द नाहटा के द्वारा प्रकाश में आयी है। यह प्रति भी मुनिजी के संग्रह में है। इसका लिपि काल सं. १६६७ है।

कुछ स्थानों पर साधारण अन्तर होने पर भी दोनों प्रतियाँ विषय की दृष्टि से परस्पर बहुत समानता रखती हैं।

---

(२) महाराज निप सूर सुअ करम चंद उदार।
रासो प्रथीराज को रारयो लगि ससार॥

सूरसिंह और उसके पुत्र चंद्रसिंह (चान्दसिंह) का उल्लेख नैणसी की ख्यात में है। नैणसी लिखता है—सूरसिंघ राजा भगवानदासरा। बडो रजपूत हुवो। सीकरीरो थाट अकबर पातसाह करायो तद सूरसिंहरो डेरा काटरी नींव आयी तठ हतो सू डेरा सूरसिंघ न उठाव। तर पातसाह खान वाचा किया पिण सूरसिंघनू कयही न कह्यो। घटा आसाडसिंघ रजपूत हुवो। पातसाह अकबररे वडो चाकर हुवो। साठ राजारी वटी जमानाबाई परणायी थी जतसिंघरी वहन सू साथ वठी। कवर सूरसिंघ भगवानदासात सादम सुरतान वढ स्याळकोट हुयी तरा स्याळकोट नगरकोट न जदय बीच छ। उण ठोडसू गुजरात पण नडी छ। सादम सुरतान पातसाह हमाऊंरा पोता छै हूंदायलरा भतीजा छ असवरी क कमरारा बटो छ। तिणसू वट हुया। सूरसिंघ सादमन मारिया न सूरसिंघ कुसळ गया। चांदसिंघ सूरसिंघ रो।

नैणसी की ख्यात के हिन्दी अनुवाद में सूरसिंघ की जगह सूरजसिंह आया है। राजस्थानी भाषा में सूरज, सूर, सूजा एक-दूसरे के स्थान पर समान रूप में प्रयुक्त होते हैं।

पृथ्वीराजरासो के लघुतम रूपान्तर की प्रति नं० २ के तीन पृष्ठ

(ख) विविध रूपान्तरों के खण्डों की तालिका[1]

(१) चारों रूपान्तरों में पाये जाने वाले खण्ड[2]

इन खण्डों की संख्या १० है।[3]

(१) आदि पर्व (१)[4]
(२) दिल्ली किल्ली कथा (३)[5]
(३) अनंगपाल दिल्ली-दान (१८)[5]
(४) पंग यज्ञ विध्वंस (४६)[6]
(५) संयोगिता नेम आचरण (५०)[6]
(६) कैमास वध (५७)
(७) षट् ऋतु वर्णन (६१)[7]
(८) कनवज्ज-कथा (६२)[8]

---

[1] (क) इस तालिका में खण्डों की संख्या साधारणतया महाराणा अमरसिंह की १७६० वाली प्रति के अनुसार रखी गयी है केवल समरसी दिल्ली सहाय-खण्ड को जो इस प्रति में बड़ी लड़ाई खण्ड के अंतर्गत है प्राचीन प्रतियों के अनुसार अलग दिखाया गया है जिससे संपूर्ण खण्ड संख्या ६९ के स्थान पर ७० हो जाती है। इस में भी आखेटक चख श्राप-खण्ड को प्राचीन प्रतियों का अनुसरण करते हुए धीर-पुण्डीर-खण्ड के पीछे रखा गया है।
(ख) बड़े रूपान्तरों के जो खण्ड छोटे रूपान्तरों में भी पाये जाते हैं वे ज्यों-के-त्यों नहीं आये हैं किन्तु उत्तरोत्तर संक्षिप्त होते गये हैं, यहां तक कि कई खण्ड तो छोटे खण्डों में दो चार अथवा एकाध पद्यों के रूप में ही पाये जाते हैं। साथ ही बड़े रूपान्तरों के अनेक खण्ड छोटे रूपान्तरों में दूसरे खण्डों के अन्तर्भुक्त भी हो गये हैं। कुछ अवस्थाओं में बृहद् रूपान्तर के खण्ड छोटे रूपान्तरों में कई खण्डों में विभक्त भी हो गये हैं।

[2] लघुतम रूपान्तर खण्डों में विभक्त नहीं है अतः उसमें खण्ड नहीं हैं पर बृहद् रूपान्तर के इन खण्डों के प्रसंग उसमें किसी न किसी रूप में आये हैं।

[3] बृहद् रूपान्तर के इन १० खण्डों के स्थान पर मध्यम रूपान्तर में २० और लघु रूपान्तर में १४ खण्ड हैं।

[4] लघु रूपान्तर में यह दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम में मंगलाचरण (और दशावतार प्रसंग) तथा दूसरे में वंशावली है। दूसरे खण्ड में बृहद् रूपान्तर के दिल्ली किल्ली (३) अनंगपाल दिल्लीदान (१८) तथा धनकथा (२४) खण्डों के प्रसंग भी आ गये हैं।

[5] लघु रूपान्तर में ये प्रसंग बहुत संक्षेप में वंशावली वाले द्वितीय खण्ड में आये हैं। लघुतम रूपान्तर में इनका वर्णन और भी अधिक संक्षिप्त है।

[6] लघु रूपान्तर में ये दोनों प्रसंग एक ही खण्ड में आ गये हैं। मध्यम रूपान्तर में ये बालुकाराय-वध-खण्ड में अन्तर्भुक्त हो गये हैं।

[7] बृहद् और लघुतम रूपान्तरों में यह प्रसंग कनवज्ज-कथा के पूर्व आया है पर लघु और मध्यम रूपान्तरों में धीरपुण्डीर प्रसंग के पश्चात्। मध्यम रूपान्तर में यह स्वतन्त्र खण्ड है पर लघु रूपान्तर में धीरपुण्डीर प्रसंग वाले खण्ड का अंश है।

[8] मध्यम रूपान्तर में यह छह आठ खण्डों में विभक्त है और लघु रूपान्तर में दो खण्डों में।

(ग) चारों रूपांतरों के खंडों की तुलनात्मक तालिका

बृहद् रूपांतर		मध्यम रूपांतर		लघु रूपांतर		लघुतम रूपांतर	विशेष विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम	प्रसंग है या नहीं	
१	आदि पर्व	१	आदि प्रबंध मंगलाचरण वंशावली अग्निकुण्ड कथा वंशावली राजा जन्म कथा	१ २	मंगलाचरण दशावतार वंश-उत्पत्ति द्रव्यलाभ दिल्ली राज्याभिषेक	✓ ✗ ✓ ✓ ✓ ✗	मध्यम रूपा० की १७९२ की प्रति में खंड १ के स्थान पर दो खंड हैं लघु रूपांतर में यह प्रसंग खंड १ में आया है
२	दशावतार वर्णन	२	दशावतार वर्णन	[१]	दशावतार	✗	
३	दिल्ली किल्ली वर्णन	३	राजा स्वप्न कथा किल्ली ढिल्ली कथा	[२]	[उल्लेखमात्र] ✗	[उल्लेख मात्र] ✗	
४	नाहाना आजानुबाहु	✓	✓	✗	✗	✗	मध्यम रूपा० की १७९२ की प्रति में है
५	कन्ह अन्ध पट्ट बंधन	✗	✓	✗	✗	✗	
६	आखेटक बाग वरनन वर्णन	✗	✗	✗	✗		

बृहद् रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम	प्रसंग है या नहीं	
७	नागरराज कथा वर्णन	६	नाहरराज पराजय पृथ्वीराज विजय पृथ्वीराज विवाह वर्णन	✓		✓	——
८	मवासी मुगल कथा	७	मुगल पराजय पृथ्वीराज विजय वर्णन	✓	✓	✓	
९	हुसेन खाँ चित्ररेखा पात्र साहबुद्दीन ग्रहण	८	गोरी साहिबशाह पृथ्वीराज प्रथम युद्ध वर्णन (यह प्रतियों में नहीं है)	✓	✓	✓	
१०	राजा सदद का आखेट	✓	×	✓		✓	म० रू० की १७३९ ई० की प्रति में अंत में अलग से दिया है
११	सुल्तान सूर वर्णन चित्ररेखा वर्णन	✓				✓	
१२	भोलाराइ का युद्ध सामत चिन्ता	११	भोराराइ भीमदे पराजय मंत्रि चमारा विजय	✓	✓	✓	
१३	सलख युद्ध साहबुद्दीन ग्रहण	१२	सामार सलख हस्तेन साहिबशाह ग्रहण	✓	दमाग मन्त्रिणा भीम पराजय सामत सलख पावार हस्तेन गोरी साहाबुद्दी निग्रह	✓	
१४	इंछिनी विवाह वर्णन	१३	इंछनी विवाह सुर सुरी वासय दूतता मयागिना पातिव्रत	✓		×	
						×	

वृहद् रूपांतर		मध्यम रूपांतर		लघु रूपांतर		लघुतम रूपांतर	विशेष विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम	प्रसंग है या नहीं	
१५	मुगल युद्ध कथा वर्णन	१५	आवस्क मानवी मारगढ़ हस्तन मुगल ग्रहण	×	✓	×	
१६	पुणीर दाहिमी विवाह वर्णन			✓	✓	×	
१७	भूमि स्वप्न	४	भूमि सुपन मगुन कथा पृथ्वीराज युद्ध विजय धनागम पातिसाह ग्रहन	×	✓	×	
१८	अनगपाल दिल्ली दान	६	दिल्ली राज्याभिषेक युद्ध विजय पातिसाह पराजय चामुंडराइ हस्तन पातिसाह ग्रहन	[४]	दिल्ली राज्याभिषेक ✓	✓	← लघु और लघुतम रूपांतर में यह प्रसंग बहुत संक्षेप में है
१९	माधो भाट पातिसाह ग्रहन राजा विजय			✓	×	×	
२०	पद्मावती विवाह पातिसाह ग्रहन मोचन			✓	×	×	
२१	प्रिथा विवाह वर्णन	२३	समरसी पिथाकवरि विवाह वर्णन	×	×	×	
२२	हांसी कथा	✓	✓	×	×	×	
२३	दीपमालिका पत्र		✓				

बृहद् रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम	प्रसंग है या नहीं	
२४	नरदह वन मध्य आखेट रमण धन सग्रहण, पाति साह बधन, धन कथा	[५]		[२]	[द्रव्य लाभ]	✓	
२५	शशिव्रता कथा	२२	शशिव्रता विवाह युद्ध विजय	×	×	×	
२६	देवगिरि युद्ध वर्णन	×	×	×	×	×	
२७	रेवा तट पातिसाह ग्रहन	×	×	×	×	×	
२८	अनगपाल ढिल्ली आगमन पृथ्वीराज जुद्ध बद्री तप मरन	×	×	×	×	×	
२९	घग्घर नदी की लडाई शाह पतिसाह ग्रहन	×	×	×	×	×	
३०	कर्नाटी पात्र वर्णन	२६	राठौर निढ्ढर ढिल्ली आगमन कर्णाटी पात्र कथा वर्णन	×	×	×	

वृहद् रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव सख्या	प्रस्ताव नाम	खड सख्या	खड नाम	खड सख्या	खड नाम	प्रसग है या नही	
३१	पीपा पातिसाह ग्रहन	१६	परिहार पीप जुद्ध विजय पीप हुस्सन गोरी ग्रहन	×	×	×	
३२	करहेरा युद्ध, रावर समरसी	×	×	×	×	×	
३३	पृथ्वीराज विजय इद्रावती याह सामत विज	×	×	×	×	×	
३४	जतराइ पातिसाह बधन	×	×	×	×	×	
३५	कागुरा विज	×	×	×	×	×	
३६	हसावती वियाह	२४	रणथभौर हसावती विवाह वर्णन	×	×	×	
३७	पहाडराय पातिसाह ग्रहन	×	×	×	×	×	
३८	वरण कथा	१४	मामम गजा जमुना गते वरुण दूत सामत उभयो युद्ध वणन	×	×	×	

बृहद् रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम	प्रसंग है या नहीं	
३९	भोरा भीम विजय भीम वधन	२०	भोराराइ विजय भीमम वधन पृथ्वीराज राज्याभिषेक तिलक	×	×	×	
४०	पज्जून वधराहा द्वारा	×	×	×	×	×	
४१	पज्जून चातुरा समागम, पज्जून निजय	×	×	×	×	×	
४२	... द्वारकागमन, ... मिलन	×	×	×	×	×	
४३	परस्पर याद जुरन, ... वन मध्य समागम	^	×	×	×	×	
४४	पातिसाह ग्रहन						
४५	भोलाराइ भीमग वध, सजोगिता पूर्व जन्म कथा	२१ ८	भोराराइ भीमग वधन सजोगिता पूर्व जन्म कथा वर्णन	× ×	× ×	× ×	
४६	सजोगिता को विनय मगल	१०	विजयपाल दिग्विजय ... सजोगिता उत्पत्ति मन्नगृह वभनी गृहे ... पटनाथ दुज दुजी गधव गधर्वी सवाद	३	सयोगिता उत्पत्ति द्विज द्विजी सवाद गधव गधर्वी सवाद	× × ×	

बृहद रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		खड रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खड संख्या	खड नाम	खड संख्या	खड नाम	प्रसग है या नही	
				×	×	×	
४७	मुक वणन	×	×	×	×	×	
४८	बानुराराय वधन	२५	चानुवाराय वधन मयागिना दूती परस्पर वार्ता	६	यग विध्वस पृथ्वीराज वरणाय सजागिता नियम	✓ ✓	
४९	पग यज्ञ विध्वसन			,			
५०	मयागिता नम आचरना				×	×	
				×		×	
५१	हामीपुर प्रथम युद्ध वणन	×	×	×	×	×	
५२	द्वितीय हामीपुर युद्ध वणन	×	×	×	×	×	
५३	प‍जून महुवा जुद्ध	×	×	×			
५४	पज्जून कछवाहा पात	×			×	×	
	माह ग्रहन			×	×	×	
५५	मामत पग युद्ध	१७	पग सामत युद्ध	×		✓	
५६	जचद ममग्सी युद्ध	१८	जचद ममर युद्ध वणन	७	कमास वध		
५७	चामड वडी भरन	२६	चामुड वडी				
	ग्नाटी दासी खून		मति कमास वध				
	कमास वध						

बृहद् रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव सख्या	प्रस्ताव नाम	खड सख्या	खड नाम	खड सख्या	खड नाम	प्रसग है या नही	
५८	दुर्गा केदार समय	२७	राजा पानीपथ मृगयाचद केदार सवाद पाहार हुसेन पातिमाह ग्रहन	×	×	×	
५९	दिल्ली वणन	×	×	×	×	×	
६०	जगम मानी कथा गिर पूजा	×	×	×	×	×	
६१	षड रितु वणन	३८	पञ रिति शृगार वणन	[१३]	[षट रितु वणन]	✓	१ ना प्र सभा के मुद्रित सस्करण म यह प्रसग कनवज कथा प्रस्ताव म आया है २ लघु और मध्यम रूपातरो म यह प्रसग कनवज प्रसग के पश्चात् पृथ्वीराज के लौटने के समय का है

बृहद रूपातर		मध्यम रूपातर		लघु रूपातर		लघुतम रूपातर	विशेष विवरण
प्रस्ताव सख्या	प्रस्ताव नाम	खड सख्या	खड नाम	खड सख्या	खड नाम	प्रसग है या नही	
६२	कनवज्ज कथा सजोगिता प्रतिज्ञा पूरन जचद दल चूरन सामत जुद्ध दिल्ली आगमन	२८	कनवज वणन जचद द्वारे सप्राप्त	८	जयचद द्वार सप्राप्त	✓	यहा से मुद्रित प्रति के प्रस्तावो म १ का अतर पडेगा
		२९	चद जचद सवाद चद अखाडो वणन पृथ्वीराज प्रगटन	९	जयचद सवाद सजोगिता विवाह	✓	
		३०	प्रथम लगरीराय युद्ध वणन सयोगिता विवाह	[९]			
		३१	अष्टमी गुत्र प्रथम दिवसे उदिग पवार जुद्ध वनन	१०	अष्टमी प्रथम दिवस युद्ध	✓	
		३२	नवमी शनिवारे द्वितीय दिवस जुद्ध वनन	११	नौमी द्वितीय दिवस युद्ध	✓	
		३३	राजा पृथ्वीराज सोरा प्राप्त	[११]			
		३४	दसमी रविवासरे तृतीय दिवस जुद्ध वणन	१२	दसमी तृतीय दिवस युद्ध	✓	

बृहद् रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खंड संख्या	खंड नाम	खंड संख्या	खंड नाम	प्रसंग है या नही	
६२		३८	राजसू जग्य विध्वंस, कनवज्जत ढिल्लीपुर आगमन, संजोगिता पाणि ग्रहण, राज सुख चरित्र	१३	ढिल्ली आगमन	✓	
					धीरेण साहाबदी निग्रह	×	
					पट रितु वणन	✓	
६३	गुप्त विनास वणन						
६४	धीर पुंडीर पातिसाह ग्रहन मोचन, धीर वधन	३६	धीर पुंडीर जुद्ध विजय धीर हस्तेन पातिसाहि ग्रहन धीर पुंडीर वध	× [१३]	× [धीरेण सहाबदीन निग्रह]	× ×	←लघु रूपान्तर मे यह प्रसग खंड १३ म आया है
६५	राजा आगेट चग श्राप	३७ ×	×	× ×	⅄ ×	× ×	पिछली प्रतियो म यह खड धीर पुंडीर खड के पहले आया है
६६	प्रथिराज विवाह	×	×	×	×	×	
६७	समरसी दिल्ली सहाय	[×]	×	×	⅄	×	मुद्रित और कतिपय अन्य प्रतियो म यह खड बडी लडाई के अतगत है। यहा से मुद्रित

बृहद् रूपातर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपातर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव सख्या	प्रस्ताव नाम	खड सख्या	खड नाम	खड सख्या	खड नाम	प्रसग है या नही	
६८	वडी लडाई राजा ग्रहन, चद दिल्ली आगमन	३९	राजा स्वप्न कथा रावल समरसी आगमन चामुड राइ वध मोचन सूर सामत मत्र वणन	१४	चामुड वध मोचन मव सामत मत्र	✓ ✓	प्रति के प्रस्तावो म २ का अतर पडेगा
		४०	आलधर दवीस्थान हा हुलिराय हम्मीरेण वाजेन चद निरोधन पृथ्वीराज गोरी साह युद्धाथ सेना समागम गृद्ध व्यूह रच ना जालधर देवी स्थाने महश प्रति वीरभद्र यक्ष वताल योगिनी सवाद	१५	चद विरोध व्यूह रचना	× ✓	
				१६	युद्ध वणन	✓	
		४१	पृथ्वीराज गोरी साह जुद्ध वणन समली गिधनी सजोगिताग्रे सूर सामत पराक्रम कथन वीर विभाई आगमन	१७	युद्ध वणन	✓	

बृहद् रूपान्तर		मध्यम रूपान्तर		लघु रूपान्तर		लघुतम रूपान्तर	विशेष विवरण
प्रस्ताव संख्या	प्रस्ताव नाम	खड संख्या	खड नाम	खड संख्या	खड नाम	प्रसग है या नही	
६८		४२	पातिसाह जुद्ध वनन वीर विभाई सजोगिताग्र सूर सामत पराक्रम वणन सजोगिता सूयमडल आगत पृथ्वीराज ग्रहन जालधर देवीस्थाने चद वीरभद्र परस्पर वार्ता कथन चन्द मोषण चद ढिल्ली आगमन	१८	राजा ग्रहन चन्द इद्रप्रस्थागमन	✓	मध्यम रूपा तर की कई एक प्रतियो म ग्रथ की समाप्ति पृथ्वीराज ग्रहन पर ही हो जाती है
६९	पातशाह थानवध मरन राजा मन्द गुजम ग्रहन पश्चात यथन	४३	ढिल्लीत पविचद गज्जनपुर आगत गोरी चद परस्पर वार्ता कथन राजा पृथ्वीराज हस्तेन गोरी साहावदीन वहन	१९	✓ सहावदीन मरण	✓	यह प्रसग मध्यम रूपा तर की कई प्रतियो म नही है
७०	राजा रनसी अभिषक रैनसी मरन, जन्म गगा सरन	×	×	×	×	×	मुद्रित प्रति म खड न० ६८

(घ) वृहद रूपान्तर के खडो का विश्लेषण

वृहद् रूपान्तर म सब ७० खड हैं जिनम स अधिकाश युद्धो विवाहो या आखेटा स सबध रखत है। इन खडा का विश्लेषणात्मक विवरण आग दिया जाता है—

(१) युद्ध सबधी खड

इनकी कुल सख्या ४२ है। इनम स २५ शहाबुद्दीन स सबध रखत हैं।

(क) शहाबुद्दीन के युद्ध

(१) जिनमे शहाबुद्दीन पृथ्वीराज द्वारा पकडा जाता है—

* १ पद्मावती विवाह खड (२०)

‡ २ खट्टू वन युद्ध (धन-कथा) खड (२४)

* ३ रेवा-तट-युद्ध खड (२७)

(२) जिनमे शहाबुद्दीन सामन्तों द्वारा पकडा जाता है—

† ४ हुसन कथा (पातिसाह प्रथम जुद्ध) खड (९)—चामुडराय द्वारा

‡ ५ सलख पातिसाह ग्रहण खड (१३)—सलख पमार द्वारा

† ६ माधा भाट कथा खड (१६)—चामुडराय द्वारा

* ७ अनगपाल जुद्ध खड (२८)—चामुडराय द्वारा

* ८ घघ्घर री लडाई खड (२९)—कन्ह द्वारा

† ९ पीपा पातिसाह ग्रहण खड (३१)—पीपा पडिहार द्वारा

* १० जतराइ पातिसाह ग्रहण खड (३४)—जतराय द्वारा

* ११ पहाडराइ पातिसाह ग्रहण खड (३७)—पहाडराय तुवर द्वारा

* १२ कमास पातिसाह ग्रहण खड (४३)—कमास द्वारा

* १३ पज्जून पातिसाह ग्रहण खड (५४)—पज्जून कछवाहा द्वारा

† १४ दुर्गा केदार कथा खड (५८)—पहाडराय तवर द्वारा

‡ १५ धीर पुडीर खड (६४)—धीर पुडीर द्वारा

(३) जिनमे शहाबुद्दीन पराजित होता है—

* १६ खट्टू वन सुरताण चूक करण (१०)

* १७ पज्जून महुवा जुद्ध खड (२३)

* १८ होली द्वितीय युद्ध खड (५२)

(४) जिनम शहाबुद्दीन की सेना पराजित होती है—

---

* केवल वृहद रूपान्तर म।

† केवल वृहद और मध्यम रूपान्तरो म।

‡ वृहद मध्यम और लघु तीनो रूपान्तरो म।

† १९ हसावती विवाह खड (३६)
* २० पज्जून विजयखड (४१)
* २१ हासी प्रथम युद्ध खड (५१)

(५) जिनमे शहाबुद्दीन या उसका सेन्य विजयी होता है—
§ २२ वटी लडाई खड (६८)
* २३ रणसी जुद्ध (७०)

(ख) विवाह सबधी युद्ध

† १ नाहरराइ खड (७)—पडिहारनी जमावती के लिए मडोवर के राजा नाहडराय पडिहार (वधू पक्ष) के साथ।

‡ २ भोरारा जुद्ध खड (१२)—पवारनी इछनी के लिए गुजरात के राजा भोरा भीम (प्रतिद्वन्द्वी वर पक्ष) के साथ।

† ३ शशिव्रता खड (२५)—यादवी शशिव्रता के लिए कनवज के राजा के भतीज वीरचन्द (प्रतिद्वन्द्वी वर-पक्ष) के साथ।

* ४ [पद्मावती खड (२०)—यादवी पद्मावती के लिए कुमायू के राजा कुमारमणि (प्रतिद्वन्द्वी वर-पक्ष) के साथ।]

* ५ इद्रावती विवाह खड (३३)—पवारनी इद्रावती के लिए उज्जन के राजा भीम (वधू पक्ष) के साथ।

† ६ [हसावती विवाह खड (३६)—यादवी हसावती के लिए चन्देरी के राजा पचायण (प्रतिद्वन्द्वी वर-पक्ष) के साथ।]

* ७ कागुरा विज खड (३५)—भाटनी रानी के लिए भाट के राजा भान (वधू-पक्ष) के साथ।

† ८ बालुकाराय वध खड (४८)
* ९ सजोगिता नेम खड (५०)
§ १० कनवज खड (६१)

इन तीन खडो मे राठौडनी सजोगिता के लिए उसके पिता कनवज के राजा जयचद के सामन्तो के साथ युद्ध होते है।

(ग) अन्य युद्ध

* १ लोहाना आजानबाहु खड (४)—आरन्या के राजा के साथ लोहाना का युद्ध।

---

* केवल वृहद रूपान्तर मे।
† केवल वृहद और मध्यम रूपान्तरो मे।
‡ वृहद मध्यम और लघु तीनो रूपान्तरो मे।
§ चारो रूपान्तरो मे।

(घ) बृहद् रूपान्तर के खंडो का विश्लेषण

बृहद् रूपान्तर में सब ७० खंड हैं जिनमें से अधिकांश युद्धों विवाहों या आखेटों से संबंध रखते हैं। इन खंडों का विश्लेषणात्मक विवरण आगे दिया जाता है—

(१) युद्ध-संबंधी खंड

इनकी कुल संख्या ४२ है। इनमें से २३ शहाबुद्दीन से संबंध रखते हैं।

(क) शहाबुद्दीन के युद्ध

(१) जिनमें शहाबुद्दीन पृथ्वीराज द्वारा पकड़ा जाता है—

- * १ पद्मावती विवाह खंड (२०)
- ‡ २ खट्टू वन युद्ध (धन कथा) खंड (२४)
- * ३ रेवा-तट-युद्ध खंड (२७)

(२) जिनमें शहाबुद्दीन सामंतों द्वारा पकड़ा जाता है—

- † ४ हुसेन कथा (पातिसाह प्रथम युद्ध) खंड (९)—चामुंडराय द्वारा
- ‡ ५ सलख पातिसाह ग्रहण खंड (१३)—सलख पमार द्वारा
- † ६ माधो भाट कथा खंड (१६)—चामुंडराय द्वारा
- * ७ अनगपाल युद्ध खंड (२८)—चामुंडराय द्वारा
- * ८ घग्घर री लड़ाई खंड (२९)—कन्ह द्वारा
- † ९ पीपा पातिसाह ग्रहण खंड (३१)—पीपा पड़िहार द्वारा
- * १० जतराइ पातिसाह ग्रहण खंड (३४)—जतराय द्वारा
- * ११ पहाड़राइ पातिसाह ग्रहण खंड (३७)—पहाड़राय तुवर द्वारा
- * १२ कमास पातिसाह ग्रहण खंड (४३)—कमास द्वारा
- * १३ पज्जून पातिसाह ग्रहण खंड (४४)—पज्जून कछवाहा द्वारा
- † १४ दुर्गा केदार कथा खंड (४८)—पहाड़राय तुवर द्वारा
- ‡ १५ धीर पुंडीर खंड (६८)—धीर पुंडीर द्वारा

(३) जिनमें शहाबुद्दीन पराजित होता है—

- * १६ खट्टू वन सुरताण चूक करण (१०)
- * १७ पज्जून महुवा युद्ध खंड (५३)
- * १८ हांसी द्वितीय युद्ध खंड (५२)

(४) जिनमें शहाबुद्दीन की सेना पराजित होती है—

---

* केवल बृहद् रूपान्तर में।

† केवल बृहद् और मध्यम रूपान्तरों में।

‡ बृहद् मध्यम और लघु तीनों रूपान्तरों में।

† १९ हसावती विवाह खड (३६)
* २० पज्जून विजयखड (४१)
* २१ हासी प्रथम युद्ध खड (५१)

(५) जिनमे शहाबुद्दीन या उसका सैन्य विजयी होता है—

§ २२ बडी लडाई खड (६८)
* २३ रैणसी जुद्ध (७०)

(ख) विवाह सबधी युद्ध

† १ नाहरराय खड (७)—पडिहारनी जभावती के लिए मडोवर के राजा नाहडराय पडिहार (वधू पक्ष) के साथ।

‡ २ भारागढ़ जुद्ध खड (१२)—पवारनी इछना के लिए गुजरात के राजा भोला भीम (प्रतिद्वन्द्वी वर पक्ष) के साथ।

† ३ शशिव्रता खड (२५)—यादवी शशिव्रता के लिए कनवज के राजा के भतीज वीरचंद (प्रतिद्वन्द्वी वर पक्ष) के साथ।

* ४ [पदमावती खड (२०)—यादवी पदमावती के लिए कुमाय के राजा कुमारमणि (प्रतिद्वन्द्वी वर पक्ष) के साथ।]

* ५ इन्द्रावती विवाह खड (३३)—पवारनी इन्द्रावती के लिए [illegible] के राजा भीम (वधू पक्ष) के साथ।

† ६ [हसावती विवाह खड (३६)—यादवी हसावती के लिए [illegible] के राजा पचायण (प्रतिद्वन्द्वी वर-पक्ष) के साथ।]

* ७ [illegible] विज खड (३५)—भाटनी [illegible] के लिए [illegible] भान (वधू-पक्ष) के साथ।

† ८ बालुकाराइ वध खड (४८) }
* ९ सजोगिता नम खड (५०) }
§ १० [illegible]

* २ कन्ह पट्टी खड (५)—पाटण के सालकिया के साथ कन्ह का युद्ध ।
† ३ मवाती मूगल युद्ध खड (८)—मवात के राजा मुदगलराय के साथ ।
† ४ मूगल युद्ध खड (१५)—मेवात के राजा मुग्गलराय के साथ ।
* ५ देवगिरि युद्ध खड (२६)—कनवज के राजा जयचन्द के साथ ।
* [६ अनगपाल युद्ध खड (२८)—मालवा के राजा महिपाल और सोमेश्वर का युद्ध । अनगपाल और पृथ्वीराज का युद्ध । शाहबुद्दीन और पृथ्वीराज का युद्ध ।]
* ७ करहेडा युद्ध खड (३२)—गुजरात के राजा भोला भीम के साथ पृथ्वीराज और समरसी का युद्ध ।
† ८ सोमेश्वर वध खड (३६)—गुजरात के राजा भोला भीम और सोमेश्वर का युद्ध ।
* ९ पज्जून छोगा खड (४०)—भोला भीम और पज्जून का युद्ध ।
† १० भीम वध खड (४४)—भोला भीम और पृथ्वीराज का युद्ध ।
† ११ सामत-पग युद्ध खड (५५)—जयचद और पृथ्वीराज के सामतो का युद्ध ।
† १२ समरसी-पग युद्ध खड (५६)—जयचद और समरसिंह का युद्ध ।

(२) केवल विवाह सबधी खड

† १ इछनी विवाह खड (१४)
* २ पुडीरनी दाहिमी खड (१६)
* ३ पृथ्वीराज विवाह खड (६६)
† ४ पृथा विवाह खड (२१)

(३) आखेट सबधी खड

* १ आखेटक वीर वरदान खड (६)
† २ भूमि स्वप्न खड (१७)
* ३ आखेटक चम श्राप खड (६४)

इनके अतिरिक्त और भी अनेक खडो मे आखेट का उल्लेख आता है ।

---

* केवल वृहद रूपातर मे ।
† केवल वृहद और मध्यम रूपातरो मे ।
‡ वृहद मध्यम और लघु तीनो रूपान्तरो मे ।

(४) अन्य खंड

§ १ आदिपर्व खंड (१)
‡ २ दशावतार खंड (२)
§ ३ दिल्ली किल्ली खंड (३)
* ४ चित्ररेखा खंड (११)
§ ५ अनंगपाल दिल्लीदान (१८)
* ६ होली खंड (२२)
* ७ दीपावली खंड (२३)
† ८ करणाटी पातर खंड (३०)
† ९ वरुणकथा खंड (३८)
* १० चंद द्वारकागमन खंड (४२)
† ११ संजोगिता पूर्वजन्म खंड (४५)
‡ १२ संजोगिता विनयमंगल (४६)
* १३ सुक चरित्र खंड (४७)
§ १४ पंग यज्ञविध्वंस खंड (४९)
§ १५ कैमास-वध खंड (५७)
* १६ दिल्लीवर्णन खंड (५९)
* १७ जंगम सोफी खंड (६०)
§ १८ षट्ऋतु वर्णन खंड (६१)
† १९ शुकविलास खंड (६३)
* २० समरसी दिल्ली सहाय खंड (६७)
§ २१ बानबेध खंड (६६)[1]

(ङ) रूपांतरों का अंतर

इन चारों रूपांतरों में पाया जाने वाला अंतर दो प्रकार का है—
(१) कथा प्रसंगों की संख्या से संबंध रखने वाला और
(२) कथा प्रसंगों के विस्तार से संबंध रखने वाला।

---

* केवल बृहद् रूपान्तर में।
† केवल बृहद् और मध्यम रूपांतरों में।
‡ बृहद्, मध्यम और लघु तीनों रूपान्तरों में।
§ चारों रूपांतरों में।
[1] इन खंडों के विवरण के लिए अध्याय ७ में 'बृहद् रूपान्तर की कथा का विश्लेषण (घ) अध्याय प्रसंग प्रकरण देखिये।

बड़े रूपान्तरों में छोटे रूपान्तरों की अपेक्षा कथा-प्रसंगों की संख्या भी अधिक है और उनका विस्तार भी। यहां पर यह बात ध्यान में रखने की है कि छोटे रूपान्तरों के सभी कथा-प्रसंग बड़े रूपान्तरों में विद्यमान हैं और इसी प्रकार छोटे रूपान्तरों के प्रायः सभी पद्य भी बड़े रूपान्तरों में पाये जाते हैं। छोटे रूपान्तरों के ऐसे पद्यों की संख्या, जो बड़े रूपान्तरों में नहीं पाये जाते, बहुत ही थोड़ी और नगण्य है। इस प्रकार जैसे हाथी के पैर में सबके पैर आ जाते हैं वैसे ही वृहद् रूपान्तर में अन्य सभी रूपान्तर अन्तर्भुक्त हो जाते हैं। बड़े रूपान्तरों के कौन-कौन से पद्य छोटे रूपान्तरों में नहीं मिलते इसका ज्ञान पहले दी हुई रासो के विविध रूपान्तरों की तालिका से हो सकेगा।

विविध रूपान्तरों में समानरूप से पाये जाने वाले प्रसंगों में भाषा का अन्तर नहीं के बराबर है। पर जो प्रसंग बड़े अर्थात् मध्यम और वृहद् रूपान्तरों में बाद में जोड़े गये हैं उनकी भाषा में और पुराने प्रसंगों की भाषा में अन्तर दृष्टिगोचर होता है—नये अंशों की भाषा अपेक्षाकृत पीछे की दिखायी पड़ती है। इस प्रकार एक ही रूपान्तर के विविध प्रसंगों में भाषा-भेद लक्षित होता है।

इसी प्रकार बड़े रूपान्तरों में एक ही प्रसंग के विविध अंशों में भी भाषा की भिन्नता दिखायी पड़ती है। जो पद्य प्रसंग के विस्तार के लिए बाद में बनाये गये हैं उनकी भाषा पुराने पद्यों की भाषा से अलग पड़ती है।

विस्तार में मोटे हिसाब से वृहद् रूपान्तर मध्यम रूपान्तर का तिगुना, मध्यम रूपान्तर लघु रूपान्तर का तिगुना और लघु रूपान्तर लघुतम रूपान्तर का तिगुना ठहरता है। उनकी ग्रन्थ-संख्या अनुमान से ३०,०००, १०,०००, [१०],५०० और १,३०० है।

वृहद् रूपान्तर की प्रतियाँ प्रधानतया उदयपुर राज्य में, मध्यम रूपान्तर की जैन भंडारों में और लघु रूपान्तर की बीकानेर और जयपुर राज्यों में प्राप्त हुई हैं। लघुतम रूपान्तर की दो प्रतियां मिली हैं जिनमें से पहली का सम्बन्ध बीकानेर राज्य से है। वह उत्तर गुजरात में उपलब्ध हुई है जहाँ बीकानेर के राजा राज्यपाल थे।

प्राचीनता की दृष्टि से लघुतम रूपान्तर सबसे प्राचीन जान पड़ता है और उसके बाद क्रमशः लघु, मध्यम और वृहद् रूपान्तरों का नंबर आता है।

इतिहास-विरुद्ध बातें चारों ही रूपान्तरों में मिलती हैं। छोटे रूपान्तरों में उनकी संख्या स्वभावतः ही कम है, बड़े रूपान्तरों में वह क्रमशः बढ़ती जाती है।

अपने वर्तमान रूप में कोई भी रूपान्तर चन्द की कृति नहीं हो सकता।

(१) मध्यम रूपान्तर और बृहद् रूपान्तर

बृहद् रूपान्तर के ७० खंडों में से ३३ खंड मध्यम रूपान्तर में नहीं हैं। शेष ३७ खंड किसी न किसी रूप में पाये जाते हैं। इन ३७ खंडों में से २९ खंड दोनों रूपान्तरों में समान रूप से पाये जाते हैं, केवल उनका विस्तार कम है। तीन खंड १४ खंडों में विभक्त हो गये हैं। ५ खंड दूसरे खंडों में अन्तर्भुक्त हो गये अर्थात् मिल गये हैं। इस प्रकार मध्यम रूपान्तर में खंडों की कुल संख्या (७०—३३—५—३+१४)=४३ रह जाती है—

बृहत् रूपान्तर में खंड संख्या=७०
उसमें ३३ खंड नहीं हैं=७०—३३=३७
३ खंडों के स्थान पर १४ खंड=३७—३+१४=४८
५ खंड अन्य खंडों में अन्तर्भुक्त=४८—५=४३

मध्यम रूपान्तर में न पाये जाने वाले बृहद् रूपान्तर के खंडों के नाम आदि के लिए विविध रूपान्तरों के खंडों की तालिका प्रकरण (पृष्ठ ६१) देखिये।

अन्यान्य खंडों में अन्तर्भुक्त होने वाले ५ खंड ये हैं—

१ माधो भाट पातिसाह ग्रहण खंड (१६)—अनंगपाल दिल्लीदान खंड (९) में।
२ षट्‌ऋतु आखेटक रमण (धन कथा) खंड (२८)—भूमि स्वप्न खंड (५) में।
३ पंग यज्ञ विध्वंस खंड (४९) }
४ संयोगिता नेम खंड (५०) } —बालुकाराय वध खंड (२५) में।
५ सुक विलास खंड (६३)—कनवज खंड (३४) में।

निम्नलिखित ३ खंड १४ खंडों में विभक्त हैं—

१ कनवज खंड (६२)—८ खंडों में।
२ धीर पुंडीर खंड (६६)—२ खंडों में।
३ बड़ी लड़ाई खंड (६८)—४ खंडों में।

(२) लघु रूपान्तर और बृहद् रूपान्तर

बृहद् रूपान्तर के ७० खंडों में से ५४ खंड लघु रूपान्तर में नहीं हैं। शेष १६ खंडों में से ६ खंड दोनों में समान हैं, ३ खंड १३ खंडों में विभक्त हो गये हैं और ७ खंड दूसरे खंडों में अन्तर्भुक्त हो गये हैं। इस प्रकार लघु रूपान्तर में खंडों की कुल संख्या (७०—५४—७—३+१३)=१९ होती है—

बृहद् रूपान्तर की खंड संख्या=७०
उसमें ५४ खंड नहीं हैं=७०—५४=१६

२ खड १३ खडा म विभक्त=१६—३+१३=२६
७ खड अय खडा म अतभुक्त=२६—७=१९।

बृहत् रूपातर के य ३ खड लघु रूपातर म १३ खडा म विभक्त हैं—

१ आदि पर्व खड (१)—२ खडा म।
२ कनवज कथा खड (६२)—६ खडा म।
३ बड़ी लडाई खड (६८)—५ खडो मे।

बृहद रूपातर के य ७ खड लघु रूपातर म दूसरे खडा म अतभुत होगय हैं—

१ दशावतार (२)—प्रथम खड म।
२ दिल्ली किल्ली कथा (३) } —द्वितीय खड मे।
३ अनगपाल दिल्लीदान कथा (१८) }
४ धनकथा (२४) }
५ षट रितु खड (६१) } —कनवज कथा खड म।
६ धार पुडीर (६४) }
७ सजोगिता नेम (५०)—पग यज्ञ विध्वंस खड (६) म।

(३) लघु रूपान्तर और मध्यम रूपातर

मध्यम रूपातर म कुल ४३ खड हैं जिनम से १९ खड लघु रूपातर मे नही हैं। शष २४ खडा म १६ खड समान हैं २ खड ४ खडा मे विभक्त हो गय है और ७ खड अयाय खडा म अतभुक्त हो गय है। इस प्रकार लघु रूपातर म खडा की सख्या (४३—१९—७—२+४) १९ होता है—

मध्यम रूपातर के कुल खड=४३
उसके १९ खड नहा हैं=४३ −१९=२४
२ खड ४ खडा म विभक्त २४—२+४=२६
७ खड दूसरे खडा म अतभुक्त=२६—७ १९

मध्यम रूपातर के य दो खड ४ खडो म विभक्त है—

१ आदि प्रबन्ध (१)—२ खडा म।
२ खट म ४०—२ खडा म।

मध्यम रूपातर के य ७ खड अय खडा म अतभुक्त हैं—

१ दशावतार (२)—प्रथम खड म।
२ भूमि स्वप्न धनागम कथा (४)—दूसरे खड म।
३ लगरीराय जुद्ध (३०)—नवे खड म।
४ राजा पृथ्वीराज सागर प्राप्त (३३)—नव खड म।
५ षट रितु बणन (८)—तेरहवें खड म।
६ धीर पुडीर जुद्ध विजय (३६)—तेरहवें खड म।
७ धीर पडीर वध (३७)—तेरहवें खड म।